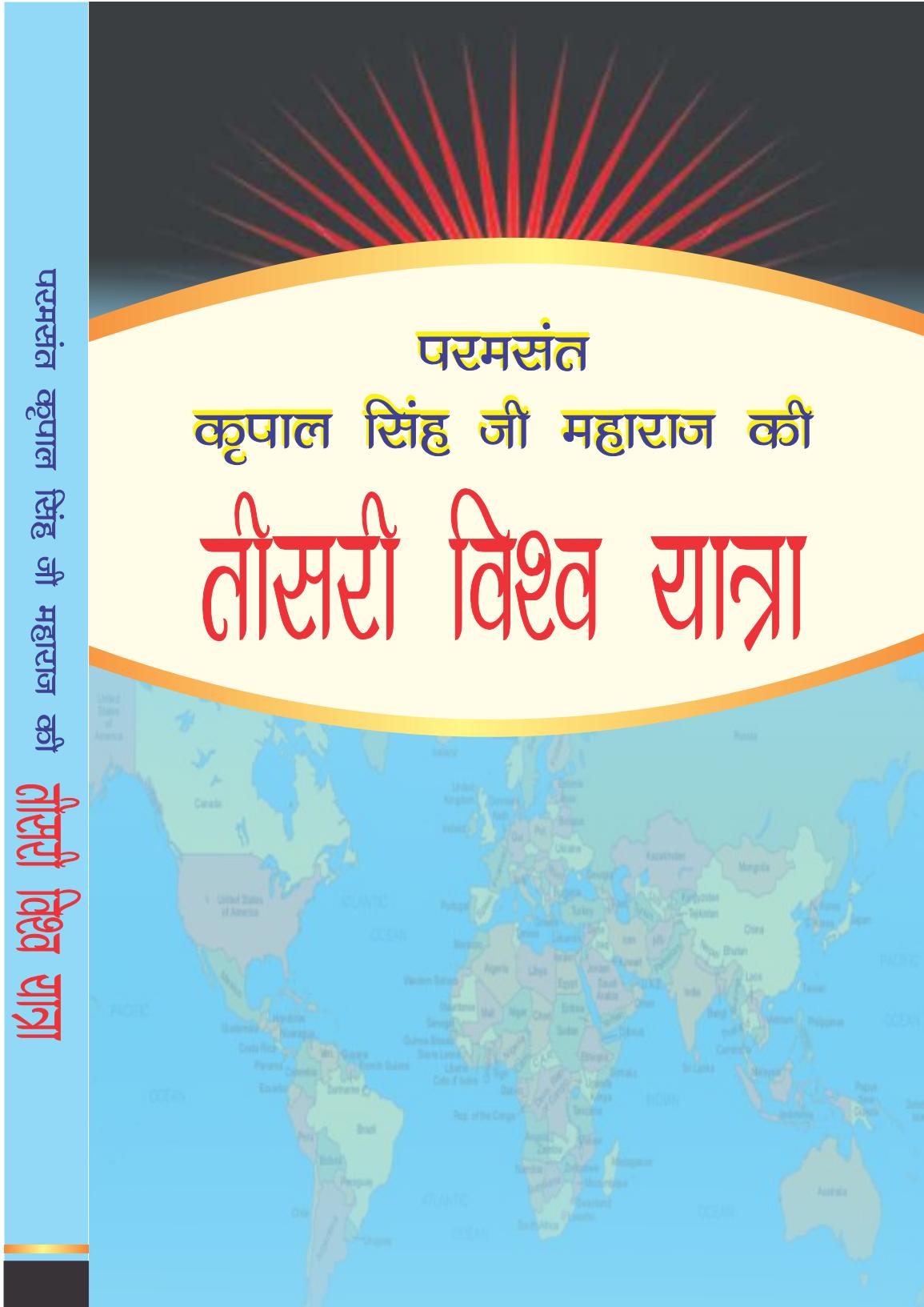


ਪਦਮਸ਼ੰਤ
ਕ੃ਪਾਲ ਸਿੰਹ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਕੀ
ਤੌਲਈ ਵਿਸ਼ਵ ਯਾਤਰਾ

ਪਦਮਸ਼ੰਤ ਕ੃ਪਾਲ ਸਿੰਹ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਕੀ
ਤੌਲਈ ਵਿਸ਼ਵ ਯਾਤਰਾ



संत कृपाल सिंह जी महाराज की तीसरी विश्व यात्रा

कृपाल रुहानी सत्संग सभा (भबात)
1206, सैकटर 48 बी
चण्डीगढ़

Published by:

Kirpal Ruhani Satsang Sabha (Bhabat)
1206, Sector 48-B, Universal Enclave,
Chandigarh- 160 047 (India)
Ph. : 0172-2674206, 0172-4346346
Email : ruhanisatsangindia@gmail.com
Website : www.ruhanisatsangindia.org

September, 2013

1100 Copies

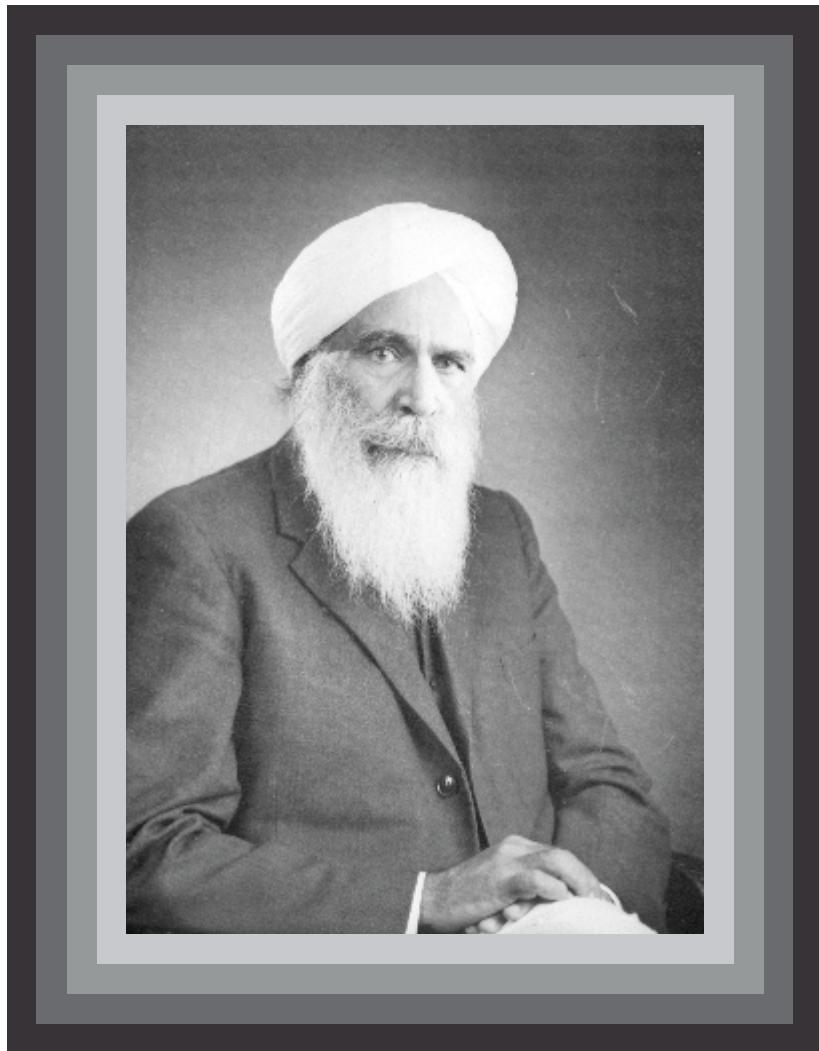
Printed at:

Sanjay Printers
404, Industrial Area, Phase-II,
Chandigarh
Phone: 0172-4651390

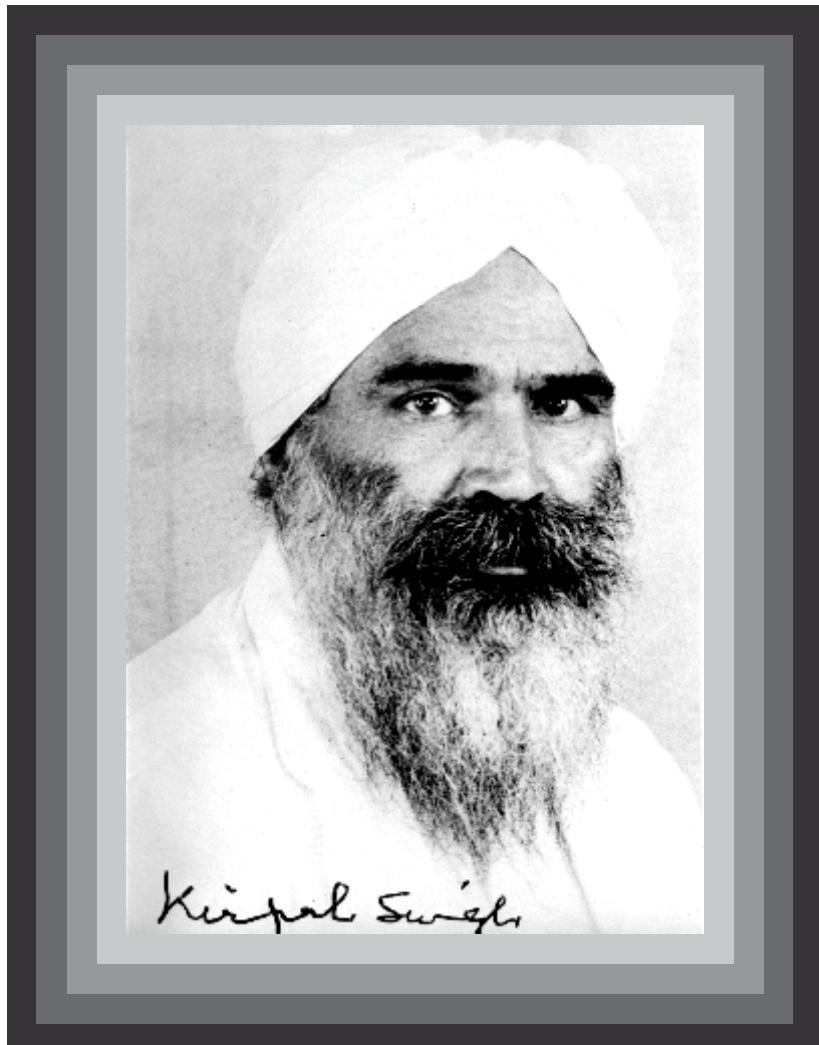
समर्पित
प्यारे सत्गुरु
संत कृपाल सिंह जी महाराज
को

संक्षिप्त परिचयः संत कृपाल सिंह जी महाराज

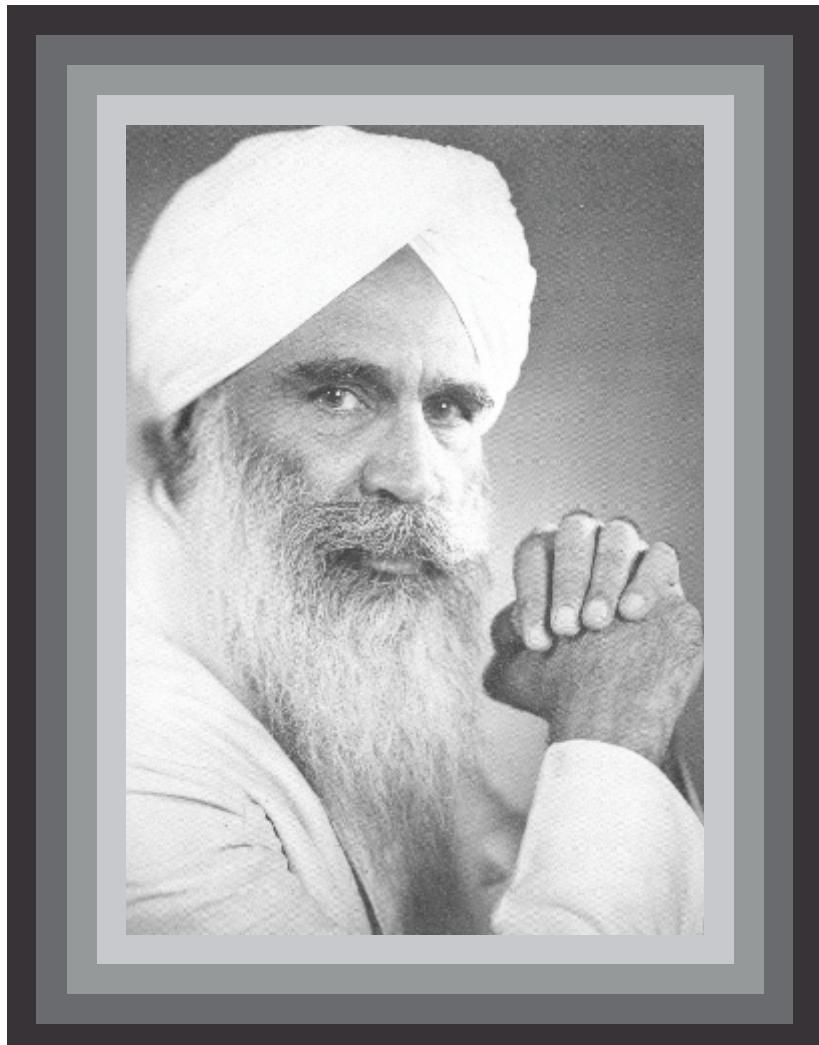
रुहानियत के पुंज परमसंत कृपाल सिंह जी महाराज का जन्म जिला रावलपिंडी के गांव सैयद कसरां में (जो अब पाकिस्तान में है), 6 फरवरी, 1894 को हुआ। बचपन से ही उनकी रुचि अपने उम्र के बच्चों की तरह खेल-कूद की बजाय रुहानियत में अधिक थी। 1924 में अपने गुरु बाबा सावन सिंह जी महाराज के चरणों में पहुंचने से 7 साल पहले ही इन को उन के अंतर में दर्शन होने शुरू हो गये थे। भारत सरकार के डिफँस विभाग में सरकारी सेवा करते हुए ये 1947 में डिप्टी अस्ट्रैटेंट कंट्रोलर आफ मिलिट्री एकाउंट्स के पद से रिटायर हुए। तत्पश्चात् उन्होंने अपने सत्तुरु के हुक्म से दिल्ली में 'रुहानी सत्संग' संस्था स्थापित की जिस के दरवाजे हर धर्म, जाति और फिरके के अमीर—गरीब के लिए खुले थे। रुहानियत के प्रचार के लिए उन्होंने देश भर के अलग—अलग शहरों और गांवों का भ्रमण किया तथा लोगों को अन्तरीय ज्योति और शब्द ध्वनि से जोड़ा। वे सर्वसम्मति से विश्व धर्म संघ के 15 साल तक अध्यक्ष रहे और लोगों के सामने इस सच्चाई को खोल कर रखा कि विश्व के सारे धर्म उस प्रभु—परमात्मा को पाने के अलग—अलग रास्ते हैं और उन सब की मूल शिक्षा एक ही है। रुहानियत के प्रचार के लिए उन्होंने तीन विश्व यात्रायें 1955, 1963 और 1972 में कीं। फरवरी 1974 में उन्होंने दिल्ली में ऐतिहासिक विश्व मानव एकता सम्मेलन का आयोजन किया जो कि महाराजा अशोक के बाद इन्सानियत के लेवल से प्रचार का दूसरा बड़ा कदम था। 1 अगस्त, 1974 को भारतीय संसद को सम्बोधित करने वाले वे पहले गैर—राजनैतिक व्यक्ति थे। लोगों को आत्म—अनुभव और परमात्म—अनुभव का प्रैक्टिकल पाठ पढ़ाने वाली यह हस्ती 21 अगस्त, 1974 को शारीरिक तौर पर इस संसार से विदा लेते हुए उस महान प्रभु की ज्योति में विलीन हो गई जहां से उनका प्रादुर्भाव हुआ था।



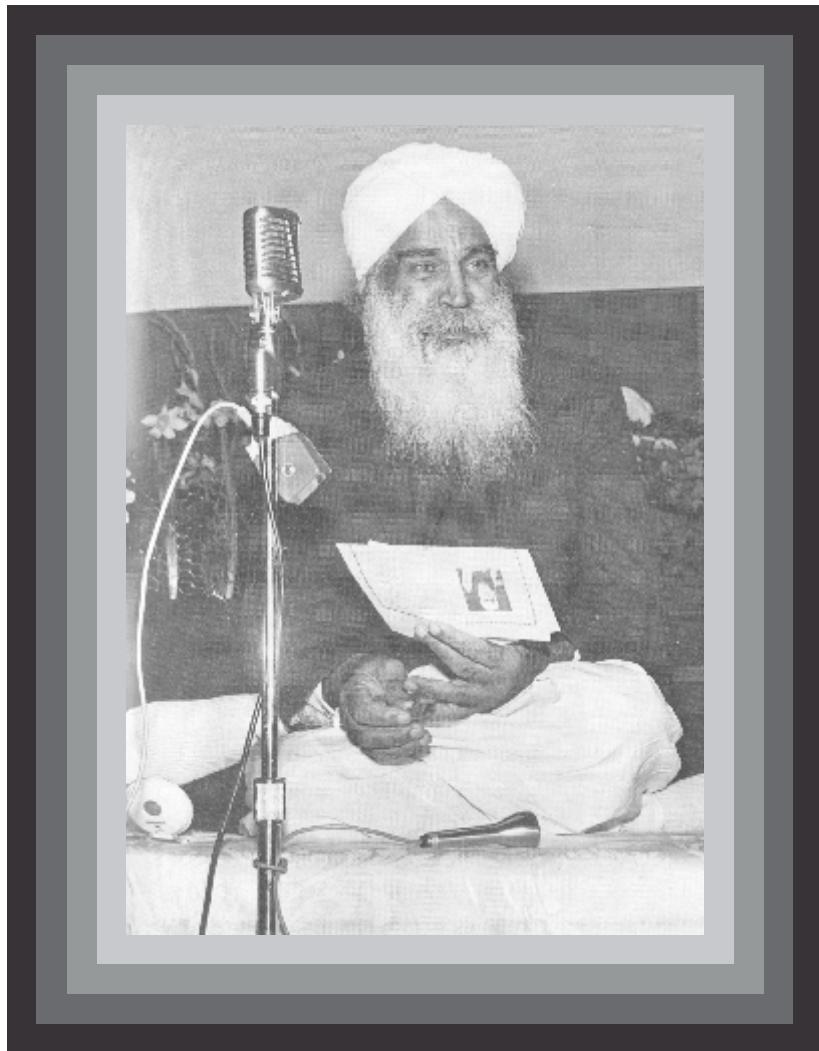
i



Kirpal Singh



iii



iv

प्रकाशक की कलम से.....

संतों का यात्राओं से मतलब कोई सैर-सपाटा नहीं होता। वे जिधर भी जाते हैं लोगों का कल्याण करते जाते हैं। संत कृपाल सिंह जी महाराज ने तीन विश्व यात्राएं 1955, 1963 और 1972 में कीं। इन यात्राओं में उन्होंने सब धर्मों की सांझी शिक्षा पर बल दिया। बाहरमुखी कार्म-कांडों से हटा कर उन्होंने लोगों को अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य (सदाचार), नम्रता, सात्त्विक शुद्ध आहार तथा निष्काम सेवा को धारण करते हुए अंतर्मुख सुरत शब्द योग द्वारा जन्म-जन्मांतर से प्रभु से बिछुड़ी अपनी आत्मा को अंतरीय ज्योति और शब्द धुनि से जोड़ने पर बल दिया तथा सब को सामने बिठा कर ज्योति और नाद का प्रैकटीकल अनुभव प्रदान किया।

परमार्थाभिलाषियों के प्रगाढ़ प्रेम को महसूस करते हुए अस्सी साल की उम्र में शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद भी महाराज जी 26 अगस्त, 1972 को अपनी तीसरी विश्व यात्रा पर निकल पड़े। इस यात्रा में वे बोन, कोलोन, बर्लिन, फ्रैंकफर्ट, नूरबर्ग और स्टुटगार्ट (जर्मनी); ज्यूरिच (स्विटज़रलैंड); मीलान (इटली); पैरिस (फ्रांस); और लंदन, लिवरपूल, बर्मिंघम, बैडफोर्ड (इंग्लैंड) गए। 19 सितंबर को वे अमरीका महाद्वीप गए जहां उन्होंने वर्जीनिया, कारलोटे, न्यू जर्सी, फिलाडेलफिया, न्यूयार्क, बोस्टन, फँकलिन, वरमौट (अमरीका); टोरांटो, मांट्रियाल, शिकागो, सिनसिनाटी, वैनकोवर (कैनेडा); सानफ्रांसिस्को, एनाहेम, लास एंजिलेस (कैलीफोर्निया); डलास (टैक्सास); सेंट पीटरज़बर्ग, मियामी, (फ्लोरिडा); मैक्सिको सिटी, पानामा सिटी, विटो, एक्यूडोर, बगोटा और कैली कोलंबिया आदि अनेकों नगरों व देशों का दौरा किया। अपनी यात्रा समाप्त करके वे 2 जनवरी, 1973 को दिल्ली वापस लौट आए।

जहां भी महाराज जी गए हज़ारों शिष्यों ने प्रेमांसु भरी आंखों से उत्सुकतापूर्वक उनका भव्य स्वागत किया। यह 1963 से 9 वर्ष की जुदाई के बाद का शारीरिक मिलाप था जिस का शब्दों में वर्णन करना असंभव है क्योंकि मात लोक की किसी भाषा को यह ताकत नहीं दी गई (और न ही दी जा सकती है) कि वह रुहानी प्रेम की इस अवस्था का वर्णन कर सके।

हजूर महाराज की कृपा से उस महान सत्गुरु की यात्रा का व्यान करने की तुच्छ कोशिश की गई है ताकि संगत को उन की याद का बहाना बन कर उन के प्रति प्रेम उमड़ आए और सब परमार्थाभिलाषी अभ्यास में अधिक से अधिक समय देकर अंतर्मुख तरक्की करने लग जाएं।

इस यात्रा में ज्ञानी भगवान सिंह और सरदार हरचरण सिंह हजूर के साथ गए थे। उन्होंने यात्रा के जो हालात समय—समय पर अपने पत्रों में लिखे, उन को ज्यों का त्यों (व्याकरण की दृष्टि से मामूली सोध कर के) पेश किया गया है। इस के साथ ही महाराज जी ने संगत के नाम समय—समय पर जो पत्र लिखे, वे भी शामिल किए गए हैं जिन में उन का संगत के प्रति प्रेम साफ झलकता है। विषय की लगातारता को कायम रखने के लिए कहीं कहीं पर प्रकाशक सत्संदेश (हिंदी) के नोट तथा विचार शामिल किए गए हैं। इस सब के इलावा इस दौरान में विदेशों में फरमाए गए हजूर महाराज के सत्संग वचनों में से कुछ महत्वपूर्ण अंश भी सम्मिलित किए गए हैं।

इस यात्रा में प्रत्यक्ष तौर पर महाराज जी ने 2,146 लोगों को नामदान दिया परन्तु परोक्ष रूप में जिन हज़ारों लोगों ने उन की शारीरिक उपस्थिति से रुहानी लाभ प्राप्त किया होगा उनकी गिनती नहीं हो सकती।

आशा है कि हजूर महाराज की कृपा से किया गया हमारा यह तुच्छ प्रयास सत्संगीजनों तथा दूसरे सभी परमार्थाभिलाषियों के दिलों में उस महान सत्गुरु के प्रति प्रभु प्रेम बढ़ाने में सहायक होगा।

इस सारे काम को पूर्ण करवाने के लिए महाराज जी का ही हाथ रहा है। इसलिए इस का सारा श्रेय उन्हीं को जाता है। अपनी तरफ से भरसक प्रयास किया गया है कि पुस्तक में कहीं कोई खामी न रह जाए। फिर भी यदि जाने—अनजाने कुछ कमी रह गई हो तो उस के लिए शत—प्रतिशत अपनी जिम्मेवारी महसूस करते हुए जिज्ञासुओं तथा हजूर महाराज जी से सनिम्र क्षमा—याचना करते हैं।

सितम्बर, 2013

कृपाल रुहानी सत्संग सभा (भबात)
चंडीगढ़

विषय— सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
1.	तीसरी विश्व यात्रा के दौरान फरमाये जरुरी सत्संग वचन	
2.	तीसरी विदेश यात्रा का महत्व —सत्संदेश के विचार से	1
3.	यात्रा का आरंभ —प्रकाशक सत्संदेश की ओर से	8
4.	बोन (जर्मनी) से हजूर महाराज का टैलीफोन संदेश	17
5.	हजूर महाराज जी का पहला पत्र	18
6.	ज्ञानी जी का पहला पत्र	20
7.	प्रकाशक सत्संदेश की घोषणा	23
8.	हजूर महाराज जी का दूसरा पत्र	24
9.	ज्ञानी जी का दूसरा पत्र	25
10.	ज्ञानी जी का तीसरा पत्र	31
11.	हजूर महाराज जी का तीसरा पत्र	36
12.	ज्ञानी जी का चौथा पत्र	37
13.	ज्ञानी जी का पांचवा पत्र	42
14.	हजूर महाराज का टैलीफोन संदेश	51
15.	ज्ञानी जी का छठा पत्र	52
16.	हजूर महाराज का टैलीफोन संदेश	62
17.	हजूर महाराज जी का चौथा पत्र	63
18.	ज्ञानी जी का सातवां पत्र	64
19.	ज्ञानी जी का आठवां पत्र	71
20.	ज्ञानी जी का नौवां पत्र	81

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
21.	हजूर महाराज जी का पांचवां पत्र	89
22.	हजूर महाराज जी का छठा पत्र	90
23.	ज्ञानी जी का दसवां पत्र	91
24.	हजूर महाराज जी का सातवां पत्र	103
25.	ज्ञानी जी का ग्यारहवां पत्र	104
26.	ज्ञानी जी का बारहवां पत्र	111
27.	हजूर महाराज जी का आठवां पत्र	115
28.	ज्ञानी जी का तेरहवां पत्र	116
29.	हजूर महाराज जी का नौवां पत्र	125
30.	हजूर महाराज जी का दसवां पत्र	126
31.	ज्ञानी जी का चौदहवां पत्र	127
32.	ज्ञानी जी का पन्द्रहवां पत्र	137
33.	ज्ञानी जी का सोलहवां पत्र	143
34.	ज्ञानी जी का सत्रहवां पत्र	149
35.	ज्ञानी जी का अठारहवां पत्र	156
36.	हजूर महाराज जी का ग्यारहवां पत्र	163
37.	हजूर महाराज जी का बारहवां पत्र	163
38.	ज्ञानी जी का उन्नीसवां पत्र	164
39.	ज्ञानी जी का बीसवां पत्र	171
40.	ज्ञानी जी का बाइसवां पत्र	179
41.	भारत का आगमन	187

1. तीसरी विश्व यात्रा के दौरान फरमाये ज़रूरी सत्संग वचन

यह यात्रा उन भाइयों की भजन सिमरन में तरक्की के लिए है जिन्हें नाम मिल चुका है तथा दूसरे उन नए जिज्ञासुओं के लिए जो नाम की पवित्र गिफ्ट प्राप्त करना चाहते हैं। अपनी पिछली यात्राओं में मैं सामाजिक राजनैतिक और धार्मिक नेताओं से मिला था परंतु यह यात्रा केवल आप के भजन—सिमरन में तरक्की बढ़ाने के लिए है। जिन्हें अन्तरीय तजरबा नहीं मिला या जो दुर्भाग्य से इस पवित्र रास्ते से भटक गए हैं, अथवा जो भजन—सिमरन में रैगुलर समय नहीं दे रहे हैं, उन सब को प्रति दिन भजन—सिमरन में बैठने के लिए आना चाहिए।

मैं आप सब से अकेले—अकेले मिलना चाहता हूं—ऐसा मैं कैसे कर सकता हूं? क्या आप मेरी इस समस्या का समाधान बताएंगे? दिल की बात सीधी दिल तक जाती है। शब्दों की अपेक्षा मौन रह कर अधिक समझाया जा सकता है। प्रभु के प्यारे बच्चों, आप को मिल कर मैं खुशी से झूम उठा हूं। मेरे पास केवल पांच महीने हैं। जो कुछ दिन आप के हिस्से आए हैं उन से पूरा फायदा उठाओ। मेरी उम्र का अस्सीवां साल चल रहा है। परमात्मा जाने फिर ऐसा समय आए या न आए।

भजन—सुमिरण सबसे पहले है और बाकी काम बाद में है। आप ने कई भाषण सुने होंगे और बहुत सी पुस्तकें पढ़ी होंगी। जो आपने पढ़ा है या सुना है उस का अनुभव अवश्य प्राप्त करना चाहिए। जब तक मैं इधर हूं मैं चाहूंगा कि हर सुबह आप भजन—सुमिरण में बैठें। मैं नहीं समझता कि मैं यह आप पर ज़बरदस्ती थोप रहा हूं। पर ऐसा मैं चाहता हूं ताकि आप भजन—सुमिरण में तरक्की कर सकें। इस समय का पूरा—पूरा फायदा उठाओ। मेरी सेहत अच्छी नहीं है जैसा कि आप देख रहे हैं परन्तु

फिर भी मुझ से यहां आये बगैर रहा नहीं गया।

मैं भाग्यशाली हूं कि मुझे आप सब मिले, परन्तु मैं आप को अकेला मिला। भाषण जनता को दिए जाते हैं। मैं पहले इंसान हूं न कि भाषणकर्ता। मैं आप के साथ केवल दिल से दिल की बातें कर सकता हूं जो सीधी मेरे दिल से निकल कर आप के दिल तक जाएं।

हमारे जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य प्रभु को जानना है। यह मनुष्य जीवन के इलावा दूसरी योनियों में नहीं हो सकता। क्या आप ने अपना उद्देश्य पा लिया है? समय और दरिया की लहर किसी का इंतज़ार नहीं करते। हम सदा बहाने बनाते रहते हैं, “हम कल करेंगे, एक दिन बाद करेंगे, एक महीने बाद करेंगे या कुछ और काम खत्म होने पर करेंगे। ऐसे विचार आप को अपने जीवन उद्देश्य से भटका देंगे। अगर आप को पता हो कि आप ने कल दुनिया छोड़ कर जाना है तब आप क्या करेंगे? (बाऊलिंग ग्रीन, वर्जीनिया—23 सितंबर, 1972)।

यदि मैं आपके पास आया हूं तो यह परमात्मा की दया—मेहर है, इस लिए इस का श्रेय उसी प्रभु को जाना चाहिए। यदि आप सोचते हो कि थोड़ी बहुत अच्छाई मुझ से आप को मिली है यह भी प्रभु की दया से है तब भी श्रेय प्रभु को ही जाना चाहिए और अगर फिर भी आप प्रभु को सामने रख कर मेरा कुछ धन्यवाद करना चाहते हैं तब मेरे ख्याल में मुझे धन्यवाद तभी स्वीकार होगा जब आप मेरे वचनों पर चलोगे। यही सब से अच्छा धन्यवाद करना है। इसी में आप की भलाई है। (कैलीफोर्निया—1972)

आप भाग्यशाली हो कि आप को अंतर में वह प्रकाश देखने को मिला है और वह शब्द धुनि सुनने को मिली है जिस को बड़े बड़े

पीर—पैगम्बर भी देख और सुन नहीं सके। इस से बड़ा सौभाग्य और क्या हो सकता है? परन्तु अगर हम अब इस सौगात को नहीं बढ़ाते तब, मैं कहूँगा, यह हमारा दुर्भाग्य रहा।

आज से पवक्त्रा फैसला कर लो। यह जिस्मानी मिलाप आप को सदा नहीं मिलेगा। जिस्मानी दूरी होते हुए केवल वही लोग फायदा उठा सकते हैं जिन्होंने ग्रहणशीलता विकसित कर ली हो।

यात्रा के अंत में महाराज जी ने कैली—कोलंबिया में 27 दिसंबर, 1972 को फरमाया:

इस यात्रा में हज़ारों लोगों ने सत्गुरु की जिस्मानी हाज़री का लाभ उठाया। आप सत्गुरु की शारीरिक हाज़री की कीमत को कम नहीं आंक सकते। मुझे खुशी है कि सब नौजवान व बुजुर्गों ने इस से फायदा उठाया। हमारे हजूर बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे कि किसी प्रभु रूप हस्ती की संगत में एक घंटा बैठना 100 साल की निष्काम भक्ति से बेहतर है।

अब केवल ईमानदारी से समय देने की ज़रूरत है। क्या आप अपने निजधाम जाना चाहते हैं अथवा नहीं। यह जीवन का मोड़ (*Turning point in life*) है अगर आप अपने निजधाम वापस जाना चाहते हैं। आप को अपने हवाई जहाज़ पर सीट मिल चुकी है। अब उड़ चलो, ज्योति और नाद के पंखों पर उड़ कर सीधे अपने निजधाम पहुँच जाओ। रात और दिन के 24 घंटे होते हैं, जिस—जिस्मानियत से ऊपर उठने के लिए ज्यादा से ज्यादा समय लगाओ और अपने अंतर ज्योति और नाद से संपर्क बनाओ।

अब मेरे ये अंतिम शब्द हैं। मैं आप को जिस्मानी तौर पर छोड़ कर

जा रहा हूँ रुहानियत के तौर पर नहीं। वह पावर हमेशा आप के साथ है, आप को केवल अपना मुँह अंतर्मुख करने की ज़रूरत है।

पिछली बार मैं 1963 में आया था। शारीरिक रूप से अलग रहते हुए अब 9 साल हो चुके हैं। आप में से कुछ भाइयों ने इस दौरान भारत में आश्रम की यात्रा करने की कृपा की है। मुझे अपने मित्रों, भाइयों और बच्चों के वहां अपने घर पर पहुंचने पर बड़ी खुशी होती है। भारत पहुंचने का मुख्य मकसद रुहानी तरक्की में बढ़ोतरी करना है। तो वहां से सभी भाई कुछ न कुछ सहीनज़री और रुहानी तरक्की ले कर वापस आए। कुछ भाई वहां आ कर मुझे मिलते रहे लेकिन आप सभी पत्र-व्यवहार द्वारा मेरे दिल में सदा बसे रहे। माता-पिता क्या कभी बच्चे को भूल सकते हैं चाहे बच्चे सैंकड़ों की गिनती में क्यों न हों?

हम सब प्रभु के बच्चे हैं। पिछले साल मेरा आने का पक्का विचार था। मैंने इस की पूरी तैयारी के लिए भारत में अलग—अलग स्थानों की हवाई यात्रा के लिए टिकटें खरीद लीं ताकि वे भाई उस छः महीने में उत्साह बनाए रखें जिस समय कि मैं बाहर रहूँ परंतु उस सख्त परिश्रम के कारण मैं बीमार पड़ गया। तो कुदरत ने मुझे बिल भेजा जिस के बारे मुझे इल्म नहीं था। आप देखो, मैंने पिछले साल यहां आना था। प्रेम का धागा आप की तरफ से भी और मेरी ओर से भी बड़ा मजबूत है। सत्संग संबंधी तथा दूसरी कई रुकावटों के बावजूद मैंने अब आने का प्रोग्राम बनाया, चाहे इस में कुछ देरी भी हुई।

मैं शारीरिक रूप से हमेशा आप के साथ रहना चाहता हूँ लेकिन यह संभव नहीं है। ग्रहणशीलता बढ़ाओ जिस से आप के और उस के दरम्यान कुछ न रहे। यह आप पर निर्भर करता है। मैं आप की तरह ही

इन्सान हूँ। आप में से कई संदेशवाहक बन सकते हैं। यह मत कहो कि मैं कोशिश करूँगा, यह कहना आधी 'न' है। इस की कमाई करो।

सत्गुरु की मधुर याद हमेशा बनाए रखो और एक महीने में आप की आश्चर्यजनक तरक्की होगी। मैं यह बात दिल की गहराई से कह रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप मनुष्य जीवन से पूरा फायदा उठा कर सही मायनों में तरक्की करें। प्रभु—पावर आप के अंतर है। गुरु जब नाम देता है तो आप के अंदर बैठ जाता है और आप के हर कर्म को देखता है। जब आप अपना (परमार्थ) काम करते हैं तो उसे प्रसन्न करते हैं।

शिकागो में 1 नवम्बर, 1972 को फरमाए वचन:

पहली चीज़, खून—पसीने की कमाई है और पवित्र भोजन वह है जो पवित्र हाथों द्वारा प्रभु की याद करते हुए बनाया और परोसा गया हो।

दूसरी चीज़, जैसा कि मैंने आप को बताया, कि हम अमीर या पढ़े—लिखे होने पर अथवा उच्च पदवी या जायदाद के मालिक होने के कारण दूसरों से नफरत करते हैं। हम समझते हैं कि वे हमारी पदवी के अनुकूल नहीं हैं और हमारी सोसायटी में फिट नहीं हो सकते। यह दिल की धृणा आप के अपने मन पर असर करती है।

तीसरी चीज़ है—मुआफ करो और भूल जाओ। आखिरकार सभी इन्सान एक जैसी मुहारत नहीं रखते, हर आदमी अपने विकास और ज्ञान के आधार पर काम करता है। उसे नम्रता से समझाइए और इस के बाद भूल जाइए। इस विचार को भी भूल जाएं कि उस ने वैसा किया है। इस से मन में विष पैदा होता है जो आप पर असर करेगा।

चौथी चीज़ है—पवित्रता—मन, वचन और कर्म की। अगर आप के

मन में कोई अपवित्र ख्याल आ भी जाए या आप उस का विचार करने लगें तो सिर से पैर तक आप के सारे शरीर में ज़हर फैल जाएगा जिस के बारे में दूसरों को मालूम नहीं होगा, केवल आप को पता चलेगा। कभी—कभी

लोग कहते हैं कि हम कर्म से नहीं करते, केवल बातों से मनोरंजन करते हैं। वे ऐसे अपवित्र ख्यालों के बारे में बातें करते रहते हैं लेकिन वही चीज़ें (बुरा) असर डालती हैं। जैसा मैंने एक दिन पहले भी खोल कर समझाया था, हर ख्याल का अपना असर होता है। जैसा तुम बीजोगे वैसा बीजा जाएगा। चाहे यह तुच्छ समझ कर बीजा गया हो या मनोरंजन के लिए किया गया हो इस का असर होगा।

तो यह आंखों की पवित्रता है। दूसरों की ओर कामुक ख्याल से मत देखो, शत्रुता या धृणा का भाव न रखो क्योंकि मानवता के तौर पर यह उचित नहीं है। कानों से किसी की बुराई मत सुनो क्योंकि एक ही विचार आप को शंकालु बना देता है और आप संबंधित व्यक्ति को शक की निगाह से देखने लगते हैं चाहे वह बिल्कुल सही भी हो। इस कारण किसी के ऐसा कहने पर कि उस ने ऐसा देखा है या सुना है, कभी विश्वास न करो जब तक अपने कानों से न सुनो और अपनी आंखों से न देखो।

फिर ज़बान की पवित्रता की बात आती है। जो चीज़ सात्त्विक नहीं अगर आप को उस के खाने का शौक है या स्वादिष्ट लगती है तो वह आप के पेट को खराब करने लगती है। आंख, कान, ज़बान और स्पर्श—सब की पवित्रता होनी चाहिए। इन छोटी—छोटी बातों से हम दूसरों से बुरा असर लेने लगते हैं। बात तो यह है।

पवित्रता खुद एक वरदान है। जैसा मैंने आप को बताया कि विवाहित जीवन अगर धर्म—ग्रंथों के अनुसार हो तो रुहानियत के मार्ग में

2. तीसरी विश्व यात्रा का महत्व—सत्संदेश के विचार से

(नाम का सर्वत्र प्रचार—प्रसार, जीवों पर अपार दया—मैहर की बरखा)

हजूर महाराज की तीसरी विश्व यात्रा पहली दो यात्राओं की तरह अपना एक विशेष महत्व रखती है। 1955 में जब हजूर महाराज पहली बार विदेश गये उस समय विभिन्न देशों में हजूर महाराज के नामलेवा मौजूद थे चाहे उन की संख्या बहुत ज्यादा नहीं थी। उपदेश और नामदान का सिलसिला अधिकतर पत्र व्यवहार से चलता था। यहाँ से भेजे गये हजूर महाराज के आदेश सरकुलरों (गश्ती पत्रों) द्वारा भेजे जाते थे, जो सत्संग प्रवचन का काम देते थे। विभिन्न देशों में काम करने वाले हजूर के प्रतिनिधि परमार्थाभिलाषियों की अर्जियाँ ले कर यहाँ भेजते थे और हजूर महाराज की स्वीकृति प्राप्त करने के बाद महाराज जी की ओर से उन्हें नामदान देते थे। हजूर की तवज्जो यहाँ से काम करती थी। यह सिलसिला 1974 तक चलता रहा और वहाँ नामलेवा को आत्मदर्शन का व्यक्तिगत अनुभव हजूर महाराज की दया—मैहर से मिल जाता था। कबीर साहब के शब्दों में, “गुरु यहाँ बैठा हो और शिष्य सात समुद्र पार, तब भी, ‘दीनी सुरत पठाय अर्थात् सुरति, तवज्जो मार करती है।’” विदेशी नामलेवा जिन्होंने बाबा सावन सिंह जी महाराज से नाम लिया (उस समय गिनती के चन्द नामलेवा थे) या हजारों लोग जो अब सत्युरु कृपाल सिंह जी महाराज से नाम ले रहे हैं, अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कबीर साहब के इस कथन की सत्यता की गवाही दे रहे हैं। पूर्ण पुरुष की तवज्जो की मार के क्या कहने कि देह स्वरूप कर के जिस गुरु को शिष्य ने देखा तक नहीं उस का नूरी स्वरूप, उस का ही नहीं उस के गुरु बाबा सावन सिंह जी महाराज का नूरी स्वरूप उस को अन्तर में आ जाता था जिसे वह फोटो देख कर ही पहचान पाता था।

सत्संदेश के विचार से

अपनी पहली विश्व यात्रा में हजूर महाराज ने लोगों को right understanding अर्थात् सही नज़री देने के साथ साथ परम—तत्व का व्यक्तिगत अनुभव दिया। उन की यात्रा के इस पहलू पर अमरीका वालों ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द जब हमारे यहां आए थे तो उन्होंने हमें Theory अर्थात् धर्म और अध्यात्म के सिद्धान्त के बारे में ज्ञान दिया। आप ने (सन्त कृपाल सिंह जी ने) हमें सिद्धान्त के साथ—साथ First-hand experience अर्थात् अध्यात्म का व्यक्तिगत अनुभव भी दिया। पश्चिमी देशों में प्रवचन पर टिकट लगता है और इस तरह प्राप्त धनराशी का कुछ भाग भाषणकर्ता को दिया जाता है, कुछ हाल के किराये व प्रबन्ध के लिए रख लिया जाता है। हजूर महाराज ने सारे भाषण निशुल्क दिये, टिकट और दान पात्र सब उठवा दिये। जब लोगों ने उन के प्रवचन से प्रभावित हो कर रुपया देना चाहा तो हजूर महाराज ने लेने से इंकार कर दिया और फरमाया कि कुदरत की अन्य दातों, हवा, पानी, रोशनी की तरह अध्यात्म की देन भी सब के लिये है और मुफ्त है। लोगों ने पूछा कि आप किस लिये यहां आए हैं? हजूर ने फरमाया कि यह मानव—देह सच्चा हरि—मन्दिर है जो प्रभु ने बनाया है। मानव—कृत मन्दिर, मस्जिद, गिरजे, गुरद्वारे इसी मानव देह के नमूने पर बनाये गये हैं। इस मानव—देह में प्रभु खुद निवास करता है लेकिन आप बाहरमुखी हो कर इस बात को भूल गये हैं। मैं इसी चीज़ को ताज़ा करने आया हूँ।

हजूर महाराज ने खुले आम सार्वजनिक सभाओं में पश्चिम के बुद्धिजीवियों और धुरन्धर विद्वानों के मुश्किल से मुश्किल सवालों का जवाब इस सादगी और सफाई से दिया कि बच्चा भी बात समझ जाए। हजूर के जवाब से न केवल समस्या का समाधान हो जाता था बल्कि सवाल का पूरा स्पष्टीकरण हो जाता था और उस के सारे पहलू सामने आ

तीसरी विश्व यात्रा

जाते थे। अध्यात्म के जटिल सिद्धान्तों को हजूर महाराज ने इतना सरल कर दिया कि लोग चकित होकर पूछने लगे कि आप जिस तरह बयान करते हैं उस से हकीकत इतनी साफ और सीधी लगती है, फिर वह इतनी जटिल क्यों बन गई, उसे समझना इतना मुश्किल क्यों हो गया? हजूर ने फरमाया कि विद्वान लोग जिन का अपना निज का कोई अनुभव हकीकत के बारे में नहीं है वे अध्ययन और बुद्धि के बल पर अपनी-अपनी व्याख्यायें करते हैं और अंधेरे में टामक टोड़ियां मारते रहते हैं। इस कारण साफ और स्पष्ट सत्य इतना उलझ कर रह गया है। हजूर ने अपने प्रवचनों में बार-बार इस बात को दुहराया कि अध्यात्म बुद्धि विचार से समझने-समझाने का विषय नहीं, वह देखने का विषय है। किताबों के पढ़े-पढ़ाये के आधार पर किसी निष्कर्ष पर पहुंचना, भावावेश में, मर्स्ती में आकर कोई धारणा बना लेना या बुद्धि-विचार से कोई मान्यता बना लेना—इन सब में भूल और भ्रम की संभावना है। सत्य का साक्षात्कार, उस हकीकत को अपनी आंखों से देखना, इन सब से ऊपर है, और वही ठीक है। हजूर महाराज ने हरेक परमार्थाभिलाषी को जो उन के पास आया, सामने बिठा कर सत्य का व्यक्तिगत अनुभव दिया जिस के बाद भूल और भ्रम की कोई गुंजाइश नहीं रह सकती।

तो पहली विदेश यात्रा में हजूर महाराज ने विभिन्न देशों में अपने लगाये हुए पौधों को पानी दिया, अपने सत्संगियों को दर्शन दिये, नये सत्संगी बनाये, जगह जगह पर नाम का बीज बोया, रुहानी सत्संग की शाखाओं का गठन किया और अध्यात्म के प्रचार-प्रसार का काम उन के भारत लौटने पर सुचारू रूप से चलता रहे, इस की व्यवस्था की, यह सारा काम पहली विदेश यात्रा में सम्पन्न हुआ। 8 वर्ष बाद 1963 में दूसरी विदेश यात्रा में हजूर महाराज ने जन-जीवन को प्रभावित करने वाले

सत्संदेश के विचार से

विभिन्न स्तरों पर काम किया, विभिन्न धर्मों के प्रमुख व्यक्तियों व धर्माचार्यों से मिले, विश्व धर्म संघ के प्रधान के नाते सर्वधर्म समन्वय की नींव डाली, राजनीतिज्ञों व शासकों से मिले, सार्वजनिक नेताओं से मिले। सत्ताधीशों से हजूर ने कहा कि प्रभु की जनता का संरक्षण (पालन–पोषण) आप को सौंपा गया है। यदि आप के पड़ौसी देश में साधनाभाव से वहां की जनता पीड़ित है तो उस की मदद कर दो। उस की कमज़ोरी का फायदा उठा कर उस देश की स्वतन्त्रता पर प्रहार न करो। धर्माचार्यों से उन्होंने कहा, “पूर्ण पुरुष जो आज दिन तक आए उन सब की तालीम एक ही है। भाषा और वर्णन—शैली अपनी—अपनी थी, बात एक ही थी जो उन्होंने कही, और सारे धर्मग्रन्थ जो आज तक लिखे गये, उन की तालीम एक ही है। एक ही आदर्श है सब का, अपने आप को जानना और प्रभु को पाना। एक ही प्रभु है जिस के हम सभी पुजारी हैं, उसे गाड़ कहो, परमात्मा कहो, अल्लाह कहो, राम कहो, वाहेगुरु कहो, कोई भी नाम रख लो उस का। फिर क्यों न सारे धर्मावलंबी आपस में गले लग कर बैठें। चार शराबी जब आपस में प्रेम प्यार से गले लग बैठते हैं तो प्रभु प्रेम का रसपान करने वाले चार प्रभु भक्त क्यों नहीं आपस में गले लग कर बैठ सकते? विभिन्न समाजों के धर्माचार्य यदि अपने धर्म का सही प्रचार करने लगें तो कहीं कोई झगड़ा न रहे।

हजूर महाराज की दूसरी विश्व यात्रा (1963) ऐसे समय में हुई जब फ्रांस और चीन के एटम बम निर्माण के पश्चात् एटम शक्ति संघ के विस्तार के कारण सारी दुनिया एटम युद्ध की आशंका से आतंकित थी। हरेक जगह उन से लोगों ने यह सवाल किया कि एटम युद्ध से कैसे बचें। हजूर का सीधा स्पष्ट जवाब था कि यदि हम अपने अपने धर्म की शिक्षा का पालन करने लगें, धर्म ग्रन्थों के आदेश को अपने—जीवन—आचरण में

तीसरी विश्व यात्रा

धारण करें तो एटम युद्ध का कोई खतरा नहीं रहेगा। धर्म—ग्रन्थों की तालीम क्या है? इशु मसीह ने कहा, “अपने प्रभु परमात्मा से प्यार कर, अपने पूरे मन से, अपनी पूरी आत्मा से, अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ। और इसी के समान महत्वपूर्ण दूसरा सिद्धान्त यह है कि अपने पड़ोसी से वैसे ही प्यार कर जैसा प्यार तू अपने आप से करता है। सारे धर्म, नियम और विधान इन्हीं दो सिद्धान्तों पर आधारित हैं।” हिन्दू धर्म ग्रन्थों का ‘वासुदेव कुटुंबकम’ का सिद्धान्त और धर्म के सार के सम्बन्ध में यह कथन कि दूसरों से वैसा ही व्यवहार करो जैसा व्यवहार तुम चाहते हो तुम से किया जाए, हज़रत मुहम्मद का फरमान कि यह सारी सृष्टि खुदा का कुनबा है और सूफियों का सिद्धान्त कि मानव मात्र एक शरीर के विभिन्न अंग हैं और जैसे एक अंग में पीड़ा हो तो सारा शरीर बेचैन हो जाता है इसी प्रकार एक की पीड़ा से दूसरे को भी दर्द महसूस होना चाहिये। तो सारे महापुरुषों की, वे किसी भी देश और काल में आए और सारे धर्मग्रन्थों की जो आज दिन तक लिखे गए, मूलभूत शिक्षा यही है कि परमात्मा से प्यार करो, अपने तन, मन, आत्मा और सम्पूर्ण शक्ति के साथ और क्योंकि वह प्रभु हरेक दिल में बसता है इस लिये सब प्राणीमात्र से प्यार करो। प्यार देना जानता है, लेना नहीं। प्यार में निस्वार्थ प्रेम है, त्याग है दूसरों के सुख के लिये। यदि सारे धर्मावलंबी, वे किसी भी धर्म को मानने वाले हैं, किसी भी महापुरुष को मानते हैं, अपने—अपने धर्म की शिक्षा को मानें और उस पर अमल करने लग जाएं तो फिर ये सारे झगड़े क्यों रहें। जिस के मन में प्राणमात्र के लिये प्यार होगा वह क्यों किसी को मारेगा, क्यों किसी का गला काटेगा या खून निचोड़ेगा, क्यों किसी का शोषण करेगा? ऐसी अवस्था में एटम युद्ध की आशंका नहीं रहेगी।

हजूर महाराज की दूसरी विश्व यात्रा की एक और विशेषता यह

सत्संदेश के विचार से

थी कि पहली बार किसी गैर-ईसाई को गिरजों के धर्म मंच पर खड़े होकर धर्म प्रवचन का अधिकार दिया गया। पहली विश्व यात्रा में हजूर ने ईसाई धर्मग्रन्थ बाईबल के कथनों की जो व्याख्या की और विश्व के अन्य धर्मग्रन्थों से उन कथनों को मिला कर सिद्ध किया कि सारे धर्मग्रन्थों की basic (मूलभूत) शिक्षा एक ही है, उस से प्रभावित हो कर ईसाई धर्म की प्राचीनतम संस्था Sovereign Order of St John of Jerusalem, Knights of Malta ने उन्हें 'ग्रैंड आफिसर' और 'सर' की उपाधि से सम्मानित किया जिस के फलस्वरूप विश्व के सारे गिरजों में धर्म प्रचार का अधिकार उन्हें मिला, चुनांचे दूसरी और तीसरी विश्व यात्रा में हजूर महाराज के प्रवचन ज्यादातर गिरजों में हुए यहां तक कि कई जगह भजन और नामदान भी गिरजों में दिया गया।

तीसरी विदेश यात्रा की अवधि पहली विदेश यात्राओं से लगभग आधी थी। केवल सवा चार महीने की इस यात्रा में हजूर महाराज ने जन साधारण को खुले आम अध्यात्म की पूंजी बांटी। पिछली दो विश्व यात्राओं के फल स्वरूप जमीन तैयार थी। विश्व के विभिन्न केन्द्रों में हरेक जगह भारी संख्या में सत्संगीजन मौजूद थे और सत्संग व नामदान का सिलसिला सभी जगह नियमित रूप से जारी था। पिछली दो विश्व यात्राओं में जितने लोगों को नामदान दिया गया, उस से दुगने से भी अधिक संख्या में हजूर ने इस संक्षिप्त यात्रा में लोगों को नामदान दिया। हरेक जगह सिर्फ दो—तीन दिन का प्रोग्राम होने के कारण बहुत लोग नाम लेने से रह गये। उन की अर्जियां लेकर हजूर महाराज की स्वीकृति मिलने पर ग्रुप लीडरों द्वारा उन्हें बाद में नाम दिया जायेगा। नामदान के अलावा हजारों की संख्या में लोगों को भजन बिठाया गया। इतनी बड़ी संख्या में लोग कभी गिरजों में भी इकट्ठे नहीं होते। एक वक्त में दो दो हजार

तीसरी विश्व यात्रा

लोगों का सत्संग सुनना और भजन बैठना तीसरी विदेश यात्रा की एक चमत्कार—पूर्ण विशेषता है। हजूर महाराज की दया—मेहर से हजारों लोगों को उस परम् तत्व का व्यक्तिगत अनुभव, पहली बार एकाध घण्टा बैठने भर में मिला, जिस का धर्मग्रंथों में केवल वर्णन और व्याख्या की गई है, वह चीज़ उन में नहीं है, न हो सकती है।

दूसरी विश्व यात्रा में एक जगह पूर्व और पश्चिम की तुलना के विषय में एक वार्तालाप का आयोजन अमरीका में किया गया था। पश्चिम की ओर से फ्रांस से एक आदमी आने वाला था और पूर्व का प्रतिनिधित्व करने का काम हजूर महाराज को सौंपा गया था। वह व्यक्ति किसी कारण पहुंच नहीं सका। इस लिए उन्होंने पूर्व और पश्चिम दोनों का प्रतिनिधित्व हजूर महाराज जी को ही सौंप दिया। हजूर ने फरमाया कि पूर्व और पश्चिम हमारे बनाये हुए हैं। परमात्मा ने तो एक ही सृष्टि बनाई है जिस में न कोई पूर्व है, न पश्चिम, न उत्तर, न दक्षिण। यह सारी दुनिया प्रभु का घर है। ये देश विभिन्न कर्मरे हैं। यह कथन कि पूर्व पूर्व है, पश्चिम पश्चिम, और दोनों आपस में कभी नहीं मिल सकते, यह इंसान का कथन है, परमात्मा का नहीं। इंसान कहीं हो, इंसान इंसान सब एक हैं।

इस विदेश यात्रा में हजूर महाराज से लोगों ने पूछा कि विश्व शान्ति की स्थापना के लिये हम क्या करें? हजूर महाराज जी ने फरमाया कि मुल्कों वाले मुल्कों से, समाजों वाले समाजों से ऊपर उठें तो दुनिया में सुख और शान्ति की स्थापना हो सकती है। यदि वे समाज, धर्म, देश और जाति की बजाय मानवता का दृष्टिकोण अपना लें, man level अर्थात् मानवता की दृष्टि से हरेक चीज़ को देखें तो कहीं कोई झगड़ा न रहे और इस के लिये हजूर ने मानव केन्द्र की योजना पेश की जो उन्हें इतनी पसंद आई कि विश्व के कई देशों में मानव केन्द्र बनने जा रहे हैं।

सत्संदेश के विचार से

दूसरी विदेश यात्रा में हजूर महाराज ने विश्व धर्म सम्मेलन के अन्तर्गत विभिन्न समाजों के धर्माचार्यों को एक जगह इकट्ठा किया और एक—दूसरे से पृथकता तथा भेद—भाव खत्म करने के काम की जड़ें मजबूत कीं। हजूर महाराज की अध्यक्षता में विश्व धर्म सम्मेलन ने पिछले तेरह चौदह वर्षों में इस सिलसिले में बड़ा काम किया है लेकिन विभिन्न समाजों के संयुक्त मंच में अपने—अपने समाज का सीमित—संकुचित दृष्टिकोण और पूर्वाग्रह तो बना ही रहता है बल्कि उस के साथ ही साथ ऐसी आवाजें भी सुनाई देने लग गईं कि दुनिया के सारे मुसलमानों एक हो जाओ, हिन्दुओं एक हो जाओ, ईसाईयों एक हो जाओ। इस वातावरण में मानव केन्द्र की यह आवाज़ उठी है, ऐ इंसानों, एक हो जाओ, जहां, जिस देश में, जिस समाज में तुम हो, उसी में रहो, अपनी—अपनी धार्मिक और सामाजिक परम्परा का पालन करो। एक ही तरह सब पैदा होते हैं, जन्म—मरण सब का एक जैसा है, अन्दर और बाहर की बनावट एक जैसी है, सब को समान अधिकार प्रभु से मिले हैं और एक ही परमात्मा के सब हम पुजारी हैं— किसी भी धर्म को हम मानते हों यह एकता हमारी जन्मजात है, हमारा निज स्वरूप है। इंसानियत के स्तर पर खड़े हो कर और इंसानियत का दृष्टिकोण अपनाने से ही हम एक हो सकते हैं। हिन्दू मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध या जैन हों, इंसान इंसान सब एक हैं। एक ही तरह सब पैदा होते हैं, जन्म—मरण सब का एक जैसा ही है, बाहर की बनावट एक जैसी है। सब को समान अधिकार प्रभु से मिले हैं और एक ही परमात्मा के सब हम पुजारी हैं— किसी धर्म को हम मानते हों। यह एकता हमारी जन्मजात है, हमारा निज स्वरूप है। इंसानियत के स्तर पर खड़े होकर और इंसानियत का दृष्टिकोण अपनाने से ही हम एक हो सकते हैं। हिन्दू मुस्लिम सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन, होने के नाते सर्वधर्म समन्वय और

तीसरी विश्व यात्रा

सहिष्णुता की भावना से प्रेरित होकर कितना ही हम आपस में मिल बैठें, पृथकता और भेद-भाव बना ही रहेगा। यह उदारता और सहिष्णुता कब तक बनी रहेगी। स्थायी एकता मानवता के स्तर पर ही स्थापित की जा सकती है और इस के लिए हजूर महाराज ने मानव केन्द्र की स्थापना की है और छह शब्दों के अपने सन्देश में, “भले बनो, भला करो, एक हो जाओ” एक ऐसा मूल मन्त्र दुनिया को दिया है जिस में विश्व के सारे धर्मग्रन्थों और पूर्ण पुरुषों की शिक्षाओं का सार-तत्व प्रस्तुत कर दिया है। रुहानी सत्संग के अन्तर्गत इस नव स्थापित संस्था (मानव केन्द्र) के बारे में हजूर महाराज ने विदेश यात्रा के दौरान लोगों को बताया कि मानव केन्द्र में **Man making** अर्थात् मानव निर्माण के कार्य के साथ साथ सक्रिय रूप से निष्काम सेवा को भी जोड़ दिया गया है जो सब को जोड़ने और मिलाने वाली कड़ी है। उस के लिए मानव केन्द्र के कार्यक्रम में **Man Service** और **Land Service** अर्थात् मानव सेवा और भू-सेवा के विभिन्न कार्य (अस्पताल, वृद्ध आश्रम, पशु पालन, कृषि कार्य, स्कूल आदि) की व्यवस्था की गई है। हजूर महाराज की इस तीसरी विश्व यात्रा के फलस्वरूप विश्व में जगह-जगह मानव केंद्र स्थापित होने जा रहे हैं। इस तीसरी विश्व यात्रा में जिस का अभी पहला चरण ही पूरा हुआ है और हजूर महाराज को निकट भविष्य में शायद अफ्रीका और एशिया के देशों की यात्रा पर भी जाना पड़े, अध्यात्म के सर्वत्र प्रचार-प्रसार के साथ-साथ मानव केन्द्र के अन्तर्गत इंसानियत के दृष्टिकोण को हृदयंगम कराने और सक्रिय रूप से जन-जीवन का अंग बनाने का कार्य हजूर ने सार्वभौम स्तर पर पूरा किया है।

3. यात्रा का आरंभ

प्रकाशक सत्संदेश की ओर से

जैसा कि हजूर महाराज ने हफ्ता भर पहले भरे सत्संग में बताया था, हजूर की तीसरी यात्रा तय हुए प्रोग्राम के अनुसार 15 अगस्त, 1972 को शुरू हुई। समाचार पाते ही सुदूर केन्द्रों से संगतें दिल्ली की ओर दौड़ पड़ीं और सावन आश्रम में लोगों के ठट के ठट लग गये। हजूर की रवानगी से तीन-चार दिन पहले आश्रम में इतनी भीड़ थी जितनी भण्डारों और जन्मोत्सव के समय होती है। तीसरी विश्व यात्रा पर जाने से पहले हजूर महाराज जी अस्वस्थता के बावजूद संगत को खुला दर्शन देते, सुबह-शाम लोगों को भजन बिठाते और सत्संग प्रवचन करते रहे। सत्संग प्रवचनों में हजूर ने सत्संगीजनों को ढारस देते हुए कहा कि पांच महीने की जुदाई से विरह विहवलता जो आप के हृदय में उभरी है उ सका फायदा उठाओ और जम कर भजन-सुमिरण करो। भजन-सुमिरण के लिये डायरी रखना ज़रूरी है। डायरी के बिना भजन में तरक्की नहीं होगी।

इस यात्रा में ज्ञानी जी, सरदार हरचरण सिंह जी और भल्ला जी हजूर के साथ गये। ताई जी को यहां कुछ काम था, इस लिये उन्हें कुछ समय के लिये दिल्ली रुकना पड़ गया। यह पहला अवसर है जब विश्व यात्रा में ताई जी हजूर महाराज जी के साथ नहीं जा सकीं और हजूर महाराज जी की जुदाई की विरह-व्याकुलता में वह संगत के साथ हैं और अपनी आंखों से देख रही हैं कि सत्गुरु दयाल की जुदाई में दिलों पर क्या गुज़रती है। स्वयं ताई जी की यह हालत थी कि जर्मनी से जब तक हजूर महाराज जी का टेलीफोन नहीं आया, वह बिन नीर की मछली के समान तड़प रही थीं।

4. बोन (जर्मनी) से हजूर का टेलीफोन संदेश

15 अगस्त, 1972 को रात दो बजे अर्थात् 16 अगस्त को हजूर महाराज दिल्ली से विदेश रवाना हुए। उस रोज़ शाम से ही ताई जी के कान टेलीफोन पर लगे हुए थे। आश्रम में सब को हजूर महाराज के टेलीफोन का इन्तज़ार था। रात सवा नौ बजे के करीब बोन से हजूर महाराज का टेलीफोन आया। जर्मनी और भारत के समय में पूरे चार घंटे का अन्तर है। हमारा समय उन से चार घंटे आगे है। टेलीफोन पर हजूर महाराज ने ताई जी से कहा:

“ मैं बिल्कुल ठीक—ठाक यहां पहुंच गया हूं। तीन बजे हम यहां होटल पहुंचे। आकर नहा—धोकर कपड़े बदले और अब नींबू की चाय पी रहा हूं। यहां के वक्त में मुताबिक इस वक्त पांच बज कर दस मिनट हुए हैं और हिन्दुस्तान में नौ बज कर दस मिनट का वक्त होगा। अभी थोड़ी देर में मैं नीचे हाल में सत्संग करने जा रहा हूं। आप लोग कोई फिक्र न करें। हम सब ठीक—ठाक हैं।”

हजूर महाराज का टेलीफोन पा कर सारे आश्रम में खुशी की लहर दौड़ गई। आस पास के लोगों को उसी समय सूचना दे दी गई और अगले दिन इतवार के सत्संग में ताई जी ने टेलीफोन का संदेश संगत को सुनाते हुए बड़े मार्मिक शब्दों में सत्संगीजनों से अपील की कि हजूर महाराज जी के वियोग के अमूल्य समय का सब लोग फायदा उठायें, दम दम गुरु को याद करें और भजन—सुमिरण में ज्यादा से ज्यादा वक्त दें। ताई जी ने आपसी मेल—जोल और ज़बान मीठी रखने पर खास ज़ोर दिया।

पहले टेलीफोन के बाद अगले दिन यहां जर्मनी से टेलीफोन मिलाने की कोशिशों की गई लेकिन सिलसिला नहीं मिला। तीस अगस्त को उधर से टेलीफोन आया परन्तु बात नहीं हो सकी।

5. हजूर महाराज का पहला पत्र संगत के नाम

डोम होटल, कोलोन

17 अगस्त, 1972

प्यारे भाइयो और बहनो,

हजूर महाराज की दया—मैंहर पहुंचे।

मैं हजूर महाराज की दया से 15 अगस्त की रात को दो बजे हवाई जहाज पर चल कर फ्रेंकफर्ट, यहां के वक्त के मुताबिक साढ़े नौ बजे और वहां के वक्त के मुताबिक दो बजे पहुंच गया था और वहां से दूसरे हवाई जहाज पर चल कर बैन पहुंच गया हूं। मिसेज़ फिटिंग वहां आई हुई थीं और बैन में बहुत सारे भाई बहन आगे लेने के लिए हुए थे। आज शाम को सवाल—जवाब हुए। सुबह लोगों को भजन बिठाया गया। फिर शाम को टाक होगी और 18 अगस्त को मैं बर्लिन आगे प्रोग्राम के लिए चला जाऊंगा।

जिस्म करके गो (चाहे) मैं आप सबसे दूर हूं मगर दिल करके सबके नज़दीक हूं। आप सब अपना भजन—सुमिरण हर रोज़ करें। इससे ढारस मिलेगी। मेरी तरफ से सब आश्रम निवासियों और दूसरे सब भाई—बहनों को प्यार पहुंचे।

ज्यादा प्यार,

दास

कृपाल सिंह

6. ज्ञानी जी का पहला पत्र

बैन

26 अगस्त, 1972

माननीय ताई जी,

सप्रेम सत करतार।

हजूर महाराज जी की दया—मेहर पहुंचे।

आप को हजूर महाराज की तीसरी विदेश यात्रा के बारे में, जो 25 अगस्त से शुरू हुई, कुछ हाल लिख रहा हूं ताकि सारे बहन-भाई जो दिल्ली और बाहर के शहरों से आए थे और जो नहीं भी आए, उन को हजूर महाराज जी याद का बहाना बन सके।

हजूर महाराज जी 25 अगस्त, 1972 को रात ग्यारह बजे आश्रम से कार में पालम हवाई अड्डे को तशरीफ ले गए। वहां पहले ही दस हजार से अधिक संख्या में लोग महाराज जी के इन्तज़ार में बैठे हुए थे। आश्रम और दूसरी जगहों से चालीस के करीब बसें भर कर पालम पहुंची हुई थीं। इस के इलावा बहुत लोग टैक्सियों, कारों, स्कूटरों और साईकिलों पर गए हुए थे। वहां एक ऊंची स्टेज बना दी गई थी ताकि सब संगत हजूर महाराज जी के दर्शन कर सके। हजूर महाराज जी रात बारह बजे वहां पहुंच कर स्टेज पर बैठ गये और संगत महव होकर दर्शन करती रही। हजूर ने वहां धंटा भर सत्संग प्रवचन किया जिस में कहा कि इंसान—इंसान सब एक हैं मगर इंसान जब अपने आप को भूल जाता है कि वह कौन है और गुमराही में चला जाता है तो इस गुमराही से निकालने के लिए महापुरुष संसार में आते हैं। यह मिशन मालिक की

ज्ञानी जी का पहला पत्र
तरफ से उन को सौंपा जाता है। वे मालिक के हुक्म के मुताबिक काम
करते हैं और जीवों को गुमराही से बचाते हैं। हजूर महाराज जी इसी लिए
विदेश यात्रा कर रहे हैं ताकि भटके लोग, जो अपनी असलियत को भूल
चुके हैं, गुमराही से निकल सकें।

सत्संग के बाद हजूर कार में बैठ सीधे वहां पहुंचे जहां उन का
हवाई जहाज़ खड़ा था और जाकर उस में बैठ गए। यह जहाज़
Lufthansa (लुफ्थांज़ा) कम्पनी का Boeing 747 हवाई जहाज़ था
जिस में 360 सीटें थीं जो पूरी भरी हुई थीं।

26 अगस्त को सुबह दो बजे जहाज़ पालम से उड़ा। जहाज़ के
चलने का सही वक्त ग्यारह बज कर चालीस मिनट का था किन्तु मौसम
की खराबी के कारण वह लेट हो गया था। दो बजे रात पालम से चल कर
सुबह साढ़े पांच बजे हम कुवैत पहुंचे जहां तेल और पानी भरने के लिए
जहाज़ घंटा भर रुका। वहां से साढ़े छह बजे चले और दोपहर ग्यारह बजे
इटली की राजधानी रोम पहुंचे। जिस वक्त जहाज़ रोम के अड्डे पर उतर
रहा था तो पानी ही पानी दिखाई देता था लेकिन जब वह और नीचे आया
तो सर्व के ऊंचे-ऊंचे दरख्त नज़र आने लगे। वहां सवा घंटा रुकने के
बाद दोपहर सवा बारह बजे चल कर दो बजे हमारा जहाज़ फ्रेंकफर्ट
पहुंचा। हवाई जहाज़ की इस यात्रा के दौरान एक मुसाफिर हजूर से
मिला जो आगे लंदन जा रहा था। हजूर से कहने लगा कि आप की फोटो
हमारे घर लगी है और छोटी उम्र में मैं आप के दर्शन किया करता था।

हवाई जहाज़ में बहुत अच्छा इन्तज़ाम था। हमें किसी किस्म की
कोई तकलीफ़ नहीं हुई। फ्रेंकफर्ट उतरे तो जर्मनी में हजूर महाराज जी
की प्रतिनिधि, मिसिज़ फिटिंग हजूर के स्वागत के लिए खड़ी थीं। वहां
उसी कम्पनी के एक छोटे हवाई जहाज़ में बैठ कर हम तत्काल परिचमी

तीसरी विश्व यात्रा

जर्मनी की राजधानी बौन के इलाका कोलन पहुंचे। बाहर बहुत से प्रेमी नर-नारी, बच्चे बड़े प्रेम और अदब कायदे से खड़े थे। उन की आंखों में प्रेम के आंसू बह रहे थे। देखने लायक नज़ारा था। प्रेम की जीती-जागती तसवीर हमारे सामने थी। थोड़ी देर हजूर अपने बच्चों को दर्शन देते रहे और फिर एक बड़ी कार में बैठ एक बड़े होटल में (डौम होटल) तशरीफ ले गए जहां उनके ठहरने की व्यवस्था की गई थी। यह होटल शहर की एक बहुत बड़ी मारकीट में है। होटल पहुंचते पौने तीन बज गए। हजूर महाराज जी ने यहां स्नान किया, नींबू की चाय पी और थोड़ा आराम किया। हजूर महाराज जी का निवास सब से ऊपरली मंज़िल में है। नीचे हाल में बहुत लोग हजूर से मिलने के लिए आए हुए थे। सवा पांच बजे हजूर नीचे उतरे और हाल में पहुंचे। मुलाकातों का सिलसिला खत्म होने के बाद हजूर महाराज जी ने विशाल हाल में प्रवचन किया जिस में बताया कि इंसान भूल और गुमराही से कैसे निकल सकता है? लोगों की तन्मयता (मगनता) का यह हाल था कि सत्संग समाप्त होने के बाद भी वे हजूर महाराज जी की ओर टकटकी बांधे आत्मविभोर बैठे रहे। स्थिर चुपचाप सप्रेम दर्शन करते लोगों को सम्बोधन करते हुए महाराज जी ने कहा, "Eat me and drink me," बाईबल में इशु-मसीह का कथन कि मुझे खाओ और मुझे पियो जिस की व्याख्या करते हुए हजूर महाराज ने कहा कि आप पूरी तवज्जो से मुझे देखो और मैं आप को देखूँ। उस वक्त गज़ब की radiation (रेडियेशन) थी जिस के असर से वहां स्थित लोगों के हृदय प्रसन्न हो गए और उनके चेहरे मुस्कराहट से खिल उठे।

रात को बहुत लोग होटल में हजूर से मिलने आए। इन में कुछ भजन-सुमिरण में होने वाली रुकावटों और कुछ अन्य मामलों पर चर्चा करते रहे। हजूर महाराज जी ने सुमिरण की गलतियों के बारे में उन्हें

ज्ञानी जी का पहला पत्र
समझाया और अपनी दया—मेहर से सब की मुश्किलों को हल कर दिया।
मुलाकातों का सिलसिला देर रात गये तक चलता रहा। कल 27 अगस्त
को सुबह सवेरे हजूर परमार्थभिलाषियों को भजन बिठायेंगे ताकि भजन में
कोई गलती हो तो दूर हो जाए। शाम को नामदान, सत्संग, मुलाकातों
और सवाल जवाब का प्रोग्राम है।

एक आदमी डसलडार्फ नगर से हजूर को मिलने आया। 1963 में
हजूर महाराज जी की दूसरी विश्व यात्रा के दौरान उसे कुछ चीजें
खरीदने के लिए पैसे दिए गये थे जिन में से कुछ रकम बच गई थी। वह
रकम हजूर को पेश करते हुए उसने कहा, “आप की यह अमानत मेरे पास
पड़ी है, वह मैं आप को देने आया हूं।” इतनी ईमानदारी इन लोगों में है।
हजूर महाराज जी ने फरमाया, “इन पैसों को तुम अब अपने पास ही
रखो।”

दास

भगवान् सिंह ज्ञानी

7. प्रकाशक सत्संदेश की घोषणा

हजूर महाराज का टैलीफोन वहां के समय के अनुसार रात के
4—5 बजे और यहां के समय के अनुसार सुबह 8—9 बजे के बीच मिला
जब हजूर महाराज नूरनबर्ग से प्रस्थान कर रहे थे। टैलीफोन उधर से
मिलाया गया था। आवाज़ साफ नहीं आ रही थी, इस लिये ज्यादा
बातचीत नहीं हो सकी। हजूर महाराज ने अपनी राज़ी खुशी का समाचार
देते हुए ताई जी से कहा कि वह रोयें नहीं और संगत को अपना दिली
प्यार और आर्शीवाद भेजा।

8. हजूर महाराज का दूसरा पत्र

स्टुटगार्ट

2 सितम्बर, 1972

प्यारे नूर के बच्चों,

हजूर महाराज की दया—मेहर पहुंचे।

पहला ख़त मैंने आप को बौन पहुंच कर लिखा था। उम्मीद है कि आप को मिल गया होगा। अब मैं जर्मनी में स्टुटगार्ट शहर में पहुंच गया हूं। हजूर महाराज की दया से लोगों को रुहानियत का फैज़ (परमार्थ लाभ) मिल रहा है। कल मैं आगे ज़्यूरिच (स्विटज़रलैंड) की तरफ जा रहा हूं। आगे के हालात आप को मिलते रहा करेंगे।

आप सब मुझे प्यारे हो। सत्गुर पर भरोसा रख कर अपना भजन और सुमिरण रोज़ करते रहें। यह रुह की रोटी है और जीवन का पानी है। इस से आत्मा बलवान होगी। मेरी तरफ से सब भाई व बहनों को प्यार पहुंचे।

ज्यादा प्यार,

दास

किरपाल सिंह

9. ज्ञानी जी का दूसरा पत्र

होटल पेलेस, बर्लिन

29 अगस्त, 1972

माननीय ताई जी,

पहली चिट्ठी में आप को कोलन—बौन पहुंचने तक का हाल लिखा गया था। अब आगे सुनिये।

27 अगस्तः सुबह—सवेरे होटल के बड़े हाल में हजूर महाराज जी ने परमार्थभिलाषी नर—नारियों को भजन बिठाया। इन में बहुत से नये लोग भी थे। बाद में जब पूछा गया तो किसी को अन्तर में गुरु स्वरूप, किसी को सूर्य, चांद, तारे, किसी को आसमान, किसी को लाईट—हरेक को कुछ न कुछ (कम से कम लाइट का) अनुभव हजूर महाराज जी की दया—मेहर से हुआ। इसके बाद हजूर महाराज ने सवालों के जवाब दिये जिन में बड़े प्यार से समझाया कि मानव जीवन का आदर्श प्रभु को पाना है। आप सभी को अन्तर में ज्योति और श्रुति या धुनि का अनुभव मिल चुका है जो God into expression Power (करन—कारण प्रभु सत्ता) के दो Phases या स्वरूप हैं। यह जो अनुभव की पूँजी आप को दी गई है इस की रोज़—रोज़ कमाई करोगे तो यह दिनों—दिन बढ़ेगी और एक दिन आप सच्चे पिता की गोद में पहुंच जाओगे जो मानव जीवन का परम लक्ष्य और ध्येय है।

सवाल—जवाब में सबकी तसल्ली होने के बाद हाल में एक अजीब रस भरी शान्ति और टिकाव का मंडल बन गया था जिस से आत्म—रंग की किरणें प्रसारित हो कर सब को आनन्द—विभोर कर रही थीं। तन—मन की सुधि बिसराय अपलक नेत्रों से लोग हजूर महाराज के

तीसरी विश्व यात्रा

दर्शन कर रहे थे। निजानन्द की मस्ती में इतनी भी होश नहीं रही थी कि कौन कहां बैठा है। कुछ देर बाद हजूर महाराज ने खामोशी को तोड़ते हुए कहा, “आप सभी लोग यह चाहते हैं कि मैं यहां बैठा रहूं और मैं भी यही चाहता हूं कि आप यहां बैठे रहें। यहां से उठने को किसी का भी मन नहीं करता लेकिन वक्त हो गया है।” हजूर महाराज यह कह कर वापस अपने कमरे में आ गये।

तभी मिस्टर जिम, उस की घरवाली, लाला (ये दोनों पति-पत्नी अपनी दूध पीती बच्ची को लेकर भारत आए थे और कई महीने सावन आश्रम में रह कर हजूर महाराज के सत्संग और दर्शन का लाभ उठाते रहे) की माता, श्रीमति डोरिस इडीलसन हजूर महाराज जी से मिलने आए। वह बहुत बूढ़ी थी। उस को नाम नहीं मिला था। हजूर महाराज जी ने उस की आंखों और माथे पर हाथ रख कर कहा कि अन्तर में सामने अन्धेरे के बीच बड़े प्रेम से ध्यान लगा कर देखो। हजूर की दया—मेहर से थोड़ी देर में काला पर्दा हट गया और उस को सफेद रोशनी दिखाई दी। हजूर महाराज ने फरमाया कि इसी तरह रोज़ अभ्यास करने से रोशनी और तेज़ हो जाएगी और गुरु स्वरूप आ जाएगा। दोपहर के बाद बहुत लोग नामदान के लिये वहां एकत्र हो गये मगर वक्त की कमी के कारण उन्हें नाम दान नहीं दिया जा सका क्योंकि चार बजे फिर टाक का प्रोग्राम था। हजूर महाराज ने मिसिज़ फिटिंग को आदेश दिया कि वह नामदान के लिये प्रार्थना पत्र लेकर अपने पास रख ले। विश्व यात्रा से वापसी पर हजूर जब जर्मनी आएंगे तब उन को नाम दिया जाएगा। शाम को साढ़े छह बजे हजूर महाराज अपने कमरे से उतर कर नीचे हाल में तशरीफ ले गये जहां उन्होंने प्रोग्राम के मुताबिक टाक दी।

रात को 8 बजे से 10 बजे तक आम पब्लिक टाक थी। सत्संग

ज्ञानी जी का दूसरा पत्र

बाहर किसी दूसरे हाल में था। हाल लोगों से खचाखच भरा हुआ था। हाल में लगी सीटों पर तो लोग बैठे ही थे, बहुत लोग चारों ओर कतार बांधे खड़े थे। हजूर महाराज ने Mystery of Life (जीवन रहस्य) का मज़मून लिया और बताया कि इस रहस्य को कैसे हल किया जा सकता है। टाक अंग्रेजी में थी और एक दुभाषिया साथ—साथ जर्मन भाषा में उस का अनुवाद करता जाता था जिस से सभी लोग उन की बात को समझ सकें, क्योंकि यहां की प्रचलित भाषा जर्मन है, बहुत कम लोग हैं जो अंग्रेजी भाषा जानते हैं। हजूर महाराज ने बड़ी सादा सहज—सुलभ भाषा में प्रवचन किया जो सब को समझ आ गया। सत्संग के बाद रात सवा दस बजे हजूर महाराज वापस अपने कमरे में पहुंचे। यहां का प्रोग्राम खत्म है, कल सुबह हम बर्लिन जायेंगे।

28 अगस्तः सुबह साढ़े आठ बजे हजूर महाराज कार में कोलन—बौन के हवाई अड्डे को रवाना हुए। होटल के बाहर लोग बड़े अदब—कायदे से दर्शन के लिये खड़े थे। इन में बहुत—से लोग वे थे जिन्होंने हजूर के साथ बर्लिन जाना था। BEA कम्पनी का 100 सीटों वाला हवाई जहाज़ हजूर महाराज और उनकी पार्टी को लेकर पैने दस बजे कोलन से चल कर लगभग 700 मील का फासला तय कर पैने गयारह बजे बर्लिन पहुंच गया। वहां बहुत बड़ी संख्या में लोग दर्शन के लिये खड़े थे। हवाई अड्डे पर फोटोग्राफरों और मूवी कैमरामैनों ने तसवीरें लीं जिस के बाद एक बड़ी कार में हजूर पैलेस होटल पहुंचे जहां उन के रहने की व्यवस्था की गई थी।

इसी होटल के एक बड़े हाल में शाम के चार बजे सत्संग का प्रोग्राम था। सत्संग से पहले बहुत देर सवाल—जवाब का सिलसिला चलता रहा। एक ने सवाल किया कि प्रभु से प्रेम कैसे बने? हजूर महाराज जी ने कहा कि जिस को देखा नहीं, जिसे बरता नहीं, जिसका रस नहीं

तीसरी विश्व यात्रा

मिला, उस से प्रेम कैसे हो सकता है? और बिना देखे कहना कि परमात्मा ज्योति स्वरूप है, परमात्मा नाद है, यह सब ज़बानी जमा—खर्च है, इस से प्राप्ति नहीं होती। ये नेक कर्म ज़रूर हैं, नेक फल मिलेगा, प्यार नहीं बनेगा। प्यार देखने से बनता है। सन्तों का कहना है, “जब देखा तो गावा, तो गावे का फल पावा।” सन्तों की तालीम है देख कर गाना। उस से प्रेम बढ़ता है और धीरे—धीरे जीव सदेह प्रेम बन जाता है और प्रभु में अभेद हो जाता है।

योग के बारे में एक सवाल का जवाब देते हुए हजूर महाराज ने फरमाया कि हठ योग, प्राण योग, लय योग आदि कई योग हैं। हरेक योग का अपना Scope (गुण और सीमा) है। हठयोग शरीर के स्वास्थ्य के लिये है, प्राण योग से आयु लम्बी होती है इत्यादि। सुरत शब्द योग Natural (स्वाभाविक) योग है जिस का सम्बन्ध देखने से है, direct contact with Reality से है (अर्थात् आत्मा के सीधा परमात्मा से जुड़ने से है)। दूसरे किसी भी योग में यह बात नहीं। एक सज्जन का प्रश्न था कि initiation अर्थात् दीक्षा किस को कहते हैं? हजूर ने फरमाया कि आत्मा का पिण्ड से ऊपर आ कर God into action Power अर्थात् करन—कारण प्रभु—सत्ता से सम्पर्क करने, जुड़ने का नाम है दीक्षित होना। दीक्षा में ज़बानी ज्ञान—ध्यान नहीं, आत्मानुभव और प्रभु अनुभव की नकद पूँजी मिलती है। एक ने सवाल किया कि अन्तर में रोशनी ठहरती क्यों नहीं? हजूर महाराज ने फरमाया, “क्योंकि हमारा मन दौड़ता है इस लिये रोशनी एक जगह खड़ी नहीं मालूम होती। रोशनी वहीं कायम है, हम ही हट जाते हैं।”

पश्चिमी देशों में मांस खाने का बड़ा रिवाज है। चुनांचे मांसाहार के बारे में कई सवाल किये गये, उदाहरणार्थ, डाक्टरों के कहने पर क्या प्राण रक्षा के लिये भी मांसाहार निषेध है? हजूर महाराज ने फरमाया,

ज्ञानी जी का दूसरा पत्र

“जैसा अन्न तैसा मन। खाने का असर मन पर पड़ता है। कुत्ते को भी, जो मांसाहारी जीव है शाक—सब्जी और दूध पर रखा जाए तो शान्त रहता है, ज्यादा भौं—भौं नहीं करता। मांसाहार से आध्यात्मिक उन्नति में भारी रुकावट पड़ती है।” एक सवाल यह था कि अगर किसी सत्संगी के घर वाले, जो सत्संगी नहीं हैं, मांसाहारी हों तो क्या करना चाहिये? महाराज जी ने कहा, “उन्हें समझाओ कि मांसाहार से मन पर बुरा असर पड़ता है, कर्मों का बोझ सिर पर चढ़ता है। फिर भी न समझें तो उन्हें उन के हाल पर छोड़ दो, पर आप मांस न खाओ।”

दीक्षा लेने के लिये क्या चीजें ज़रूरी हैं? इस सवाल का जवाब देते हुए हजूर महाराज ने कहा कि पहली आवश्यक चीज़ सात्त्विक भोजन—मांस, अण्डा और मादक द्रव्यों अर्थात् नशीली चीज़ों से परहेज़। दूसरे ब्रह्मचर्य अर्थात् जीवन की पवित्रता, तीसरे Theory अर्थात् सिद्धान्त को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए जिस से पूरा भरोसा बन जाए और नाम ले कर आगे कमाई करना ताकि अनुभव की पूँजी जो दीक्षा के समय मिली है वह दिनों—दिन बढ़े।

सवाल—जवाब के बाद हजूर महाराज ने सत्संग किया जिस में मानव जीवन के आदर्श की व्याख्या की। हजूर महाराज ने कहा, “इंसान इंसान सब एक हैं। अन्तरीय और बाहरी बनावट सब की एक सी है। सब को समान अधिकार प्रभु से मिले हैं। अपने प्रवचन में हजूर महाराज ने खोल—खोल कर बताया कि हम देहध्यास अर्थात् शरीर और शारीरिक व्यापार से ऊपर आ कर प्रभु से कैसे जुड़ सकते हैं। इस प्रसंग में हजूर ने कहा कि मुश्किल यह बनी पड़ी है कि हम ने जीवन का कोई आदर्श नहीं बनाया। हम बह रहे हैं। कभी हम परमार्थी बन जाते हैं, कभी संसारी। एक गढ़ा यहां खोदा, एक गढ़ा दो गज परे वहां खोद लिया, पानी कहीं भी नहीं निकला। तो पहली बात यह है कि अपना कोई आदर्श बना लो। एक

तीसरी विश्व यात्रा

फैसला करो, चाहे उस में एक दिन लगे, महीना लगे, साल लगे, मगर एक बार फैसला कर लो। फिर उस आदर्श को पाने के लिए कदम—कदम आगे बढ़ते जाओ, एक दिन तुम मंजिल पर पहुंच जाओगे। मैं अपनी बात बताऊं, मुझे फैसला करने में सात दिन लगे थे। इन सात दिनों में मैंने हरेक पहलू पर पूरा विचार करने के बाद फैसला किया कि मेरे लिए प्रभु पहले है, दुनिया बाद मैं—God first and world next." वैसे भी यदि World में से L निकाल दें तो Word अर्थात् परमात्मा बाकी रह जाता है। सत्संग के बाद सब चुपचाप उस शान्ति स्थिर मण्डल में बैठे रहे। दो—तीन मिनट के बाद सब को ऐसा लगता था कि वे एक ऐसी जगह बैठे हैं जहां उन्हें दुनिया का फिक्र, दुख—संताप और घर—बार तक का होश नहीं। एक रुहानी नशे में बैठे वे अपने सत्गुरु के दर्शन में लीन थे।

यहां एक जर्मन लेडी हजूर महाराज से मिलने के लिए आई। वह पूर्वी जर्मनी की रहने वाली थी जहां (उस समय) लोगों को पश्चिमी जर्मनी के इलाके में जाने की कड़ी मनाही है, पाबन्दी है उन लोगों पर कि वहां के लोग हजूर महाराज को मिलना तो क्या उन्हें चिढ़ी भी नहीं लिख सकते। बड़े प्रेम से वह हजूर महाराज से मिली। यह सारा प्रोग्राम प्रश्नोत्तर और सत्संग प्रवचन साढ़े छह बजे शाम को खत्म हुआ। लोगों की प्रार्थना पर हजूर महाराज ने उन्हें भजन बिठाया। हरेक को अन्तर में अच्छा अनुभव हुआ। वहां से रात दस बजे हजूर वापस अपने कमरे में आये। बाकी हाल फिर।

दास

भगवान् सिंह क्षानी

10. ज्ञानी जी का तीसरा पत्र

29 अगस्तः सुबह 9 से 11 बजे तक नीचे होटल के हाल में लोगों को भजन बिठाने का प्रोग्राम था। हजूर महाराज ने पहले भजन सुमिरण की पूरी विधि लोगों को समझाई, फिर सब को भजन बिठा दिया। उन में कई नये आदमी भी थे। सभी को अन्तर्मुख ज्योति, चांद, सूरज, सितारे, गुरु स्वरूप दर्शन आदि का अनुभव प्राप्त हुआ। उस के बाद सत्संग हुआ जिस का विषय था, “मन की पवित्रता।” हजूर महाराज ने बताया, “मानव शरीर ही सच्चा मन्दिर, सच्चा गुरद्वारा, सच्ची मस्जिद, सच्चा गिरजा है। बाहर के मन्दिर, मस्जिद, गिरजे, गुरद्वारे इसी मानव शरीर के नमूने पर बनाये गये हैं। जब इंसान को अनुभव रूप में यह ज्ञान हो जाए कि वह प्रभु इसी जिस्म में रहता है और हरेक के अन्दर उस की ज्योति जगमगा रही है तो वह सब से प्यार करेगा। मानव तो मानव, पशु से भी उस का प्यार होगा।”

पिछले दिन के प्रवचन का जिक्र करते हुए हजूर महाराज ने कहा, “कल मैंने आप को जीवन का आदर्श बनाने के लिए कहा था। आप में से किसी ने इस का फैसला किया है? वक्त का फायदा उठाओ भई। यह जो समय मिला है, इस की कद्र करो।” हजूर महाराज ने कहा कि पूर्ण पुरुष समय समय पर हकीकत को ताजा करने आते हैं। वे सादा लफज़ों में उस सनातन से सनातन तालीम को बयान करते हैं जो हमेशा से चली आई है, हमेशा रहेगी, न बदली है, न बदलेगी। वे जो कहते हैं, देख कर कहते हैं, सुनी—सुनाई, पढ़ी—पढ़ाई बात नहीं कहते। पढ़े—लिखे लोग बड़ी—बड़ी बातें करते हैं जो लोगों को समझ नहीं आतीं। पूर्ण पुरुष हकीकत को सादा लफज़ों में बयान करते हैं जो सब समझ जाएं। प्रवचन के अन्त में

तीसरी विश्व यात्रा

हजूर महाराज ने कहा कि जिस को मनुष्य जन्म मिला है, प्रभु प्राप्ति उस का जन्मजात अधिकार है मगर उस के लिये मन की पवित्रता की ज़रूरत है। वे लोग खुशकिस्मत हैं जिन को परमात्मा ने चुना है और अन्तर में ज्योति और श्रुति (धुनि) का रास्ता जिन को मिला है। इस की कमाई कर के अर्थात् रोज़ अभ्यास कर के अन्तर्मुख ज्योति और नाद से जुड़ने से इंसान में सारे गुण अपने आप पैदा हो जाते हैं और वह सारे गुणों का abode (भंडार) बन जाता है।

सत्संग के बाद साढ़े ग्यारह बजे हजूर वापस अपने कमरे में आए। शाम को फिर चार से छह बजे तक प्रश्नोत्तर और सत्संग का प्रोग्राम था। सवाल—जवाब में कोई पाबन्दी नहीं, जो चाहे कोई सवाल करे और तत्काल जवाब देना पड़ता है। बड़े—बड़े विकट सवाल यहां लोग करते हैं। कुछ सवाल यहां दिए जाते हैं। एक सज्जन ने पूछा, “क्या लेट कर भजन कर सकते हैं?” हजूर महाराज ने कहा, “इस में नीद आने का डर है। भजन—सुमिरण पूरी तरह चेतन्य होकर करना चाहिये।” “भजन—सुमिरण में नींद को कैसे रोका जाए?” हजूर महाराज ने कहा कि भजन—सुमिरण उस वक्त करो जब आप पूरी तरह जागृत हो, शरीर में कोई थकावट न हो। चेतन्यता के लिए थोड़ी कसरत कर लो या नहा लो।

एक ने पूछा, “कोई मेरा बुरा या मेरे खिलाफ सोचे तो मैं किस तरह उस की प्रतिक्रिया से बचूँ?” हजूर महाराज ने कहा, “जब हम कोई ऐसी—वैसी बातें सुनते हैं तो हमें गुस्सा आ जाता है, हम सोचते—समझते नहीं। दूसरा जो बात तुम्हारे खिलाफ कहता है, उस को ठण्डे दिल से सुनो। फिर देखो और विचारो कि वह त्रुटि आप में है या नहीं? अगर है तो उसका शुक्रिया अदा करो कि आप की गलती उस ने बता दी। नहीं है तो प्यार से उसे समझा दो। तुम्हें बुरा कहने वाला अगर न समझे तो उस के

ज्ञानी जी का तीसरा पत्र
 लिये प्रार्थना करो कि भगवान उसे सुमति दे। अपने मन में सब के प्रति
 प्यार और सद्भावना रखो। इस से आप भी दुविधा से बचे रहोगे और
 दूसरों को भी दुख नहीं होगा।” इस सम्बन्ध में महात्मा बुद्ध के जीवन से
 एक दृष्टान्त प्रस्तुत करते हुए हजूर महाराज ने कहा कि एक आदमी
 महात्मा बुद्ध के पास आया और गालियां देने लगा। महात्मा बुद्ध ने उसे
 कुछ न कहा, चुपचाप गालियां सुनते रहे। शाम हो गई और वह आदमी
 बक—बक कर थक गया तो महात्मा बुद्ध ने उस आदमी को बुला कर
 कहा, “अगर कोई आदमी किसी के लिए कोई सौगात लेकर आए और वह
 उस की भेंट स्वीकार न करे तो वह सौगात किस के पास रही?” वह
 आदमी कहने लगा, “सौगात लाने वाले के पास रहेगी।” महात्मा बुद्ध ने
 कहा, “आप मेरे लिए जो चीज़ लाए हैं वह मुझे स्वीकार नहीं।” यह बात
 सुन कर वह आदमी अपना—सा मुँह लेकर रह गया। उस वक्त अन्धेरा हो
 चुका था। महात्मा बुद्ध ने अपने यह एक सेवक को आदेश दिया कि
 दीपक लेकर इस व्यक्ति को घर छोड़ आओ, कहीं रास्ता न भूल जाए।
 मतलब यह कि सब के लिए मन में सद्भावना होनी चाहिए।

एक सज्जन ने सवाल किया कि Knowledge अर्थात् ज्ञान
 की परिभाषा क्या है? हजूर महाराज ने फरमाया, “The end of all
 knowledge, is service (अर्थात् ज्ञान का लक्ष्य है सेवा), दूसरे ज्ञान
 का मतलब है Fellowship feeling (अर्थात् समस्त सृष्टि के प्रति
 भ्रातृभाव) और ज्ञान की आखिरी मंज़िल है humility (अर्थात् नम्रता)।
 आज तक हम लोगों ने जो भी काम किये हैं, वे बुद्धि—विचार से सम्बन्ध
 रखते हैं, हृदय से नहीं। अगर दिल और दिमाग, हृदय और मस्तिष्क एक
 हो जाएं, मिल कर काम करें तो दुनिया में सुख हो जाए। आज की शिक्षा
 में बड़ी कमी यह है कि वह मस्तिष्क का विकास तो करती है, हृदय का
 नहीं।”

तीसरी विश्व यात्रा

एक व्यक्ति ने सवाल किया, “दो रास्ते बताये गये हैं, एक शरण लेने का रास्ता, दूसरा अभ्यास अर्थात् भजन—सुमिरण का। कौन—सा मार्ग आसान और सरल है?” हजूर महाराज ने कहा, “शरण लेना बड़ा मुश्किल है।” इस प्रसंग में हजूर ने हज़रत इब्राहीम का दृष्टान्त प्रस्तुत किया कि वे एक गुलाम (दास) मोल ले आए। घर आ कर उस से पूछा, “कहाँ रहोगे?” “कि जहाँ रखोगे। मैं तो आप का मोल लिया दास हूँ।” पूछा, “क्या खाओगे?” “जो आप दोगे।” “क्या पहनोगे?” “जो पहनने को दोगे। मैं तो दास हूँ आपका।” हज़रत इब्राहीम ने यह सुन कर चीख़ मारी कि ऐ खुदा, मैं अभी तक तेरा गुलाम नहीं बना। तो शरण लेना, अपने आप को किसी के हवाले कर देना, बड़ा मुश्किल है। भजन—सुमिरण आप को सीढ़ी दर सीढ़ी शरण लेने की मंज़िल तक ले जाएगा। एक आदमी ने पूछा, “मन को काबू कैसे किया जाए?” हजूर महाराज ने फरमाया, “पूरी तवज्जो से दो भ्रू—मध्य लगातार देखने और ज्योति के बीच ध्यान टिकाने तथा अन्तर शब्द ध्वनि को सुनने और उस में लीन होने से मन काबू हो जाता है।” और भी कई सवाल पूछे गये, फूल तोड़ने, फोटो का ध्यान करने के बारे में, पर चिट्ठी लम्बी हो गई है। वे फिर लिखेंगे।

अपने सत्संग प्रवचन के अन्त में हजूर महाराज ने कहा कि ये मेरे आखिरी वचन हैं कि नियमित रूप से रोज़ भजन—सुमिरण करो। यही ज़िन्दगी की रोटी और ज़िन्दगी का पानी है। शाम छह बजे हजूर सत्संग के बाद वापस अपने कमरे में आए। रात आठ से नौ बजे तक Kramia House, Cultural Centre में हजूर महाराज ने टाक दी। बहुत बड़ा हाल था जो खचाखच भरा हुआ था। हजूर महाराज ने मानवता और प्रभु—प्राप्ति के साधन को खोल कर बयान किया और बताया कि परमात्मा सन्तों की संगति में मिलता है। सत्संग के बाद हजूर कार में बैठे तो बौद्ध

ज्ञानी जी का तीसरा पत्र
धर्म की अनुयायी दो महिलाओं ने हजूर महाराज से सवाल किये। हजूर
महाराज ने उन से कहा कि बौद्ध धर्म में दो मत प्रचलित हैं, एक महायान,
जो परमात्मा को मानते हैं, दूसरे हीनयान, जो नहीं मानते। तुम किस मत
से सम्बन्ध रखती हो? हजूर ने कुछ देर उन से बात की। वापस अपने
कमरे में आ कर हजूर ने बताया कि हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज
को एक बार अमरीका से चिट्ठी आई कि यह बौद्ध मत का मन्त्र है, “ओम्
मणि पदमे हूम्।” इस का मतलब हमें लिख कर भेजो। हजूर महाराज ने
जवाब में लिखा, “‘पदम’ का मतलब है ‘चमक’ और ‘हूम’ का मतलब है
‘गर्ज’ अर्थात् अन्तर में ज्योति भी है और ध्वनि भी।” तो basic
teaching अर्थात् मूलभूत तालीम एक ही है सब समाजों की।

होटल वापस आने तक रात के दस बज चुके थे। कल हम
नूरनबर्ग जा रहे हैं। आगे वहां से लिखेंगे।

दास

ज्ञानी भगवान सिंह

11. हजूर महाराज का तीसरा पत्र

मीलान
5 सितंबर, 1972

मेरी जान से प्यारे भाइयों और बहनों,
हजूर महाराज की दया—मेहर पहुंचे।

आज मैं जर्मनी का दौरा खत्म कर रिवटजरलैंड के शहर ज्यूरिच का दौरा कर के मीलान पहुंच गया हूं। यहां दो दिन का प्रोग्राम है और फिर मैं परसों हवाई जहाज़ द्वारा चार दिन के लिए पैरिस जाऊंगा। हजूर महाराज जी की दया से यहां पर नये और पुराने भाइयों और बहनों की सत्संग व नाम का फैज़ (लाभ) मिल रहा है। हजूर महाराज जी की बरकत काम कर रही है।

आप सब के लिये मेरे दिल में प्यार है। दिल से दिल को राह होती है। अगर आप मुझे याद करते हैं तो मैं भी आप को याद करता हूं। जब भी अन्तर में सत्गुरु से मिलने के लिए तड़प हो, भजन पर बैठ जायें, अन्तर में ढारस मिलेंगी। उमीद है कि सब भाई और बहन सत्संग से फायदा उठा रहे होंगे। सत्संग सुनने से सत्गुरु की याद बनती है, अपने आप को जानने के लिये और प्रभु प्राप्ति के लिये शौक पैदा होता है और भजन—सुमिरण में उभार मिलता है। मेरी तरफ से सब बहनों और भाइयों को प्यार पहुंचे। बाकायदा हर रोज़ भजन—सुमिरण करते रहें। जिस्म की खुराक खाना—पीना है, बुद्धि की खुराक लिखना—पढ़ना है और आत्मा की खुराक भजन—सुमिरण हैं। प्यार प्रेम से भजन—सुमिरण को वक्त देते रहें। सत्गुर ताकत सदा अंग—संग होकर मुनासिब सभाल कर रही है। सौ काम छोड़ कर सत्संग में आया करो और दूसरों को, जो नहीं आते, उन को भी ले आया करो। यह भी सेवा है।

हर रोज़ रात सब कारकुन (काम करने वाले) इकट्ठे बैठ जाया करो और आपस में प्रेम व प्यार से रहो। आश्रम में सब को मेरी तरफ से प्यार पहुंचे।

ज्यादा प्यार,

दास
कृपाल सिंह

12. ज्ञानी जी का चौथा पत्र

नूरेनबर्ग / स्टुटगार्ट

2 सितंबर, 1972

माननीय ताई जी,

तीसरी चिट्ठी मैंने आप को हजूर महाराज की बर्लिन की यात्रा के बारे में लिखी थी। अब नूरेनबर्ग के बारे में लिख रहा हूँ।

30 अगस्तः सवेरे 9 बजे के करीब हजूर महाराज जी पैलेस होटल, बर्लिन में अपने कमरे से उतर कर नीचे आये। कई लोग महाराज जी के दर्शन के लिये खड़े थे और 30 के करीब साथ आगे नूरेनबर्ग जाने के लिये तैयार हो कर आये थे। जिस तरह बच्चे अपने माता-पिता को देखते हैं, यह चीज़ वर्णन करने में मन और विचार असमर्थ हैं। यह तो दिल से दिल को राह बनने की बात है। दस बज कर पांच मिनट पर सब महाराज जी के साथ अन्दर जहाज़ में आ कर अपनी—अपनी सीटों पर बैठ गये। सवा दस बजे जहाज़ चल पड़ा, यह जहाज़ पैन अमरीकन कंपनी का था। इस के अन्दर कोई 100 सीटें थीं। 11 बजकर 5 मिनट पर जहाज़ नूरेनबर्ग पहुँच गया। सब लोग हजूर महाराज जी के साथ उतर कर बाहर आए। बाहर लोग हजूर महाराज जी के दर्शन के लिये आये हुये थे। उन में से कईओं की आंखों से प्रेमांसू की धारा बह रही थी। महाराज जी ने फरमाया, “मुझे आप सब को मिल कर खुशी हुई है।” वहां से एक बड़ी कार में बैठ कर हम ग्रेंड होटल पहुँचे जहां पर ठहरने का इंतज़ाम वहां की संगत ने किया था।

होटल की नीचे की मंज़िल पर एक बड़ा हाल था। वहां पर 4 बजे

तीसरी विश्व यात्रा

से 6 बजे शाम का सवाल—जवाब का प्रोग्राम था। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि मैं नूरेनबर्ग में 1963 में भी आया था। मैं यहां पर श्रीमति और श्री बीम के घर पर ठहरा था। अगर वे यहां पर हों तो मुझ से अभी मिल लें। श्री बीम हजूर महाराज जी के सामने आ कर खड़े हो गये। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि आप को देख कर मुझे बड़ी खुशी हुई है। हजूर महाराज जी अब भी उन के घर पर ठहरते परन्तु अब वे वहां नहीं रहते।

इस के बाद सवाल—जवाब हुए। इन में खास कर ब्रह्मचर्य (chastity, पवित्रता) और दिल को दिल से राह बनाने अर्थात् receptivity के बारे में सवाल थे। हजूर महाराज जी ने बड़े प्यार के साथ समझाया कि जो शादी—शुदा नहीं हैं उन्हें पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। जिन की शादी हो चुकी है, उन को शास्त्र—मर्यादा अनुसार जीवन बनाना चाहिए। शादी कोई विषय—विकार (enjoyment) की मशीन नहीं हैं। शास्त्र क्या कहते हैं? जब बच्चा पेट के अन्दर आ जाए और जब तक दूध पीता रहे, कोई ताल्लुक नहीं होना चाहिए। अगर ऐसे 2–3 बच्चे हो भी जायें तो “एका नारी सदा जती।” ब्रह्मचर्य की महत्ता पर पूरा—पूरा ज़ोर दिया गया है।

बाकी दिल से दिल की राह बनाने के लिये receptive होना ज़रूरी है। इस के लिये सत्गुरु की आज्ञा का पालन किया जाये। सत्गुरु क्या कहता है? नेक पाक जीवन बनाओ, यह मनुष्य जन्म हम को भाग्य से मिला है, इस में हम अपना लेना—देना खुशी—खुशी चुकायें और भजन—सिमरण करके सत्गुरु की दया से अपने निज घर पहुंच जायें। अगर सिख गुरु को याद करता है तो गुरु सिख को याद करता है:

ज्ञानी जी का चौथा पत्र

सत्गुरु सिख को जिया नाल सम्हारे ॥

सिख अगर समुद्र के दूसरे किनारे पर हो और गुरु इस किनारे, तो कबीर साहब कहते हैं, “दीनी सुरत पठाय।” उधर मुँह करो, रेडिएशन से मदद मिलेगी। “जिस का चिन्तन करोगे उस का रूप तुम बनोगे।” दिल से दिल को राह बनाने के लिये शुरुआत आज्ञा पालन से होती है। कदम दर कदम सिख उस हालत को प्राप्त कर लेता है। “दो ते एक रूप होय गयो,” यह आखिरी मंजिल है।

फिर कुछ और मिलने वाले लोग थे। उन के साथ महाराज जी ने बातचीत की। जो जो भी उनकी मुश्किलें थीं (निजी घरेलू मामले थे) उन का हल बताया। छह बजे सत्संग समाप्त हुआ और महाराज जी अपने कमरे में वापस आ गये। वर्नर डैक्सलर के माता पिता हजूर महाराज के दर्शन करने आये। हजूर महाराज जी ने उन को प्रसाद दिया और भारत आने का निमंत्रण दिया। वे दोनों बड़े खुश हुए। आशा है कि महाराज जी की वापसी के बाद वे लोग यहाँ आएंगे।

रात को फिर 8.30 बजे से 10 बजे तक सत्संग था। यहां पर दूसरी जगह से ज्यादा लोग सत्संग में आये। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि मनुष्य योनि में ही हम प्रभु से मिल सकते हैं, दूसरी अन्य योनियों में नहीं। देवी—देवता भी प्रभु को मिल नहीं सकते, उन को भी प्रभु—प्राप्ति के लिए मनुष्य जन्म धारण कर के नाम जपना पड़ता है, तब उन्हें प्रभु की प्राप्ति हो सकती है। हमारे बड़े ऊँचे भाग्य हैं कि हमें ऐसा दुर्लभ मानव जन्म मिल चुका है। हमें इसे अब प्रभु प्राप्ति में लगाना है।

दूसरी बात हजूर महाराज जी ने सत्संग में यह कही कि कोई भी एक दिन में M.A. पास नहीं कर सकता। Rome was not built in a day, अर्थात् रोम का शहर एक दिन में नहीं बना था। Time

तीसरी विश्व यात्रा

Factor, समय हर एक चीज़ के बनने के लिये ज़रूरी है। हजूर महाराज जी ने गूंगे पहलवान का उदाहरण दिया। गूंगा पहलवान रातें जाग—जाग कर कसरत करता था। हजूर महाराज जी ने बताया कि मैं रात को लाहौर शहर में रावी नदी के किनारे पर जाग कर बिताता था। वह पहलवान भी जागता था। पहलवान कसरत करता तो मैं मालिक की याद में रात गुज़ारता। जब कोई बन रहा होता है (preparatory stage), उस को कोई नहीं देखता। जब वह बन जाता है तो सब की नज़र उस की तरफ बरबस चली जाती है।

31 अगस्तः सवेरे 9 बजे हजूर महाराज जी लोगों को भजन पर बिठाने के लिये नीचे हाल में गये। 248 पुरुष और महिलायें थीं। उन में नये और पुराने सत्संगी शामिल थे। सब को महाराज जी ने भजन पर बैठने का तरीका समझाया। फिर सब को भजन पर बिठा दिया। हजूर महाराज की दया से सब को रोशनी, तारे, आसमान, चांद, सूरज, गुरु स्वरूप आदि नज़र आये। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि मुझ को मेरे सत्गुरु ने फजूल—खर्च समझ कर यह रुहानियत की दौलत बांटने के लिए दी है जिस से हर खास व आम को फैज़ (परमार्थ लाभ) मिल रहा है। 11 बजे के करीब हजूर महाराज जी ऊपर कमरे में वापस आए। शाम को 4 बजे से 6 बजे तक फिर सवाल—जवाब का प्रोग्राम था। कुछ सवाल नीचे दिए जाते हैं।

सवाल : दीक्षा लेते वक्त किस चीज़ की ज़रूरत है, किस—किस तरह उसे कायम रखें और बढ़ायें? कौन सी चीज़ इस के लिए मददगार और कौन सी रुकावट डालती है? हजूर महाराज जी ने इस बारे में खोल—खोल कर समझाया और 6 बजे वापस अपने कमरे में आये। रात 8 बजे हजूर महाराज ने एक बड़े हाल में जिस का नाम मिस्टर सिंगर हाल

ज्ञानी जी का चौथा पत्र

है, सत्संग किया। यह हाल बड़ा सुन्दर बना हुआ है। स्टेज भी काफी बड़ी है। इस में 1200 कुर्सियां फर्श पर आती हैं। ऊपर की गैलरी में भी बहुत से लोग कुर्सियों पर बैठे हुए थे। जर्मनी के बाकी शहरों से यहां सत्संग सुनने वाले भाई—बहन ज्यादा थे। सत्संग में हजूर महाराज जी ने फरमाया कि यह सब से बड़ा सत्य है कि इंसान इंसान सब एक हैं, सब शरीर रखते हैं। हमने यह शरीर धारण किया है और हम सब आत्मा हैं। शरीर कर के और आत्मा कर के हम सब एक हैं। इस शरीर के अन्दर ही हम परमात्मा को पहचान सकते हैं। संसार के काम और अपना लेना—देना खत्म करने के लिये जो संबंध बने हैं उन को खुशी—खुशी पूरा करो। मगर अब आप अगर चाहो तो अपनी लाईन को बदल सकते हो। रेलवे लाईन जो एक दफा पड़ गई फिर गाड़ी ने उस पर ही चलना है। प्रारब्ध कर्मों कर के जो कर्म हम ने किये थे वे अब हम भोग रहे हैं। तो अब जिस तरफ हम लाईन डालना चाहें, डाल सकते हैं और अपने को बदल सकते हैं।

दूसरी बात हजूर महाराज जी ने यह कही, “यह शरीर व दुनिया हमेशा रहने वाले नहीं हैं, एक दिन छोड़ जाने हैं। छोड़ कर कहां जाना है, इस बात को हम इस मनुष्य जन्म में हल कर सकते हैं मगर किन की संगत में? जिन्होंने इस मसले को हल किया हुआ है। जिन्होंने प्रभु को देखा है वे ही हम को दिखा सकते हैं।” 9.30 बजे सत्संग समाप्त हुआ। हजूर महाराज जी कार में बैठ कर वापस अपने कमरे में होटल में पहुंच गये। यह हाल आप को नूरेनबर्ग का लिखा है। सवेरे महाराज जी स्टुटगार्ट जायेंगे, वहां के हालात फिर लिखे जायेंगे।

दास

ज्ञानी भगवान सिंह

13. ज्ञानी जी का पांचवां पत्र

माननीय ताई जी,
सप्रेम चरण वन्दना ।

यह चिट्ठी आप को स्टुटगार्ट पहुंच कर लिखी जा रही है। नूरेनबर्ग के होटल से सुबह—सवेरे हजूर पैदल ही स्टेशन चल पड़े जो बिल्कुल पास ही है। बहुत—से दूसरे बहन—भाई भी, जिन में वे लोग भी थे जिन्हें हमारे साथ स्टुटगार्ट जाना है, हजूर के साथ चल रहे थे। रास्ते में कैमरा और मूवी से बहुत—सी तसवीरें उतारी गईं। गाड़ी में चढ़ कर हजूर महाराज जी ने हाथ जोड़ कर सब बहन—भाइयों से, जो उन्हें स्टेशन छोड़ने आए थे, विदा ली। तीस—पैंतीस लोग नूरनबर्ग से स्टुटगार्ट के लिए साथ चले। 9 बज कर 27 मिनट पर गाड़ी चली। तेज़ रफ्तार के बावजूद गाड़ी इस तरह चल रही थी कि बैठने वालों को यही महसूस होता था जैसे वे अपने कमरे में बैठे हों।

जर्मनी के लोग बड़े मेहनती और तन्द्रुस्त हैं। शहरों की बनावट well planned है। कोई ऐसी खाली जगह नहीं जहां घास या फूल न हों और साथ ही खेत और बाग—बागीचे नज़र को लुभाते हैं। धूल का कहीं निशान तक नहीं। गाड़ी में बैठे हुए बातें चल पड़ीं। हजूर महाराज जी ने मिसिज़ फिटिंग से कहा कि पिछली दो यात्राओं में मैं म्यूनिक और नूरनबर्ग आया था, स्टुटगार्ट मैं पहली बार जा रहा हूँ। अब भी मेरी सेहत ठीक नहीं थी लेकिन आप लोगों का प्यार मुझे यहां खींच लाया है। हजूर महाराज जी ने अपने मिशन का संकेत दृष्टान्त रूप में पेश करते हुए फरमाया, “भक्त जब भगवान के पास पहुंचा तो कहने लगा, हे भगवान, तू

ज्ञानी जी का पांचवा पत्र
समुद्र है और मैं एक कतरा (बूँद)। अगर मैं तुझे में मिल भी गया और जैसे
गुरबाणी में आया है, “ज्यूं जल में जल आए खटाना, त्यूं ज्योति संग ज्योति
मिलाना”, अर्थात् अगर मेरी ज्योति तेरी महान् ज्योति में मिल गई तो तुझे
कोई फर्क नहीं पड़ेगा। इस से अच्छा यही होगा कि तू मुझे ताकत दे, बुद्धि
दे जिस से मैं तेरे बंदों की सेवा कर सकूँ।”

हजूर महाराज जी ने फरमाया कि बहुत कम ऐसे पूर्ण पुरुष हुए हैं
जिन्होंने इतनी यात्राएं की हैं। गुरु नानक साहब ने चार उदासियां धारण
कीं और चारों दिशाओं में पैदल गए। मेरी यह तीसरी विदेशी यात्रा है।
भारत में मैंने हिमालय के पर्वतों की यात्रा की और पंजाब, उत्तर प्रदेश,
राजस्थान, मध्य प्रदेश, कलकत्ता, पूना, सितारा, बिहार, सभी जगह गया
हूँ। मालिक ने चाहा तो एक और विदेश यात्रा होगी।

हजूर महाराज जी की सीट के सामने गाड़ी में आने-जाने का
रास्ता था। वहां कई लोग हजूर महाराज जी के दर्शनों के लिए खड़े हो
गए। कड़यों ने फोटो और मूवी से तसवीरें भी लीं। हजूर महाराज जी ने
हंस कर कहा, “आप लोगों ने सीट पर बैठने के लिये पैसे दे रखे हैं, फिर
बाहर क्यों खड़े हो?” फिर फरमाया, “हम लोग यहां बन्द कमरे में कैद हैं
और ये लोग बाहर खड़े हमें देख रहे हैं।” हजूर महाराज जी ने
हंसते-हंसते एक चुटकला सुनाया कि एक आदमी ने थर्ड क्लास का
टिकट खरीदा। गाड़ी में रश होने के कारण जब उसे वहां सीट न मिली
तो वह फर्स्ट क्लास के डिब्बे में जा कर नीचे फर्श पर बैठ गया। थोड़ी देर
में टिकट चैकर आया तो उस ने थर्ड क्लास का टिकट दिखा दिया। वह
कहने लगा कि यह तो थर्ड क्लास का टिकट है और तू फर्स्ट क्लास में
बैठा है। उसने जवाब दिया कि मैं भी तो सीट पर नहीं बैठा, नीचे फर्श पर
बैठा हुआ हूँ। इस के बाद बाहर खड़े लोगों से हजूर ने कहा, “आप लोग

तीसरी विश्व यात्रा
भी बाहर खड़े हैं। आप अपनी टिकटों के पैसे वापस लेने के लिए क्लेम
कर सकते हैं क्योंकि आप सीटों पर नहीं बैठे।”

इस तरह बातों में सफर कट गया और बारह बजे के करीब हम स्टुटगार्ट पहुंचे। वहां कई बहन—भाई हजूर महाराज जी के दर्शन के लिए आए हुए थे। गाड़ी से उतरते ही बड़े प्यार से हजूर हरेक से मिले। आस-पास खड़े लोग भी हजूर के नूरानी स्वरूप को देख कर खिंचे चले आए। लोग हैरान हो कर देख रहे थे कि सफेद पगड़ी और सलवार पहने यह नूरानी मुखड़े वाला इंसान कौन है जिस के पीछे इतने लोग जा रहे हैं। वे एक—दूसरे से पूछते थे कि यह कौन हस्ती है। स्टेशन से बाहर आ कर हजूर एक बड़ी कार में बैठ कर पार्क होटल पहुंचे, जहां उन के ठहरने की व्यवस्था की गई थी। यहां जिस कमरे में हजूर के ठहरने का प्रबन्ध किया गया है वहां मिनिस्टर और प्रेजीडेंट आ कर ठहरते हैं।

शाम के चार बजे से छह बजे तक हजूर महाराज जी ने सत्संग किया जिस में कहा कि हम सब उस मालिक के बच्चे हैं लेकिन इस संसार में आ कर मन—इन्द्रियों के गुलाम बन गये हैं और अपनी असलियत को भूल गये हैं। मनुष्य जन्म जो हमें मिला है, इस भूल से निकलने का मौका है। पूर्ण पुरुष मालिक के भेजे हुए दुनिया में आते हैं प्रभु के बच्चों को भूल से निकालने के लिए। वे देखते हैं कि ये सब दुखी हैं। कब से और क्यों हैं, वे आ कर बताते हैं:

“सुरत तू दुखी रहे हम जानी।

जा दिन ते तें शब्द विसारा मन संग यारी ठानी।”

वे लोगों को बताते हैं कि जब से तुम मन—इन्द्रियों के अधीन हो कर मालिक से दूर हुए, तभी से तुम दुखी हो और सुखी तुम तभी हो

ज्ञानी जी का पांचवा पत्र
सकोगे जब मन-इन्द्रियों से आज़ाद हो कर वापस मालिक की गोद में
पहुंचो। वह परमात्मा अपने बच्चों को दुखी देख कर पूर्ण पुरुषों को संसार
में भेजता है। जीवन में किसी पूर्ण पुरुष, संत सत्गुरु का मिलना नसीब हो
जाए तो समझो कि परमात्मा ने आप को वापस बुलाने के लिए उस को
भेजा है। आप को चाहिये कि आप उस के साथ चल पड़ो। वह तुम्हें
मालिक तक पहुंचा देगा।

दुनिया में तुम से कोई सच्चा प्यार करने वाला है तो वह केवल
सत्गुरु है, उस का प्रेम बिना किसी ग़र्ज़ के है। दुनिया का प्यार, सत्कार,
तभी तक है जब तक तुम्हारे पास पैसा, गुण या ओहदा है या जब तक
आप का शरीर है, उस के बाद नहीं, मगर सत्गुरु का प्यार शरीर छोड़ने के
बाद भी रहता है। सत्गुरु की नज़र मालिक की नज़र होती है। वह इस
लिये हम से प्यार करता है कि प्रभु के बच्चे वापस उस परम पिता के पास
पहुंच जाएं। वह आप को सुखी देखना चाहता है। उस ने परमात्मा के
महान सुख को, उस महारस को अन्तर में पाया है जिस को पाकर दुनिया
के सारे रस फीके पड़ जाते हैं और वह उस की नकद पूँजी आप को देता
है, खाली बातें ही नहीं करता। सत्गुरु आप को कभी यह नहीं कहता कि
घरबार छोड़ जंगलों में चले जाओ। वह कहता है, “किश्ती पानी में रहे
मगर पानी किश्ती में न आए। रहो दुनिया में मगर दुनिया तुम्हारे अन्तर में
न बसे। त्याग का मतलब यह नहीं है कि घरबार छोड़ जंगलों में चले
जाओ। सच्चा त्याग यह है कि दुनिया में रहते हुए दुनिया के संबंधों से
आज़ाद रहो, उन में फ़ंसो नहीं।”

अब सवाल पैदा होता है कि मालिक से प्यार कैसे बने? प्यार ऐसी
चीज़ नहीं जो खेतों में उगता हो या बाज़ार में बिकता हो। प्यार का स्रोत
सन्तजन है:

तीसरी विश्व यात्रा

“सुभर भरे प्रेम रस रंग ॥ उपजे चाओ साध के संग ॥

पूर्ण पुरुषों की Radiation (उनके नूरानी शरीर से प्रसारित होने वाली रुहानयित की किरणों) से प्रेम का खमीर (जाग) मिलता है। जो भी पूर्ण पुरुष आज दिन तक दुनिया में आए या आगे आएंगे, वे सभी प्रभु प्रेम के पुतले हैं, उन में प्रभु प्रेम मूर्तिमान है। प्यार ही प्यार वे हर तरफ बिखेरते चले जाते हैं। सहज ही प्रेम का अंश उन की संगति में मिल जाता है। जलती आग से आग जला लेना आसान है, खुद रगड़ कर चिंगारी निकालना कठिन है। चिंगारी निकले भी तो वह बुझ जाती है। जिस के अन्तर में प्रभु-प्रेम और विश्व-प्रेम ठाठें मार रहा है, उस की सोहबत-संगति में हमें भी प्रेम की पूँजी अनायास ही मिल जाती है जिस से हमेशा के सुख का सामान बन जाता है। इस लिए प्रेम पैदा करने की पहली सीढ़ी है सत्गुरु की मीठी रस भरी याद जो लगातार बनी रहे। याद से विरह-विहवलता, सोज़—गुदाज़ अपने आप बनते हैं। जब विरह की ज्वाला अन्तर में भड़क उठे तो समझो प्रभु प्रीतम से मिलाप का वक्त आ गया। यह गति दर्जे—बदर्जे प्राप्त होती है।

जितने भी हम यहां बैठे हैं, हम सभी उस मालिक के बच्चे हैं। हमारा आपस में बहन—भाई और भाई—भाई का सच्चा रिश्ता है जो कभी टूटने वाला नहीं:

“सच्चा साक न तुट्टर्इ गुर मेले सइयां ।”

गुरु हमें सच्चे प्रेम के ऐसे रिश्ते में जोड़ता है जो कभी नहीं टूटता। वह जगह धन्य है जहां ऐसे पुरुषों के चरण पड़े। सत्संग के बाद हजूर वापस अपने कमरे में आ गये। फिर रात साढ़े आठ बजे हजूर परमार्थाभिलाषियों को भजन बिठाने के लिये नीचे हाल में तशरीफ ले

ज्ञानी जी का पांचवा पत्र
गये। 175 नर—नारी भजन पर बैठे और हरेक को अन्तर ज्योति आदि का
अनुभव हजूर महाराज जी की दया—मेहर से हुआ।

2 सितम्बर: सुबह सवेरे हजूर महाराज जी ने लोगों को भजन बिठाया और एक अलेहदा कमरे में 19 परमार्थाभिलाषी नर—नारियों को नामदान दिया। इस यात्रा में यह पहला मौका है कि हजूर ने लोगों को नामदान दिया। नाम देकर सवा बारह बजे हजूर वापस अपने कमरे में आए। दोपहर तीन बजे जर्मनी में सत्संग का काम करने वाले ग्रुप लीडरों की मीटिंग थी जिस में कुल मिला कर 19 ग्रुप लीडर शामिल हुए। हजूर महाराज जी ने उन्हें जर्मनी में सत्संग के काम को बढ़ाने के लिये ज़रूरी हिदायतें दी। हजूर महाराज जी ने कहा कि आप सभी लोग पहले सन्त मत की Theory (सिद्धान्त) को खूब अच्छी तरह समझ लो ताकि दूसरों को समझा सको जिस से उन को विश्वास हो जाए कि सन्त मत ही एक ऐसा रास्ता है जिस पर चल कर हम अपने लक्ष्य अर्थात् प्रभु को प्राप्त कर सकते हैं। इस विषय में आप से जो सवाल किये जाएं उन का आप जवाब भी दे सकें। आप सब के लिये मेरे मन में आदर और प्यार है— जो बड़े हैं, जो अपने जैसे हैं या जो उम्र में छोटे हैं, सभी के लिये मेरे मन में प्यार है। आप को भी चाहिये कि आप से जो बड़े हैं, आप जैसे या आप से छोटे हैं सब का आदर और सब से प्यार करो ताकि सब मिल कर सत्गुरु की तालीम को लोगों के सामने रख सको। मेरी हार्दिक इच्छा है कि आप तन करके, मन—बुद्धि कर के और आत्मा कर के उन्नति करो। मेरी शुभ भावना आप के साथ है। बाकी मालिक दया करेगा। मीटिंग के बाद हजूर महाराज ने जर्मनी के ग्रुप लीडरों के साथ बैठ कर फोटो खिंचवाई। बाद में कई लोग हजूर महाराज से मिलने आए।

रात साढ़े सात से नौ बजे तक इगुस्टन सीगल हाल में सत्संग

तीसरी विश्व यात्रा

हुआ जिस में हजूर महाराज जी ने कहा कि हम सब प्रभु के बच्चे हैं और कभी हम उस की गोद में थे। जब से हम अपने निज घर से बिछुड़ कर दुनिया में आए, हम मन इन्द्रियों के साथ लग कर उन का रूप हो गए। इतना हम इन से Identify (लम्पट) हो गए कि अपने आप को भी भूल गए कि हम कौन हैं, परमात्मा से हमारा क्या सम्बन्ध है? पूर्ण पुरुष कोई नया मज़हब (धर्म) नहीं बनाते। उन का मज़हब केवल प्यार का है। वे प्रभु प्रेम का स्रोत हैं दुनिया में और लोगों के अन्दर प्रभु का प्यार पैदा करते हैं। प्रभु से बिछुड़े बच्चों को वे प्रभु से मिलाने के लिए दुनिया में आते हैं। मज़हब इंसान के लिए बना है, इंसान मज़हब के लिए नहीं बना। मज़हब (धर्म) इस लिए बने कि इंसान तन करके, मन करके, बुद्धि करके और आत्मा करके उन्नति करे और पूर्ण मानव बने। मगर हम मज़हब के बाहरी रस्मों—रिवाजों और शकलों—बनावटों में इतना जकड़ कर रह गए कि जो चीज़ इंसान को बन्धन से आज़ाद कराने के लिए बनी थी वही उस के लिए हाथों की हथकड़ी और पांव की जंजीर बन कर रह गई है।

इस अधोगति से जीवों को निकालने के लिए वह परम पिता परमात्मा अपने ख़ास बन्दों अर्थात् सन्तों को समय—समय पर दुनिया में भेजता है। दो तरह के अवतार दुनिया में आते हैं। एक वे हैं जो अधर्मियों को दण्ड देने, धर्मियों अर्थात् धर्मप्रायण लोगों को उबारने और दुनिया की स्थिति को बनाये रखने के लिए संसार में आते हैं। राम, कृष्ण आदि अवतार इस श्रेणी में आते हैं। एक वे अवतार दुनिया में आते हैं जिन को सन्त सत्गुरु कहते हैं। वे लोगों को मन—इन्द्रियों की कैद से निकाल कर प्रभु से जोड़ते हैं, उन्हें वापस प्रभु के धाम अर्थात् निज घर जाने का रास्ता देते हैं। उन के पास जो लोग जाते हैं, उन से वे यही कहते हैं कि यह रास्ता है आवागमन से निकलने का। मनुष्य जन्म का अमूल्य समय जो

ज्ञानी जी का पांचवा पत्र
तुम्हें मिला है, यह वक्त है निकलने का, निकल जाओ। दोनों के काम में
बड़ा फर्क होता है। अवतार दुनिया की स्थिति को कायम रखने के लिए
आते हैं ताकि दुनिया बनी रहे। सन्त दुनिया को गैर-आबाद करने
(उजाड़ने) के लिए आते हैं।

हजूर महाराज जी ने फरमाया कि आम दुनियादार इंसान और
भक्तजन में, जो सन्तों की तालीम पर चल रहा है, क्या फर्क है।
दुनियादार इंसान के मन में दुनिया बसी पड़ी है, सुबह-शाम दुनिया के
काम-काज, यह वह, मन में वही ख्यालात चक्कर काटते हैं। भक्तजन जो
नाम की कमाई करने वाला है, वह दुनिया में रहते हुए, दुनिया के
काम-काज करते हुए भी दुनिया के असर को कबूल नहीं करता जैसे
मुरगाबी पानी में रहते हुए भी पानी का असर नहीं लेती, जब चाहे सूखे
परों से उड़ जाती है। बाकी जो धर्मग्रन्थ हैं वे रेलवे के टाइम टेबल का
काम देते हैं। इन में महापुरुषों के व्यक्तिगत अनुभवों का वर्णन है जिन्होंने
अपने अन्तर को खोजा और प्रभु को पाया है। इन में एक चीज़ का केवल
वर्णन है, वह चीज़ तो नहीं, रास्ते का हाल है, रास्ता नहीं। अन्तर जाने के
लिए किसी संत सत्गुरु की शरण में जाना होगा। वह आप को पूर्ण युक्ति
देगा अन्तर जाने की। उसकी रोज़—रोज़ कमाई करने से आप उन चीज़ों
को अंतर में देखने वाले बन जाओगे जिन का धर्मग्रन्थों में सिर्फ़ ज़िक्र है।
इस लिये किसी ऐसे अनुभवी पुरुष, सन्त सत्गुरु की तलाश करो जिस के
मिलने से तुम मालिक की गोद में पहुंच जाओगे।

सत्संग प्रवचन नौ बजे खत्म हुआ। तभी ब्राज़ील (दक्षिण
अमरीका) का एक आदमी हजूर महाराज से मिलने आया। उस ने इशु
मसीह और अन्य महात्माओं की कुछ ख्याली तसवीरें बनाई हुई थीं जो
महाराज जी को दिखाई। हजूर महाराज जी ने फरमाया, “यह क्राइस्ट

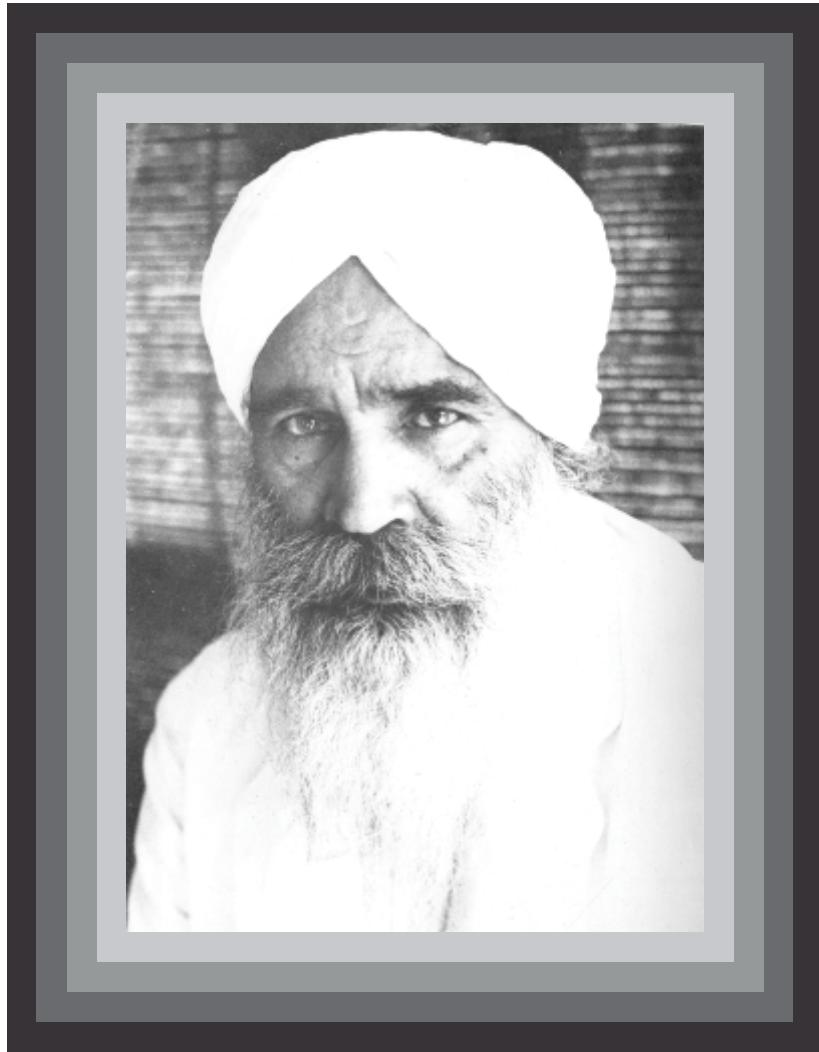
तीसरी विश्व यात्रा

(इशु मसीह) की तस्वीर नहीं जो तूने बनाई है।" उस व्यक्ति ने यह भी बताया कि उसने Flying Saucers (रहस्यमय उड़न तश्तरियाँ) और उन के अन्दर में बैठे छोटे जीव देखे हैं जो उस के विचार में फिरश्ते (देवदूत) थे। हजूर महाराज जी ने उस को बताया कि मैंने भी वे देखे हैं और दिल्ली में उनके पीछे हवाई जहाज़ भी छोड़ा गया था पर वे हाथ नहीं आए। उन की रफ़तार बहुत तेज़ थी। एक और आदमी हजूर महाराज जी से मिला जिस ने प्राचीन सुमेरियन ग्रन्थों (Sumarian Texts) से उद्धरण प्रस्तुत किये जिन में क्राइस्ट के जन्म से एक हज़ार पहले उस के आने की भविष्यवाणी की गई थी। पुस्तक की एक प्रति उसने हजूर महाराज जी को भेंट की। कल वह मूल ग्रन्थ भी दिखाने लाएगा जिस में से ये उद्धरण लिए गए हैं। कल सवेरे हजूर महाराज जी ज्यूरिच जा रहे हैं। वहां के हालात अगली चिट्ठी में लिखे जायेंगे।

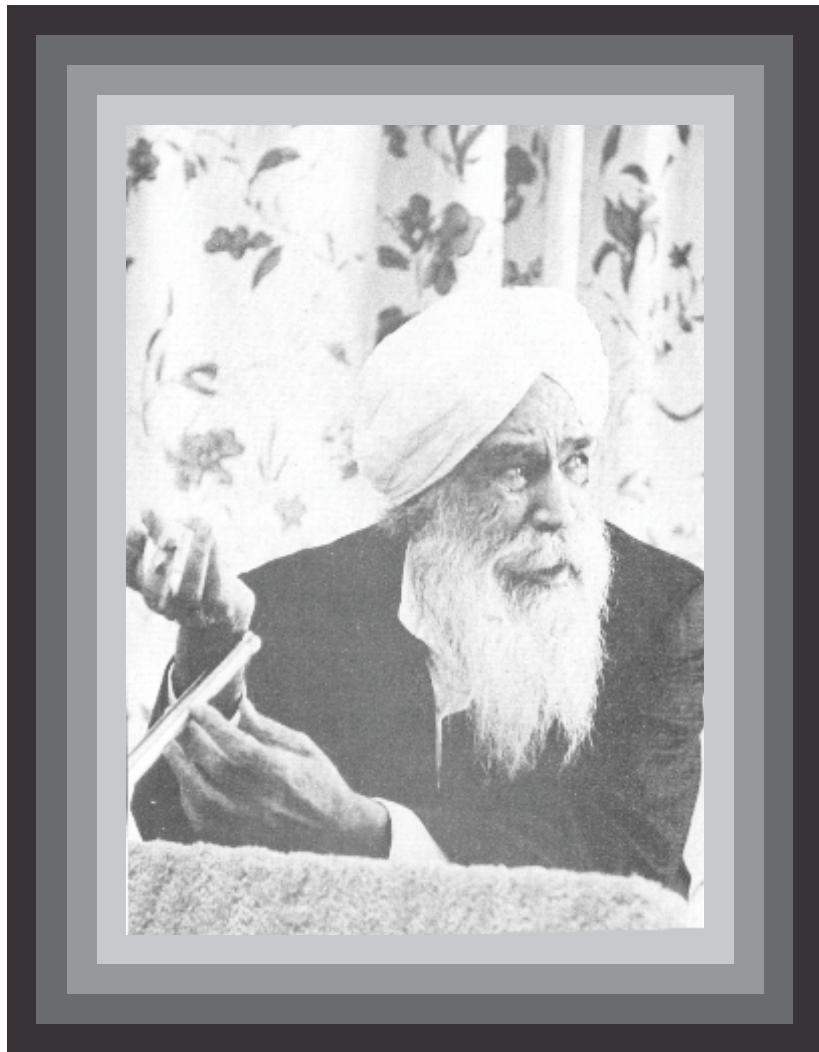
अदब और प्यार सहित हजूर की सेवा में,

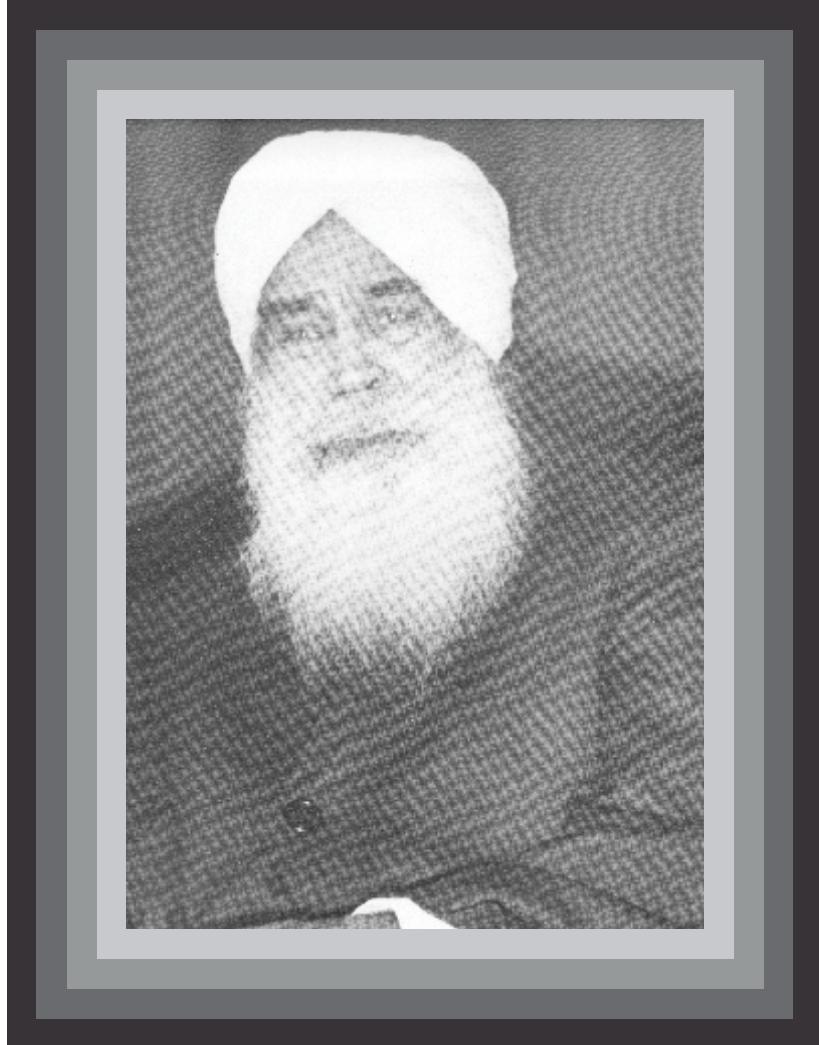
दास

ज्ञानी भगवान सिंह

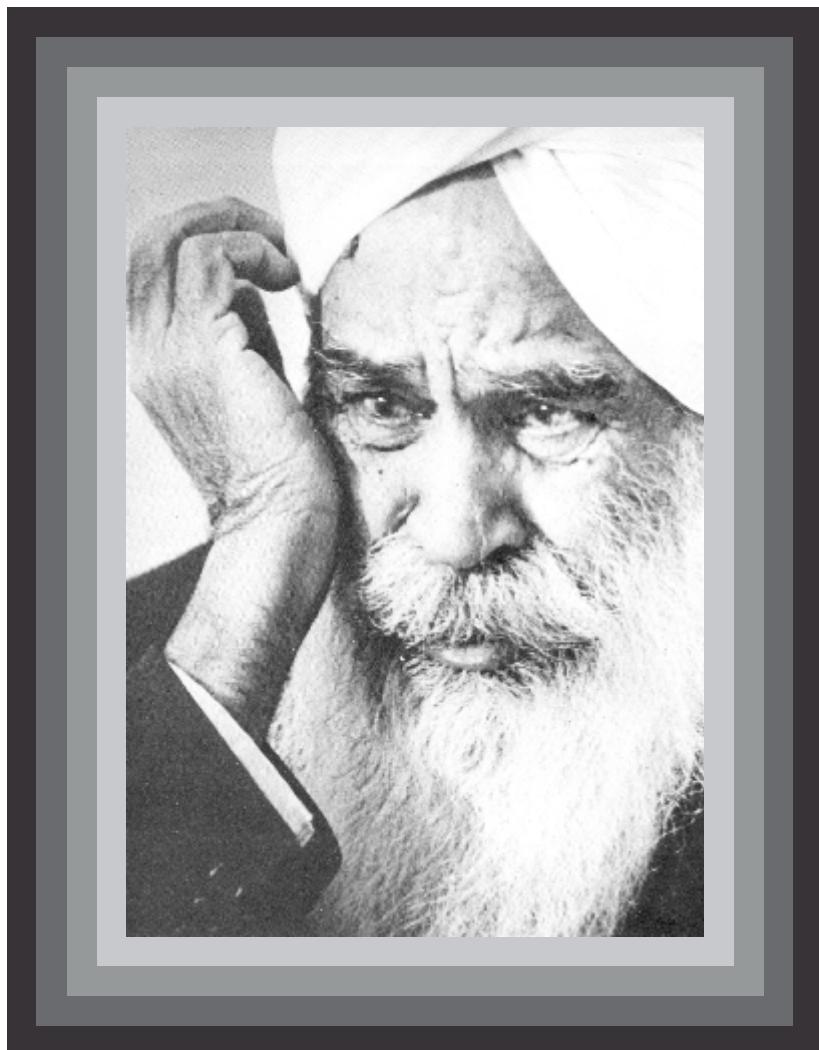


V





In Zurich, Switzerland, during Third World Tour



In Zurich, Switzerland, during Third World Tour

14. हजूर महाराज का टैलीफोन

आश्रमवासियों से घंटा भर बातचीत

12 सितंबरः सुबह—सवेरे लंदन से हजूर महाराज जी का टेलीफोन सावन आश्रम में ज्ञानी जी के घर पर आया। आश्रम में महाराज जी के निवास स्थान और चड्ढा जी के टेलीफोन खराब थे, इस लिए वहां से ज्ञानी जी के घर का नम्बर मिलाया गया। हजूर महाराज जी के दिल में अपने बच्चों का कितना प्यार है उस का सबूत यह है कि पूरा एक घण्टा हजूर महाराज जी ने टेलीफोन पर ताई जी और अन्य दूसरे आश्रमवासियों से बातें कीं। बीच में ज्ञानी जी ने भी अपने घरवालों से बातें कीं। हजूर महाराज ने एक—एक आश्रमवासी और दूसरे अपने बच्चों के बारे में पूछा और सत्संग की व्यवस्था के बारे में सवाल किए और प्रबन्धकों को आवश्यक आदेश दिये। अपनी सेहत के बारे में हजूर महाराज ने बताया कि बीच में तबियत कुछ खराब रही पर अब बिल्कुल ठीक है। हजूर महाराज जी का टेलीफोन आने पर जो सेवादार वहां उपस्थित थे उन सब ने बारी—बारी उन से बातें कीं और सत्गुरु दयाल की अमृत वाणी सुन कर अपने मन की प्यास बुझाई। हजूर महाराज के टेलीफोन सन्देश का वह अंश जो सत्संगीजनों और सत्संग से संबंध रखता है उस का व्यौरा अगली चिट्ठी में प्रस्तुत किया जाएगा।

15. ज्ञानी जी का छठा पत्र

ज्यूरिच
6 सितंबर, 1972

माननीय ताई जी,
सप्रेम चरण वंदना ।

स्टुटगार्ट से लिखी चिट्ठी मिल गई होगी। अब ज्यूरिच (स्विटरज़लैंड) के प्रोग्राम का हाल लिखता हूँ।

स्टुटगार्ट पार्क होटल के बाहर सुबह सवा नौ बजे हजूर महाराज जी ने वहां खड़े दर्शनाभिलाषियों से हाथ जोड़ कर विदा ली। आगे हवाई अड्डे पर दर्शनाभिलाषियों की भीड़ खड़ी थी जिन में कई लोग हजूर महाराज जी के साथ ज्यूरिच जाने के लिए तैयार हो कर आए थे। 10 बजे सभी लोग 94 सीटों वाले स्विस एयर के हवाई जहाज में बैठ गए। जहाज सवा दस बजे चला और आधे घंटे में ज्यूरिच पहुंच गया। जहाज बादलों से ऊपर उड़ रहा था लेकिन रास्ते में जब कोई बड़ा शहर आता तो वह बादलों से नीचे उतर आता जिस से यात्रियों को शहर की शोभा देखने को मिल जाती थी। ज्यूरिच में टैक्सी से हम एक बड़े होटल में पहुंचे जहां हजूर महाराज जी के ठहरने की व्यवस्था की गई थी। इस होटल में एक हजार आदमियों के ठहरने का प्रबन्ध है। इस शहर में जहां हजूर पहली बार आए हैं, बहुत थोड़े सत्संगी हैं लेकिन और भी बहुत लोगों ने हजूर महाराज जी के दर्शन और सत्संग प्रवचन सुनने की इच्छा प्रकट की थी, इस लिए मिसिज़ फिटिंग ने हजूर का प्रोग्राम वहां रखा था।

शाम चार से छह बजे तक हजूर महाराज जी ने होटल के बड़े हाल में जीवन रहस्य के विषय पर सत्संग किया जिस में बताया कि मनुष्य

ज्ञानी जी का छठा पत्र

योनी सब योनियों में श्रेष्ठ है, इस में मालिक स्वयं निवास करता है लेकिन हम बाहर भटक रहे हैं। जब तक हम अन्तर्मुख नहीं होते, हम उस मालिक को, जो हमारे अन्तर में बैठा है, देख नहीं सकते। परमात्मा को देखने के बारे में दो तरह के व्यान (कथन) सारे धर्मग्रन्थों में मिलते हैं। एक यह आज तक किसी ने प्रभु को नहीं देखा। **Nobody has seen God at any time.** दूसरा व्यान यह है कि हाँ हम ने प्रभु को देखा है। ये दोनों व्यान सही हैं। **God absolute** जो है, जो इज़्हार में नहीं आया उस को तो न किसी ने देखा, न देख सकता है। वह तो लय होने का मुकाम है। जब वह हस्ती में आया तो दो सूरतें बनीं, ज्योति और नाद, **God into expression Power** अर्थात् करन—कारण प्रभु सत्ता की, जो सब सृष्टि के पैदा करने वाली, प्रतिपालक और जीवनाधार है, जिन्हें हम देख भी सकते हैं, सुन भी सकते हैं।

अपने जीवन का दृष्टान्त प्रस्तुत करते हुए हजूर महाराज जी ने कहा, ‘‘सन् 1912 की बात है, मुझे एक जवान औरत को देखने का संयोग हुआ, जो मर रही थी। उस ने अपने पति और बच्चों को बुलाया, उन से बातें कीं, फिर कहने लगी कि अब मैं जा रही हूँ और देखते—देखते उस ने प्राण त्याग दिये। मैं हैरान कि अभी—अभी यह जीती जागती बातें कर रही थी। वह कौन सी चीज़ है जो इस में से निकल गई और हम में अभी मौजूद है? वह क्या चीज़ है जो इस शरीर को चला रही है और जब इस में से निकल जाती है तो यह शरीर मिट्टी का ढेर रह जाता है? और इस शरीर से निकल कर वह कहां गई है? मेरे पास इन सवालों का कोई जवाब नहीं था। पुरबले संस्कारों के सबब से अन्तर्यामता मुझे प्राप्त थी। दीवार के पीछे क्या हो रहा है, दूर बम्बई, कलकत्ता वगैरा में क्या हो रहा है, मुझे पता चल जाता था मगर ज़िन्दगी के रहस्य को मैं हल नहीं कर

तीसरी विश्व यात्रा

सका था। श्मशान पहुंचे तो देखा कि जिस चिता पर उस जवान औरत की लाश रखी गई थी उस के साथ ही एक चिता पर एक बूढ़े आदमी की लाश रखी गई। देख कर ख्याल आया कि मौत बुढ़ापे और जवान में कोई भेद नहीं रखती। कर्मों का हिसाब खत्म हो तो सब को जाना पड़ता है। वहां पास ही मुंशी गुलाब सिंह की समाधि बनी हुई थी जिस पर यह इबारत (लेख) लिखी थी, “ऐ जाने वाले, तू किस ज़ोम (घमण्ड) में जा रहा है? हम भी कभी तेरी तरह थे मगर आज मिट्टी का ढेर हुए पड़े हैं।” पढ़ कर दिल की गहरी चोट लगी। रातों की नींद उड़ गई इस रहस्य को हल करने की सोच में। मरता क्या न करता। धर्मग्रन्थों को खोजना शुरू किया कि शायद इस गुत्थी का कोई हल मिले। रोज़ एक किताब लेनी, सुबह से शाम तक पूरी किताब पढ़ डालनी। उस में यह तो लिखा होता था कि अन्तर में ये नज़ारे हैं या यह सुख मिलता है। खाली ज़िक्र था, मिलता कुछ नहीं था। आखिर किताब के अन्तिम पृष्ठ पर यह लिख देना, No way out, कोई रास्ता नहीं निकलने का (बुद्धि-विचार के इस जंजाल से)।

हजूर महाराज जी ने इसी प्रसंग में गौतम बुद्ध की मिसाल दी। वह राजकुमार था। उस के पिता ने शहर को इस तरह सजा रखा था कि गौतम बुद्ध को हर तरफ खुशी ही खुशी, हरियाली ही हरियाली दिखाई दे। उस के मन में ख़्याल तक न आए कि इस दुनिया से परे भी कुछ है। उस के मन में यह खोज पैदा न हो कि ज़िन्दगी का राज़ (रहस्य) क्या है? रथ पर सैर करते समय एक बूढ़े आदमी को देखा जो बुरी तरह लड़खड़ा रहा था, उस से चला भी नहीं जाता था। सारथी से पूछा, “यह क्या है?” वह बोला, “महाराज, यह शरीर बूढ़ा हो जाता है।” मन को चोट लगी, इस सुन्दर शरीर की यह हालत हो जाती है? आगे चले तो एक बीमार

ज्ञानी जी का छठा पत्र
आदमी चारपाई पर पड़ा कराह रहा था। सांस भी मुश्किल से आ रहा था।
सारथी ने बताया कि महाराज इस शरीर को रोग भी लग जाता है। मन
को और चोट लगी कि ऐसे शरीर का क्या लाभ जो हिल भी न सके।
सारथी रथ को शहर से निकाल कर सुनसान वीराने की ओर ले चला
ताकि न ऐसे दृश्य राजकुमार देखे, न ऐसे विचार मन में आएं। तभी देखा
कि चार भाई एक मुर्दे को कंधों पर उठाए लिए जा रहे हैं। पूछा, “यह क्या
है?” सारथी ने कहा, “महाराज, एक दिन सभी को यह शरीर छोड़ना
पड़ता है।” शरीर की यह दुर्गति देख मन को ऐसी चोट लगी कि उसी
रात घर में लड़का पैदा हुआ था परन्तु उस को भी वहीं छोड़ जीवन के
रहस्य को हल करने के लिए जंगलों में चला गया।

तो मेरे मन में तलाश थी। हरेक जगह तलाश किया जहां कहीं
पता चला कोई महात्मा है, वहां मैं गया मगर यह रहस्य हल न हुआ।
आखिर जब मैं अपने सत्गुरु हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के चरणों
में पहुंचा तो उन्होंने इस की Demonstration दी अर्थात् व्यक्तिगत
अनुभव दिया हकीकत का और यह रहस्य तत्काल सुलझ गया। सन्तों की
तालीम जीते जी मरने की है। मर कर तो हर कोई मरता है, मगर मरने से
पहले मरना, जीते जी मरना, उस का अनुभव उन्हीं को मिलता है जिन को
ज़िन्दगी में कोई सन्त सत्गुरु मिले हैं। वह पहले दिन ही बिठा कर पिण्ड
से ऊपर आने अर्थात् जीते जी मरने का तजरबा आप को देता है:

“जिस मरने से जग डरे मेरे मन आनन्द ॥

मरने ही ते पाइये पूर्ण परमानन्द ॥”

दादू साहब कहते हैं:

“दादू पहले मर रहो पाछे मरे सब कोय ॥”

जो नाम की कमाई करते हैं उन को मरने की इतनी खुशी होती है

तीसरी विश्व यात्रा

जितनी अपनी शादी की भी नहीं होती। अन्त समय सत्गुरु सिख को लेने आता है, अन्तर में बड़ा भारी प्रकाश और मधुर ध्वनि होती है जो बयान में नहीं आ सकती।

ज़िन्दगी के राज़ (रहस्य) को हल करना तुम्हारा अपना काम है और यह काम मनुष्य जीवन ही में तुम कर सकते हो। और जो भी काम तुम करते हो, तुम को मुबारिक रहें। वे काम तुम्हारे अपने काम नहीं, यह काम तुम्हारा अपना काम है। और सारे काम तुम ने किये और अपना काम नहीं किया तो जीवन बरबाद चला गया।

“अवर काज तेरे किते न काम ॥

मिल साध संगत भज केवल नाम ॥”

पूर्ण पुरुष की सोहबत—संगति और नाम की कमाई, ये तेरे अपने काम हैं, बाकी सभी काम पराये हैं।

सत्संग के बाद साढ़े पांच बजे हजूर वापस अपने कमरे में आए। वहां हजूर ने बातों—बातों में अपनी पिछली विदेशी यात्राओं के कुछ संस्मरण बताये। एक बार रेल में सफर करते एक mind reader (मन की बात बताने वाला) हजूर को मिला। वह हरेक के मन की बात बता देता था। हजूर से भी उस ने कहा कि आप मन में कुछ सोचो, मैं बता दूंगा। हजूर ने फरमाया, “तुम नहीं बता सकोगे!” वह पीछे पड़ गया। पास बैठे दूसरे लोगों ने ज़ोर दिया। इस पर हजूर असोच अवस्था में हो गये और कहने लगे, “अच्छा बता।” उस ने बड़ा ज़ोर लगाया पर बता न सका। कहने लगा, “आज पहली बार मैं फेल हो रहा हूँ।” इसी तरह रुहों (गुज़र चुके लोगों की प्रेतात्माएं) को बुलाने वाला मिला मगर हजूर की मौजूदगी में उन्हें बुला न सका। हजूर महाराज ने फरमाया कि जहां पूर्ण पुरुष बैठा हो वहां ये चीजें नहीं आ सकतीं। तुम से जो कमज़ोर आदमी हो उसी पर

ज्ञानी जी का छठा पत्र
तुम्हारा असर होगा। जो तुम से ज्यादा strong mind वाला हो उस पर
कोई असर नहीं हो सकता।

स्टुटगार्ट में हज़ार वर्ष पुरानी भविष्यवाणियों के बारे में जिस आदमी ने हजूर महाराज जी को बताया था वह वायदे के मुताबिक भविष्यवाणियों वाला प्राचीन ग्रन्थ हजूर को दिखाने आया। महाराज जी को उस ने बताया कि इस में एक नया शब्द 'नाम' लिखा हुआ है। हजूर महाराज ने उसे बताया कि नाम, शब्द, कलमा, Word सब एक ही चीज़ हैं और नाम का प्रचार अब ही हो रहा है। अन्तर में नाम से लगना अर्थात् ज्योति का प्रकट होना और ध्वनि का सुनाई देना ही नाम है। इस के बाद Yoga Centre (योगाश्रम) का Head (प्रधान) मिलने आया। उस ने हजूर से कहा, "एक हज़ार विद्यार्थी मुझ से योग सीख रहे हैं। उन में से कई जीवन रहस्य के बारे में सवाल करते हैं। मैं उन के सवालों का जवाब नहीं दे सकता क्योंकि मुझे इस के बारे में कुछ भी मालूम नहीं। मैंने कई साधु—महात्माओं से पूछा पर किसी ने नहीं बताया, चिट्ठियां लिखीं पर कोई जवाब नहीं मिला। आप मुझे नामदान दें ताकि मैं निज अनुभव के आधार पर लोगों को बता सकूं। चुनांचे रात साढ़े आठ बजे जब हजूर ने लोगों को भजन बिठाया और नये भाई—बहनों को नामदान दिया तो दीक्षितों में योगाश्रम का वह अध्यक्ष भी था। हजूर महाराज जी की दया से सब को अन्तर में प्रकाश और ध्वनि का अच्छा अनुभव हुआ। कल योगाश्रम के अध्यक्ष का टी.वी पर प्रोग्राम है जिस में वह अन्तर के अनुभव के बारे में बतायेगा जो हजूर महाराज जी की दया मेहर से उसे प्राप्त हुआ। स्विटज़रलैंड का यह शहर ज्यूरिच बड़ा ही सुन्दर और करीने से बना है। हवाई अड्डे से निकले तो हम ने देखा कि 14—15 वर्ष के बच्चे (लड़के और लड़कियाँ) ट्रेफिक का प्रबंध कर हैं। यहां के लोग ज्यादातर संतरी (गेरुआ) रंग पंसद करते हैं और हर तरफ यही रंग नज़र आता है।

तीसरी विश्व यात्रा

कपड़े भी इसी रंग के पहनते हैं जो हमारे यहां प्राचीन ऋषियों और आज भी साधु—महात्माओं के वस्त्रों का रंग है।

4 सितम्बर: सुबह होटल के हाल में सत्संग में हजूर ने कहा कि सारे धर्मग्रन्थ और महापुरुष यही कहते हैं कि मनुष्य जन्म भाग्य से मिलता है और इसी में हम परमात्मा को पा सकते हैं। मानव *in the make* है, वह बन रहा है (प्रभु को पाने के लिए)। दुनिया के काम हों या परमार्थ के, दोनों में सफलता के लिए पूरी तवज्जो चाहिए। इस के लिए ज़रूरी है कि एक वक्त में एक ही काम करो, पूरी तवज्जो उस में लगा दो। जैसे मेज में कई दराज (खाने) होते हैं, एक से काम ले लिया तो उसे बंद कर दूसरा दराज खोल लेते हैं, ऐसे ही जिस इन्द्री से काम लेना हो, लो, बाकी इन्द्रियों को बन्द कर दो। महापुरुषों की जीवनियां पढ़ने से बड़े काम की बातें मिलती हैं। मैंने तीन सौ के करीब महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़े हैं। उपरोक्त कथन के सिलसिले में हजूर महाराज जी ने न्यूटन के जीवन का एक दृष्टान्त दिया। वह गणित की एक समस्या हल करने में ऐसा लीन था कि एक बैंड पास से गुज़रा मगर उसे ख़बर तक नहीं हुई। किसी ने पूछा, “यहां से कोई बैंड बजता हुआ गुज़रा है?” उसने जवाब दिया, “मुझे पता नहीं।” “इतनी तवज्जो से काम करो कि बाकी सब कुछ भूल जाए।” इसी प्रसंग में हजूर ने वाटरलू की लड़ाई का ज़िक्र करते हुए कहा कि युद्ध के दिन सुबह—सवेरे कमाण्डर और परामर्शदाता नैपोलियन के इर्द—गिर्द चक्कर काट रहे थे। उस ने पूछा, “क्या बात है? कहने लगे, “लड़ाई के बारे में बात करनी है।” नैपोलियन ने कहा, “वह तो नौ बजे शुरू होगी, अभी तो आठ बजे हैं।” तो कोई भी काम करो, इतनी लगन से करो कि शेष सब भूल जाए, क्या परमार्थ, क्या दुनिया के काम। ऐसा करने से दोनों में उन्नति होगी।

परमार्थ प्राप्ति में सफलता के लिए दूसरी नितान्त आवश्यक बात

ज्ञानी जी का छठा पत्र
हजूर ने यह बताई कि किसी का दिल न दुखाओ। दिल मालिक के रहने
की जगह है। सब के अन्तर में वह प्रभु बसता है, सब से प्यार करो:

“सबो घट मेरे साइयां सुंजी सेज न कोय ॥

बलिहारी तिस घट के जा घट परगट होय ॥”

जिस की आप पूजा करते हो वह सब के अन्तर में बस रहा है और आप उन को दुख देते हो तो वह मालिक कैसे तुम पर खुश होगा? मौलाना रुम साहिब ने इसी लिए कहा, “मय बखुर, मुसहिफ बिसाज, काबा दर आतिश ज़न। गरचे ख्वाही कुन वले मर्दुम आज़ारी मकुन।” अर्थात् शराब पी लो भई, यह सारे पापों की जड़ है, धर्म—ग्रन्थों और धर्म—स्थानों को आग लगा दो जो भारी पाप है। ये सारे पाप कर लो पर किसी का दिल न दुखाओ क्योंकि जिस प्रभु को तुम पाना चाहते हो वह हरेक के दिल में बसता है। अगर तुम किसी का दिल दुखाओगे तो वह मालिक कैसे तुम्हारे अन्तर में प्रकट होगा। साई बुल्लेशाह ने इसी लिए कहा:

“जे तोय पिया मिलण दी सिक्क तां हिया न ठाहीं केही का ॥”

सत्संग के बाद सवाल—जवाब हुए। एक सज्जन ने पूछा “क्या जिन्दगी के हरेक पहलू में गुरु की ज़रूरत है?” हजूर ने कहा, “हाँ! बच्चों के लिए पहला गुरु हैं माता—पिता, जो पैदा होने के समय से उन की संभाल करते हैं। स्कूल में अध्यापक की ज़रूरत है। पहलवान बनने के लिए किसी पहलवान की ओर डाक्टर बनने के लिए ऐसे डाक्टर का Guidance (मार्गदर्शन) चाहिए है जिस ने जिस्म की चीरफाड़ कर के उस की हरेक चीज़ को देखा और समझा है और दूसरों को दिखा—समझा सकता है। जब जिन्दगी के हरेक पहलू में गुरु की ज़रूरत है तो रुहानियत (आत्मानुभव) के लिए क्यों न होगी। कई बार पूरबले संस्कारों के कारण अन्तर में ज्योति आ जाती है, रुहानी नज़ारे दिखाई देते हैं और

तीसरी विश्व यात्रा

धनि सुनाई देने लगती है मगर आगे क्या करना है, उस के लिए आगे किसी आत्मानुभवी महापुरुष की Guidance चाहिए। इसी प्रसंग को और खोलते हुए हजूर महाराज ने कहा कि शुरू में जब मैं हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज जी के चरणों में आया तो लोगों ने पूछा कि हजूर महाराज जी कितने बड़े हैं? मैंने कहा कि यह मुझे मालूम नहीं, यह तो वही बता सकते हैं जो उन के साथ उड़ने वाले हैं। “वली रा वली मी शनासद” अर्थात् महापुरुष को कोई महापुरुष ही जान सकता है परन्तु मैं इतना ही जानता हूं कि मेरे लिए वे काफी हैं। एक और व्यक्ति ने सवाल किया कि जितने भी धर्मग्रन्थ हैं क्या वे सभी परमात्मा तक पहुंचने का रास्ता बताते हैं? हजूर महाराज जी ने फरमाया, “धर्मग्रन्थ क्या हैं? ये उन महापुरुषों के कलाम हैं जिन्होंने अन्तर्मुख अपने आप को खोजा और पाया और अपने निज अनुभवों का निचोड़ दूसरों की हिदायत (मार्गदर्शन) के लिए किताबों में लिख कर छोड़ गये। मगर जब तक हम अपने अन्तर में न जायें, हम इन किताबों में बयान की हुई असलियत को खुद नहीं पा सकते और न ही उन के सही अर्थ निकाल सकते हैं। अन्तर्मुख होने के लिए किसी संत सत्तुरु की शरण में जाना होगा जिस ने हकीकत को पाया है और दूसरों को पाने में मददगार हो सकता है। वह पहले धर्म ग्रन्थों का सही अर्थ आप को समझाएगा। अन्तर देखने वालों के कलाम वही समझ और समझा सकता है जो खुद अन्तर में गया है और अन्तर का हाल आंखों से देख और जान चुका है। बुद्धि के आधार पर धर्म—ग्रन्थों की सही व्याख्या नहीं हो सकती। सभी धर्मग्रन्थ कहते हैं कि नाम ही से मुक्ति है, नाम जपने वाले की मुशकक्तें (मेहनत) सफल हो जाती हैं। उस का मुख मालिक की दरगाह में उजला हो जाता है। पूर्ण पुरुष अन्तर्मुख नाम से तुम्हें जोड़ देता है जो प्रभु के धाम तक जाने का सीधा रास्ता है। सत्संग खत्म कर हजूर वापस अपने कमरे में आ गये।

ज्ञानी जी का छठा पत्र

आज जिनेवा से मिसिज़ किवानी हजूर से मिलने आईं। वह तीसरे विश्व धर्म सम्मेलन में दिल्ली आई थीं और उस ने सावन आश्रम में निवास किया था। कहने लगी, “मेरा घर आप के सत्संगीजनों के लिये हर वक्त खुला है और मैं हर तरह से सत्संग की सेवा के लिये तैयार हूँ।” आज दोपहर माल्टा से मिस्टर पैरट गुरुसी भी हजूर महाराज जी से मिलने आए। माल्टा में सत्संग का प्रोग्राम किनहीं कारणों से स्थगित करना पड़ा। इस लिये वे हजूर से मिलने चले आए थे। वह 10 आदमियों को साथ ले कर उन्हें नाम दिलवाने के लिये लंदन आएगा। आज हजूर महाराज जी ने नये और पुराने भाइयों को भजन बिठाया। हजूर की दया—मेहर से सब को अन्तर में ज्योति आदि का अनुभव हुआ।

रात आठ से साढ़े नौ बजे तक कुफरिन हाल में सत्संग हुआ जिस में हजूर महाराज जी ने फरमाया कि संत सत्गुरु मालिक की तरफ से प्यार का सन्देश ले कर आते हैं और प्यार के द्वारा ही अपने बच्चों को वापस निज घर जाने के लिये प्रेरित करते हैं। वे प्रभु प्रेम का स्रोत होते हैं और प्रेम की पूँजी देकर जीवों को वापस मालिक की गोद में पहुंचाते हैं। खुशकिस्मत हैं वे लोग जिन्हें जिन्दगी में ऐसे संत सत्गुरु से मिलना नसीब हुआ और उन की दया—मेहर से अन्तर में ज्योति और धनि की पूँजी मिली है जो God Absolute अर्थात् अनाम तक पहुंचने का सीधा रास्ता है। नाम की रोज़ कमाई करने से आप एक दिन सत्गुरु की दया से वहां पहुंच जाओगे। साढ़े नौ बजे सत्संग खत्म करके हजूर महाराज जी वापस होटल में आ गए। कल सुबह हम मीलान जा रहे हैं।

आदर सहित,

दास

ज्ञानी भगवान सिंह

16. महाराज जी का टैलीफोन संदेश और प्रकाशक सत्संदेश की टिप्पणी

महाराज जी लंदन की यात्रा समाप्त कर 16 सितम्बर को अमरीका पहुंचे और उसी दिन वहां से टैलीफोन पर ताई जी को अपना राजी खुशी अमरीका पहुंचने का सन्देश देते हुए कहा कि लंदन से वाशिंगटन की यात्रा जो पिछली विश्व यात्राओं में 16 घण्टे में तय होती थी, अब की बार आठ घण्टे में तय हुई। हवाई जहाज़ भी पहले से बड़ा और आरामदेह था। महाराज जी ने बताया कि वहां वाशिंगटन में हवाई अड्डे पर एक हज़ार आदमी अमरीका के विभिन्न सेंटरों से अपने—अपने हवाई जहाज़ चार्टर (पूरा हवाई जहाज़ किराये पर तय) कर के आए हुए थे। अमरीका और कैनेडा के सभी ग्रुप लीडर वहां मौजूद थे। महाराज जी के ठाठदार स्वागत की पूरी तैयारी की गई थी। महाराज जी को टीप-टाप ज़रा पसन्द नहीं लेकिन प्यार—प्यार ही है। टैलीफोन पर महाराज जी ने बताया कि यहां लोगों में प्यार बहुत है। महाराज जी ने वहां हवाई अड्डे पर खुले मैदान में घण्टा भर सत्संग किया। सत्संगीजनों के अलावा और भी बहुत लोग सत्संग सुनने के लिये वहां इकट्ठे हो गये थे। ताई जी को वहां पहुंचते ही सन्देश देने का कारण यह था कि वे चिन्ता न करें। ताई जी ने बताया कि इंग्लैंड से अमरीका तक अटलांटिक महासागर पर जब घण्टों हवाई जहाज़ पानी के ऊपर उड़ता है तो बादलों की तीन तहें पार कर और ऊंचा हो जाता है ताकि आंधी तूफान के झटके न लग सकें। चालीस—पचास हज़ार फुट से ऊपर हवा में आक्सीजन कम हो जाती है जिस से दम घुटने लगता है। ताई जी को पिछली यात्राओं का अनुभव था लेकिन महाराज जी ने बताया कि अब की बार हवाई जहाज़ की तेज़ रफ्तार के कारण न सिर्फ सफर का वक्त कम हो गया था बल्कि हवा की व्यवस्था का विशेष प्रबंध होने के कारण दम घुटने की तकलीफ नहीं हुई।

17. महाराज जी का चौथा पत्र
मानव केंद्र स्कूल के बच्चों के पत्र के उत्तर में
लन्दन

12 सितम्बर, 1972

प्यारे बच्चों,

आप का 6.9.1972 का प्रेम पत्र मिला। हाल मालूम हुआ।

आपने लिखा है कि आप अच्छा बनने की कोशिश कर रहे हैं। मुझे खुशी है। अच्छे बच्चे हमेशा अच्छा बनने की कोशिश करते हैं। मेरा आशीर्वाद आप के साथ है।

शरीर का पहलवान वर्जिश (कसरत) और खुराक से बन जाता है और आत्मा का पहलवान परमात्मा के साथ लगने से बनता है। अपनी पढ़ाई दिल लगा कर करो और मालिक को भी हर रोज़ याद करो। अध्यापकों का कहना मानो और इज्जत करो।

दास

किरपाल सिंह

18. ज्ञानी जी का सातवां पत्र

मीलान

7 सितम्बर, 1972

मानयोग ताई जी,

5 सितम्बर: ज्यूरिच से सवेरे 9 बजे के करीब महाराज जी होटल में अपने कमरे से हवाई अड्डे को जाने के लिये निकले और हाथ जोड़ कर विदा ली। फिर कार में बैठ गये और 9.30 बजे हवाई अड्डे पर पहुंच गये। सवा दस बजे हवाई जहाज़ चला। हजूर महाराज जी के साथ जो लोग मीलान तक जाने वाले थे सब 10 बजे अपनी—अपनी सीटों पर बैठ गये। यह जहाज़ अल इटालिया कंपनी का था जिस में 100 के करीब सीटें थीं। जिस तरह भारतवर्ष में प्रसिद्ध हिमालय पहाड़ है, उसी तरह इटली, जर्मनी तथा स्विटज़रलैंड की सरहद पर पहाड़ है मगर इस की कुल ऊंचाई 8000 फीट है। जहाज़ से नीचे पहाड़ों पर बर्फ जमी हुई नज़र आती है। कई जगह पहाड़ों पर सफेदी ही सफेदी नज़र आती थी। दृश्य बड़ा सुहावना था। जब जहाज़ से नीचे उतरने लगे तो हजूर महाराज जी ने फरमाया कि ऊपर जहाज़ में हमें प्रभु के हवाले हो कर रहना पड़ता है। 11 बजे जहाज़ मीलान पहुंच गया। कई लोग हजूर महाराज जी के दर्शन करने के लिये खड़े थे। यहां के ग्रुप लीडर पीर फ्रांको मर्सिनारो जो भारतवर्ष में आकर आश्रम में 6 माह बिता चुके हैं, हजूर महाराज जी के साथ कार में बैठ कर ब्रिस्टल होटल जहां रहने का प्रबन्ध था, आये। रास्ते में बड़े ज़ोर से मिं. मर्सिनारो रोते थे, फिर अपने आप ही हँस पड़ते थे।

सत्गुरु के नूरी मुखड़े, उन की परमात्मतत्व से भरी आंखें, शरीर से निकलता हुआ तेज देखने को प्रेमी बेताब हो जाता है। यहां गिनती के

ज्ञानी जी का सातवां पत्र
सत्संगी थे। यहां की भाषा न जर्मन है, न फ्रैंच है, न स्विस है। तीनों ही
इसे समझ नहीं सकते। फिर भी लोग महाराज जी के अंग्रेजी के वचन सुन
कर और दर्शन कर के सब कुछ समझ रहे थे। जैसे महाराज जी सत्संग में
बताते हैं कि रुहानियत की दो—तिहाई तालीम सत्युरु आखों के द्वारा और
एक—तिहाई ज़बान से देते हैं। जिस इन्सानी पोल पर बैठ कर वह कुल
मालिक काम करता है उस की महिमा बयान से बाहर है। यह दूसरी बात
है कि ऐसी हस्ती हमारे में से किसी के अन्दर बैठ कर जो चाहे सो लिखवा
ले। इटली में मि. टी. एस. खन्ना के बड़े पुत्र, रघुवीर सिंह बाल—बच्चों
समेत महाराज को लेने आये थे। वे दूसरे दिन अपनी कार से वापस अपने
घर को चले गये। महाराज जी ने तो हवाई जहाज से जाना था, रघुवीर
सिंह 1200 मील का सफर कार से तय कर के पैरिस पहुंचेंगे।

जब होटल पर जा कर कार खड़ी हुई तो वहां कई लोग प्रेम—
विभोर आंखों से दर्शन करने का इन्तज़ार कर रहे थे। उन्हें अपनी प्यार
भरी नज़रों से निहाल कर हजूर अपने कमरे में आ गये। शाम को 5 बजे से
6.30 बजे तक सवाल—जवाब तथा सत्संग का प्रोग्राम हुआ। रात को योग
आश्रम (*Yoga Centre*) के एक बड़े हाल में सार्वजनिक सत्संग था।
वहां हजूर महाराज जी ने फरमाया कि सारी योनियों में मानव देही सब से
ऊपर है, सब की सरदार योनी है, बाकी योनियां प्रभु ने मानव की सेवा हेतु
बनाई हैं। हमारा शरीर से क्या संबंध है? आत्मा को कैसे जाना जाये?
आत्मा का परमात्मा से क्या संबंध है? इस समय आत्मा की क्या हालत
है? आत्मा से मन—इन्द्रियां, प्राण आदि ताकत ले रहे हैं परन्तु वही आत्मा
मन के अधीन होकर इन्द्रियों के भोगों रसों में लम्पट हो कर किस प्रकार
बुरी तरह से फंस कर दर बदर भटक रही है। इस मज़मून को बड़े प्यार से
हजूर महाराज जी ने समझाया। परमात्मा क्या है? क्या परमात्मा को देखा
जा सकता है? और वह किन आंखों से देखा जा सकता है?

तीसरी विश्व यात्रा

परमात्मसाक्षात्कार में किन—किन चीज़ों की ज़रूरत है? कौन सी—चीज़े रुकावट हैं, कौन—सी मददगार हैं? इसे भी बड़े प्यार से समझाया। अन्त में हजूर महाराज जी ने बताया कि परमात्मा का अनुभव जिस हस्ती ने किया है वह उस के दर्शन इस तरह से कर रहा है जिस प्रकार हम एक दूसरे को देख रहे हैं। ऐसी हस्ती (महापुरुष) से नाम की पूंजी ले कर जीव का कल्याण हो सकता है। इस सत्संग का उपस्थित लोगों पर इतना असर हुआ कि सबेरे छह बजे के करीब ही कई भाई—बहन नाम—दान लेने को आ गये।

एक पादरी यह सत्संग सुन कर महाराज जी के कमरे में आ कर मिला। पूछने लगा कि मांसाहार कैसे छोड़ सकता हूँ? हमारे देश में तो इसी का चलन है। हजूर महाराज जी ने बड़े प्रेम से उसे समझाया कि आप स्वयं न खाओ, जो खाते हैं, उन्हें भी प्यार से समझा दो क्योंकि आत्मिक उन्नति के लिये इस का छोड़ना ज़रूरी है। हजूर महाराज ने उसे अपना स्वयं का उदाहरण बताया, “मेरे घर में सब मांस खाते थे परन्तु मैं एक थाली में रोटी के साथ प्याज, दही या सागपात रख कर अपनी रोटी अलग से खा लेता था।” उस पादरी ने दूसरे दिन नाम—दान लिया। एक दूसरा पादरी महाराज जी से मिलने आया और बाद में उस ने भी नाम—दान लिया।

सबेरे 9 बजे से 12 बजे तक हजूर महाराज जी ने नाम—दान दिया। वहां एक आदमी ने नामदान के समय बड़े सवाल—जवाब किये। हजूर महाराज जी ने उसे बताया कि आप एक बार अलग से मिल लें, आप के सब सवालों का जवाब मिल जायेगा। नाम लेने को जितने लोग बैठे थे उन्होंने भी उसे समझाया कि आप सब का समय क्यों बरबाद करते हो।” वह आदमी बाहर आ कर बैठ गया। जब महाराज जी नाम—दान दे चुके तो फिर वह आदमी माफी मांगने लगा। “मुझ से गलती हो गई है, मुझे

ज्ञानी जी का सातवां पत्र
माफ करें।” महाराज जी ने अपनी दया—मेहर की नज़र से उसे
प्रेम—पूर्वक देखा। उस के अन्तर में रोशनी आ गई।

शाम को 4 बजे से 6 बजे तक फिर लोग नीचे हाल में दर्शनों के
लिये इकट्ठे हो गये और सवाल—जवाब और सत्संग हुआ। कुछ सवाल—
जवाब भजन—सुमिरण की तरकी के बारे में किये गये। हजूर महाराज
जी ने सब को समझाया कि आप को पूंजी मिल चुकी है। एक दिन में कोई
महात्मा नहीं बन जाता, Rome was not built in a day. हजूर
महाराज जी ने गुरु अमरदास जी का उदाहरण दिया कि 70–72 साल वे
पैदल तीर्थों की यात्रा करते रहे तथा और कई साधन करते रहे। आखिर
जब गुरु अंगद साहब के चरणों में आये हैं तो अन्तर में नाम की दौलत
मिली। फिर कहते हैं, “ऐसा सत्गुरु बिना भाग्य नहीं मिलता, बिन भाग्य
ऐसा सत्गुरु न मिले” जो अन्तर में नाम की पूंजी दे सकता हो। लेक्चर
कथा, ज्ञान की बातें करने वाले तो बहुतेरे हैं मगर नाम की रोशनी या
अखंड कीर्तन सुनाने वाला कोई विरला ही है।

‘लाखन में कोई है नहीं कोटन में कोई एक।।

सत्गुरु के मिलने के बाद नाम की कमाई करके गुरु अमर दास
इकरार करते हैं, ‘कभी मैं भी मन—इन्द्रियों के घाट पर था परन्तु सत्गुरु
की मति लेकर “हम नीच ते उत्तम भये भाई”, अब मैंने उच्च अवस्था को
प्राप्त कर लिया। Every saint has his past and every sinner
a future. महाराज जी ने आगे बताया कि आजकल ज़माने बदल गये
हैं। लोग इतने काम—काजी हो गये कि किसी को भी दिन में दो चार घंटे
निकालना मुश्किल है। आगे लोग कई—कई साल नाम की दौलत हासिल
करने के लिए महापुरुषों की संगत में रहते थे। बाद में जब बर्तन तैयार हो
जाता था तब गुरु कृपा कर के नाम की दात बख्शते थे। आज घोर

तीसरी विश्व यात्रा

कलियुग है, कौन किसी के पास इतनी देर ठहर सकता है? महाराज जी ने अपनी स्वयं की बात बताई कि सन् 1948 में जब मैं ऋषिकेश गया था तब मेरे साथ दो आदमी तैयार हो कर निकले। एक की स्त्री ने रोधो कर उसे वापसी पर मजबूर कर दिया। दूसरा मेरे साथ रहा। दुनिया में घर-बार, छोड़ कर, काम-धन्धा छोड़ कर समय निकालना बड़ा मुश्किल है। फिर महाराज जी ने इब्राहिम बिन अदम का उदाहरण पेश किया कि वह बल्खबुखारे का बादशाह था और कबीर साहब के पास नाम की दौलत लेने आया। 6 साल सेवा करता रहा तो एक दिन माता लोई, कबीर साहब की पत्नी, कहने लगी कि इसे अब नाम की दौलत दे दो। कबीर साहब ने कहा कि अभी बर्तन तैयार नहीं हुआ। माता लोई ने अर्ज की कि सारा दिन जो काम इसे बताओ, करता है, जो खाने को दें, खा लेता है। कबीर साहब ने कहा कि अच्छा कल सवेरे जब यह दरवाजे से बाहर निकले तो कोठे से कूड़ा करकट इस के शरीर पर गिरा देना, फिर देखना, यह क्या कहता है? माता ने उसी तरह किया। जब उस पर कूड़ा करकट डाला गया तो कहता है कि अगर बुखारा होता तो देखता। अभी तक हक्मत का अहंकार मौजूद था। इसी तरह 6 साल और गुज़र गये। फिर कबीर साहब ने माता लोई को कहा कि अब बर्तन तैयार है। लोई कहने लगी कि बाहरी तौर पर तो मुझे कोई फर्क नज़र नहीं आता। कबीर साहब ने कहा कि अच्छा, पहले आप ने इस पर कूड़ा करकट डाला था, अब मल-मूत्र आदि गंदगी इस पर डाल देना। लोई ने इसी तरह किया। जब उस पर मल-मूत्र आदि गंदगी डाली गई तो कहता है कि हे खुदा! मैं तो इस से भी गया गुज़रा हूं। मतलब यह है कि इंसान अभी बन रहा है और पूर्ण इंसान बनने में समय लगता है। आप सब को नाम की कुछ न कुछ पूँजी मिल चुकी है। आप प्रभु के रास्ते पर आ गये हो, हर रोज़ नाम की कमाई करो। आपस में मिल बैठ कर सत्गुरु की याद करो। तालीम का जो अनुभव आप को

ज्ञानी जी का सातवां पत्र
मिला है, उसे बढ़ाओ। सब धर्मों की मूलभूत तालीम एक ही है। बाकी प्रभु
दया करेगा।

इसके बाद महाराज जी अपने कमरे में वापिस आ गये, वहां भी
कई मिलने वाले आये हुए थे। मीलान निवासी एक इटालियन अपने
भारतीय मित्र के साथ मिलने आया। महाराज जी ने उसे समाजों और
मज़हबों के जो चिन्ह चक्र मानव ने लगाये हैं उनकी विशेषता बताई। एक
उदाहरण दिया कि एक पढ़ा लिखा कितनी ही डिग्रियों वाला था। वह
नदी पार करने के बास्ते नाव में बैठा। उसने मल्लाह से पूछा, “तू कुछ
पढ़ा लिखा भी है?” मल्लाह ने जबाब दिया, “कुछ नहीं।” इस पर पढ़ा
लिखा आदमी कहने लगा, “तेरी आधी ज़िन्दगी बेकार हो गई।” थोड़ी देर
के बाद किश्ती पानी की तेज़ धारा में फँसने लगी और इधर उधर डोलने
लगी। मल्लाह ने उस से पूछा, “तू तैरना जानता है।” पढ़े लिखे आदमी ने
कहा, “मैंने किताबों में कैसे तैरना है यह पढ़ा है, परन्तु मुझे तैरना नहीं
आता।” मल्लाह ने कहा, “अब नाव ढूबने को है। तैरना न आने से तेरा तो
सारा जीवन ही खत्म होने वाला है।” सो ‘नाम’ या ‘परमात्मा’ की बातें
करना बड़ा आसान है, धर्म ग्रन्थों में सब ने पढ़ी हैं मगर कैसे पिंड छोड़
कर ऊपर आ सकते हैं? अन्तर का दिव्य चक्षु कैसे खुल सकता है? अन्तर
में परमात्मा की ज्योति तथा नाद को किस तरह देख सुन सकते हैं? इस
का अनुभव नहीं हुआ। जब तक ऐसा समर्थ महापुरुष जो इस रहस्य को
जानता है और उस का तजरबा देने में भी समर्थ है, न मिले और इस की
कुछ पूँजी शुरूवात करने की न दे, जीव का कल्याण नहीं हो सकता।

क्योंकि महाराज जी ‘नामदान’ दे चुके थे और वह इटालियन बाद
में मिला था, महाराज जी से उस ने पूछा, “क्या आप फिर यहां आएंगे?”
हजूर महाराज जी जवाब दिया, “प्रभु इच्छा बलीयसी (God willing),

तीसरी विश्व यात्रा

आप भारतवर्ष में आइये, अगर आप की इच्छा प्रबल है तो ज़रूर यह पूंजी मिलेगी ।” उस ने जबाब दिया, “मैं कोशिश करूंगा ।”

रात को फिर 7 से 10 बजे तक प्रोग्राम था । कई लोग नीचे होटल के हाल में इकट्ठे हो गये । 7 सितंबर, 1972 को आगे पैरिस जाने का प्रोग्राम था । महाराज जी ने नाम की कमाई करने की ताकीद की तथा उन्हें सम्पर्क बनाये रखने को कहा कि चिट्ठी द्वारा या डायरी के द्वारा अपनी तरकी का हाल लिखते रहें । यह भी बताया कि जहां आप एक से अधिक मिल कर सदगुरु की याद में बैठेंगे वहां सत्गुरु पावर मौजूद होगी, उस की Radiation से आप सब को फैज़ (लाभ) मिलेगा ।

महाराज जी ने बैठे हुए हर व्यक्ति पर अपनी दया दृष्टि डाली, ठीक उसी तरह जैसे पिता अपने बच्चों को प्यार से देखता है, सब को प्रेम भरी मस्ती वाली प्रभु के रंग में रंगी हुई आंखों से देख कर ‘आंखों आंखों में निहाल कर’ सब से विदा ले कर अपने कमरे में चले गये । सवेरे हज़ार महाराज जी पैरिस (फ्रांस) जाएंगे, वहां के कार्यक्रम का हाल आगे लिखुंगा ।

दास

ज्ञानी भगवान सिंह

19. ज्ञानी जी का आठवां पत्र

माननीय ताई जी,

7 सितम्बर: सवेरे 9 बजे के करीब ब्रिस्टल होटल (मीलान) से निकल कर बाहर खड़े सब लोगों से हाथ जोड़ कर हजूर महाराज जी मिले। सब की आंखों में जुदाई के आँसू छलक रहे थे। हजूर कार में बैठ गये। जब कार चलने लगी तो यह विदाई का दृश्य असहनीय बन गया। उस समय मेरे मन में विचार पैदा हुआ कि हम दिल्ली वाले कितने खुशकिस्मत हैं जिन्हें लगातार कई—कई दिनों तक हजूर महाराज जी के दर्शन, सत्संग, बातचीत करने का व उन्हें सुनने का लाभ मिलता रहता है। इधर इन भाई—बहनों को देखो जिन्हें हजूर महाराज जी का, सारे जीवन में एक—दो दिन, वह भी कुछ खास मौके पर दर्शन का मौका मिला है। कई और खुशकिस्मत हैं जिन्हें जीवन में दो—तीन बार कई सालों के फेर से दर्शन तथा सत्संग का मौका मिला है। पर जिन्हें सारी ज़िन्दगी में एकाआध बार ही हजूर महाराज जी के शारीरिक दर्शन मिले हैं उन के लिए अब परमात्मा जाने कब फिर से दर्शन नसीब हों या न भी हों। उन की आंखों में मिलने व जुदाई के आँसू क्यों न आयें। सत्युरु चाहे हरेक जीव, जो उन का है, उस की मुनासिब सम्माल करते रहते हैं परन्तु शरीर कर के दर्शन, वचन और रुहानी—मंडल का आनंद तो चीज़ ही और है। उन की यह हालत देख कर हमारे मन में पीड़ा उठती है और हमारा मन भी दुख से भर आता है। इस दुख भरी सनसनाहट में कार चली और आधे घंटे में हवाई अड्डे पर पहुंच गई।

मीलान बड़ा सुन्दर नगर है। सवा दस बजे चलने वाला हवाई जहाज़ 10—15 मिनट देरी कर चला और एक घण्टे में पैरिस पहुंच गया।

तीसरी विश्व यात्रा

यह जहाज़ एयर फ्रांस का था। ज्यूरिच, जिनेवा आदि के ऊपर से उड़ान करता हुआ अल्पस पर्वतमाला के ऊपर कभी बादलों से बहुत ऊँचा उड़ता हुआ यह जहाज़ चला। मि. बेटा माटिक जोसफ जो आजकल पैरिस के ग्रुप लीडर हैं, उन के साथ और भी कई भाई-बहन यहां एयरपोर्ट पर हजूर महाराज जी को लेने आए हुए थे। इतने भाई-बहन हजूर महाराज जी के साथ देख कर बाहरी लोगों में हैरानी होती है कि आखिर यह कौन है? एक जगह हजूर महाराज जी संगत को लेकर बैठ गये और सारे भाई-बहन बड़ी प्यार भरी नज़रों से दर्शन करते रहे। दूसरे जो लोग उधर से गुज़रते वे यह देख कर कि ये सारे एक ऐसे महापुरुष की तरफ एक टक देख रहे हैं जैसे कोई चित्र खिंचा हुआ है, बड़े हैरान होते थे। थोड़ी देर के बाद मि. बेटा जी कार ले कर आये। हजूर महाराज जी कार में बैठ गये। जब मि. बेटा जी दिल्ली आये थे तो ताई जी इसे कहते थे कि 'बेटा' का मतलब हिन्दी में क्या है, तुम्हें मालूम है। 'बेटा' का मतलब 'पुत्र' से है, 'तू महाराज जी का बेटा है।'

यहां भी होटल में रहने का बन्दोबस्त था। होटल काफी पुराने समय का बना है। अतः शहर के बीचों-बीच है। होटल के सामने ही बहुत बड़ा बाग है जहां सारा दिन लोगों का मेला लगा रहता है।

7 सितम्बर: शाम को 4.30 बजे से 6 बजे तक होटल के हाल में, जहां लोग बैठे थे, हजूर महाराज जी ने सत्संग किया। इस के बाद और कोई प्रोग्राम नहीं था क्योंकि यहां चार दिन का प्रोग्राम था, बाकी जगह तो दो-दो दिन का प्रोग्राम था और माल्टा का प्रोग्राम केंसल हो जाने से पैरिस को ये दो दिन ज्यादा मिल गये। इस लिए यहां सवेरे भजन, शाम को सत्संग 4.30 बजे से 5.30 बजे तक रहा। बाकी मिलने वाले लोग भी वहां बहुत आते रहे। जिन की भजन सुमिरण में कोई कमी रहती थी वे आ

ज्ञानी जी का आठवां पत्र
कर हजूर के सामने रखते। हजूर महाराज जी प्रेम प्यार से उस कमी को
दूर करते। अगर कोई दूसरा सवाल होता तो उस को भी हल कर देते थे।

8 सितम्बर: हजूर महाराज जी सवेरे 9 बजे लोगों को भजन बिठाने गये। सब को भजन पर बिठाया। कई भाई बहन ऐसे थे जिन्होंने नाम नहीं लिया था। वे लोग भी थे जिन का भजन नहीं बनता था। सब को समझा कर बिटा दिया। सब को रोशनी आदि नज़र आई। लोगों की भजन—सुमिरण की त्रुटि निकल गई और हजूर महाराज जी ने सब को हर रोज़ बाकायदा भजन—सुमिरण करने को कहा तथा फरमाया कि यह रुह की रोटी है, Bread of life and water of life है। इस को जितना खाओगे, सुखी हो जाओगे। कई लोग मिलने को भी आये। फिर शाम को 4.30 बजे से 5.30 बजे तक महाराज जी ने सत्संग किया जिस में बताया कि जो खास बात है वह यह है— इन्द्रियों को काबू (वश में) करो। अभी हमारी यह हालत है कि एक एक इन्द्रिय का भोग हमें खींच कर ले जाता है। ऐसी स्थिति पैदा करो कि जब जिस इन्द्रिय से काम लेना चाहो, ले लो, जब मर्ज़ी न हो, काम न लो। दूसरे यह कि जो पूर्ण पुरुषों की शरण में जाते हैं उन्हें तो यह बात समझ आ जाती है कि यह शरीर हरि मन्दिर है जिस में सच्चे की ज्योति है परन्तु जिन की आंख नहीं खुली उन के लिये बाहर के मंदिर, मस्जिद या अन्य धर्म स्थान ही सब कुछ हैं। अगर ठंडे दिल से विचार करें तो पता लगेगा कि ये सब इन्सानी शक्ल के नमूने पर बने हैं। सिर की गुम्बदार शक्ल के मंदिर, माथे की महराबदार शक्ल की मस्जिद तथा नाक की लम्बूतरी शक्ल के चर्च, ये इन्सानी चेहरे का ही नमूना हैं। इन सब के बीच ज्योति और ध्वनि के दो चिन्ह रखे गये यह बताने को कि ऐसी ज्योति और ध्वनि हमारे अन्दर है। परन्तु जब तक कोई पूर्ण पुरुष (अनुभवी पुरुष) नहीं मिलता यह सिर्फ

तीसरी विश्व यात्रा

लकीर की फकीरी रह जाती है। इस लिये समय—समय पर महात्मा, साधु—संत आदि इस संसार में आते रहते हैं और लोगों को दिव्य चक्षु प्रदान करते हैं जिस से कि मनुष्य जब चाहे अपने अन्तर में स्थित होकर अनुभव कर लेता है तो भ्रम दूर हो जाता है। संत तुलसी साहब ने एक जगह ज़िक्र किया है:

नकली मदिर मस्जिदों में जाये सद अफसोस है,
कुदरती मस्जिद का साकिन दुःख उठाने के लिये।

इस का मतलब यह हरगिज नहीं कि हमारे दिलों में इन धर्मस्थानों के प्रति कोई इज्ज़त नहीं है। तीर्थ तथा धर्मस्थान कैसे बने? जिस स्थान पर कोई न कोई साधु, संत महात्मा रहा अथवा जहां उन्होंने जन्म लिया, ऐसे सब स्थान पवित्र तीर्थ बन गये। संसार में करोड़ों—अरबों आम लागों ने जन्म लिया परन्तु वे सब स्थान पवित्र नहीं बन पाये। कबीर साहब ने एक जगह कहा है:

झगड़ा एक निबेड़ो राम—तीरथ बड़ो कि हरि को दास?

एक पूर्ण पुरुष कई जगह पर रहा तो वे सब स्थान तीर्थ स्थान बन गये। इस लिए जीवन में किसी पूर्ण महापुरुष का मिलना बड़े ही भाग्य से होता है। वे लोग खुशकिस्मत हैं जिन्हें इस प्रकार के समर्थ महापुरुषों का मिलाप हुआ। असल बात तो यह है कि अन्दरूनी आंखें किस प्रकार खुल सकती हैं। क्या कोई अपनी निजी कोशिश से अन्दर की आंख खोल सकता है? नहीं। फिर जिस की अपनी अन्तर की आंख खुली हुई है और जो प्रभु के साक्षात् दर्शन हमेशा करता है उस के पास जाने से हमारी भी अंतर की आंख खुल सकती है, फिर हम भी ईश्वरीय ज्योति तथा शब्द के सुनने वाले बन जायेंगे। इसा मसीह ने एक बार अपने शिष्यों को कहा कि

ज्ञानी जी का आठवां पत्र
जो तालीम मैंने आप लोगों को दी है, इस का प्रचार घर की छतों पर खड़े
होकर (खुल्लमखुल्ला) सब को कहो। फिर आगे जा कर कहते हैं कि यह
दौलत (रुहानियत की) जो दुनिया में लम्पट हो रहे हैं उन के लिये नहीं।

अन्तर में दो ही साधन हैं एक ज्योति, दूसरा नाद। जब मनुष्य
अन्तर में ज्योति में घिर जाता है तो फिर 'ध्रुन' ज्योति को फाड़ कर रुह
को आगे ले जाती है। महाराज जी ने आगे सत्संग में बताया कि बादशाह
अपने बच्चे को बादशाह ही बनाना चाहता है, वज़ीर बनाना नहीं चाहता।
इसी प्रकार हर पूर्ण पुरुष अपने रुहानी बच्चों को पूर्ण बनाना चाहता है
और देखना चाहता है कि मेरे बच्चे मेरे से बढ़ कर ही निकलें। मालिक भी
अपने बच्चों को सुखी देखना चाहता है। इस लिए वह वक्त—वक्त पर
अपने बच्चों को घर ले जाने के लिए, संतों, महात्माओं को संसार में भेजता
है। वह समाज या स्कूल अच्छा है जिस में ज्यादा बच्चे पास हों यानि प्रभु
को पायें न कि वे समाज या स्कूल जिन के पास अच्छी पोशाकें, बड़े—बड़े
हाल या बड़े—बड़े खेलकूद के मैदान हों पर लड़का एक भी पास न होता
हो। आत्मा विद्या कोई प्रेतवाद, काला जादू या वशीकरण विद्या नहीं। यह
विद्या अपने आप को जान कर प्रभु को जानना—उस से एकमेक हो जाना
है। यह बुद्धि विचार की चीज़ नहीं बल्कि अमली तजरबा कर के प्रभु को
देखने का नाम है। पढ़ा लिखा व अनपढ़, देखने में दोनों ही इन्सान हैं
परन्तु जब उन के साथ सम्पर्क हो तो ही पता लगता है कि अनपढ़ और
पढ़े लिखे में क्या फर्क होता है। इसी लिये पूर्ण पुरुष कहते हैं कि सत्गुरु
को पिता समान, बड़ा भाई या शिक्षक की तरह से मान लो। फिर उस के
कहे के मुताबिक अन्दर चलो। जब अन्दर उस की शान देखो तो फिर जो
चाहे उसे कह लेना। 6 बजे सत्संग समाप्त हुआ तो हजूर महाराज जी
अपने कमरे में वापस आ गये। रात को फिर कोई प्रोग्राम नहीं था।

तीसरी विश्व यात्रा

9 सितम्बरः सवेरे महाराज जी ने उन लोगों को नामदान दिया जो इसी लिये वहां आये थे। शाम को 4.30 बजे से 5.30 बजे तक सत्संग हुआ। महाराज जी ने जो कहा उस में पहली बात यह थी कि परमात्मा है, यह सारी रचना उस की बनाई हुई है और वह स्वयं इस शरीर रूपी हरि-मन्दिर में रहता है। पूर्ण पुरुष कहते हैं कि हम ने प्रभु को देखा है। इस पर लोग पूछते हैं कि फिर वह प्रभु हमें क्यों नज़र नहीं आता। महापुरुष जवाब देते हैं कि हमारे और उस के बीच मन का पर्दा है। अगर मन खड़ा हो जाये तो हम भी प्रभु को देख सकते हैं। जब तक मन खड़ा न हो हम उसे नहीं देख सकते।

एक देख कर गाना है और एक बिना देखे कहना कि परमात्मा ज्योति स्वरूप है। महाराज जी ने बताया कि जब मैं पहली बार अमरीका गया तो वहां एक बड़ा भारी मंदिर था जिस के नौ दरवाजे बने थे, दसवां ऊपर खुलता था। मैंने वहां के प्रबन्धकों से पूछा कि इस का क्या मतलब है? उन्होंने कहा कि हमें पता नहीं। कहने लगे कि इस के बनाने वाला लन्दन में रहता है। असल में 9 दरवाजे इस शरीर के बाहर खुलते हैं, दसवां दरवाजा जिसे दसवीं गली, दशम द्वार कहते हैं, वह दो भ्रू-मध्य आंखों के पीछे है। ये नमूने हैं इंसानी शक्ल के। वह प्रभु तो शरीर रूपी हरिमंदिर में ही रहता है। जिन की अन्तर की आंख नहीं खुली वे बाहर करोड़—अरबों रुपए बाहरी बनावट पर खर्च कर रहे हैं। महाराज जी ने बताया कि जब मैं 1963 में दूसरी बार विदेश यात्रा पर निकला तो लन्दन में मैंने बताया कि परमात्मा इन्सान के बनाये ईटों पत्थरों के मकानों में नहीं रहता, वह तो इस शरीर रूपी मंदिर में रहता है जिसे उसने स्वयं बनाया है। इस पर एक पादरी उठ कर कहने लगा,— “You have thrown an atom bomb on all our churchianity.” तो हकीकत यही है।

ज्ञानी जी का आठवां पत्र

इंसान—इंसान सब एक हैं। एक बार कबीर के पास एक ब्राह्मण आ कर कहने लगा कि हम तो ब्रह्मा के मुख से जन्मे हैं। कबीर साहब ने उस से पूछा, “जो ब्राह्मण तू ब्राह्मणी जाया, आन बाट काहे नहीं आया, जो तू ब्रह्मा के मुंह से आया है तो किसी और रास्ते से पैदा होना था। महाराज जी ने सब से फरमाया कि जो दौलत आप को मिली है उसे आम लोगों तक पहुंचाओ। हकीकत यह है कि अगर हम सब ambassador (राजदूत) का काम करें तो सब सुखी हो जायें और अपने सच्चे पिता (परमात्मा) को मिलने के लिये जो उसे बाहर खोज रहे हैं, अपने अन्दर ही देख सकें।

उसी दिन दोपहर को Mrs. Majjile हजूर महाराज जी को मिलने आई। यह काफी वृद्ध महिला हैं। पहले यही ग्रुप लीडर का काम करती थीं मगर तन्दुरुस्ती न रहने से तथा दूसरे पुत्र के सहारा न देने के कारण यह काम छोड़ दिया। जब यह महाराज जी से मिली तो महाराज जी उस से कहने लगे कि मैं आप को बड़े दिनों से याद कर रहा हूँ बड़ी मुद्दत से आप के पत्र आदि भी नहीं आये। महाराज जी ने बड़े प्यार से उस के पुत्र का पता लिख कर अपने पास रखा और बोले, “मैं आप के पुत्र को चिट्ठी लिखूँगा।” उसे हजूर महाराज जी ने एक उदाहरण बताया। एक बार पेशावर में एक स्त्री ने अपने लड़के की शिकायत खानबहादुर से कर दी जो पठान था। उस ने उस लड़के को बुला कर एक घड़ा रेत का भर कर उस के पेट पर बांध दिया। फिर उस से कहा कि इस मैदान में इधर उधर चक्कर लगाता रह। जब थोड़ी देर तक उस घड़े का बोझ उठा कर चला तो हाय हाय करने लगा। उस ने (खानबहादुर ने) कहा कि तेरी माता ने तुझे नौ महीने पेट में रख कर पालन किया है, तू तो थोड़ी देर भी बोझा नहीं उठा सकता। लड़के ने कहा, “आगे से मैं माता की सेवा

तीसरी विश्व यात्रा
करुंगा।” महाराज जी ने उसे चाय आदि पिलाई। शाम को और रात को
उस ने वहाँ ठहर कर सत्संग सुना।

पैरिस की जो सब से बड़ी और मशहूर मस्जिद है उस में रात को
महाराज जी की टाक थी। यह मस्जिद 1926 में बनी थी। उस के
डायरेक्टर श्री हजमा अबोबकर हैं। ये वहाँ के इमाम हैं। अबोबकर साहब
1965 के तीसरे विश्व धर्म सम्मेलन में भारत आए थे और सावन आश्रम में
आ कर महाराज जी से मिले थे। वे अब मस्जिद में मौजूद थे। 8 बजे रात
महाराज जी कार में बैठ कर वहाँ गये। जब वहाँ पहुंचे तो आगे एक बुजुर्ग
सज्जन, सफेद पोशाक में गोरे चिट्ठे रंग वाले महाराज जी की अगवानी
को खड़े थे। यहाँ होटल से चलते समय ज़ोरदार बारिश हो रही थी परन्तु
वहाँ पहुंचे तो बरसात का नामो—निशान नहीं था। उन सज्जन के साथ
महाराज जी मस्जिद में अन्दर चले गये, वहाँ पर श्री अबोबकर महाराज
जी को बड़े प्रेम से आपस में हाथ मिला कर मिले। फिर दोनों स्टेज पर
पहुंच गये जहाँ टाक होनी थी। इस की टेप भरी हुई है जो आप को भेज
देंगे। श्री अबोबकर जी ने महाराज जी के स्वागत में कहा, “मुझे बड़ी खुशी
है कि महाराज जी यहाँ पधारे हैं। पहले भी हम दिल्ली में सर्वधर्म सम्मेलन
में मिले हैं। ऐसे महापुरुषों के मार्गदर्शन में सब को लाभ मिलता है।”
महाराज जी ने कहा कि जो कुछ श्री अबोबकर जी ने कहा है, मैं इस
लायक नहीं। परमात्मा सब से, जो—जो काम वह लेना चाहता है, ले रहा
है, यह सब उस की बरकत है। सारा सत्संग टेप किया हुआ है, वह हम
भेजेंगे, सब भाई—बहन सुन लें। महाराज जी ने उसे बहुत प्यार दिया।
टाक के बाद फिर श्री अबोबकर ने कहा कि मैं भी एक दिन इस दौलत
के बास्ते आप के आश्रम का दरवाजा खटखटाऊंगा। फिर उस ने सारी
मस्जिद महाराज जी को दिखाई। दोनों एक दूसरे की बांह में बांह डाल

ज्ञानी जी का आठवां पत्र
कर चल रहे थे। यह फोटो भी आप को भेजेंगे। वे लोग हजूर महाराज जी
को बाहर तक छोड़ने आए। महाराज जी ने उन्हें भीतर जाने को कहा
परन्तु वे न माने और बाहर कार तक आये और कहने लगे कि महाराज
जी, आप कार में चढ़िये। महाराज जी उन से बोले कि आप पहले अन्दर
चले जाइये। वे फिर कहने लगे, “पहले आप कार में चढ़ें।” उन का एक
और व्यक्ति महाराज जी को कहने लगा कि कृपया आप चढ़ जाएं।
महाराज जी ने जवाब दिया कि यह प्यार की लड़ाई है। *It is quarrel
of love.* फिर कहा कि मैं आप लोगों की तरफ पीठ कर के किस तरह
कार में चढ़ सकता हूं, संतों की नम्रता का कोई अन्त नहीं। कार जब तक
काफी दूर चली नहीं गई वे सब लोग खड़े—खड़े महाराज जी की तरफ
देखते रहे। सवा दस बजे के करीब महाराज जी वापस अपने मुकाम पर
पहुंच गये और रात 1 बजे तक अपना काम करते रहे।

10 सितम्बर: सवेरे हजूर महाराज 9 बजे नीचे के हाल में लोगों
को भजन पर बिठाने के लिये गये। सब को भजन पर बिठाना, लोगों की
भजन—सुमिरण की गलतियां दूर करना, फिर लोगों के सवाल—जवाब या
दूसरे उन के निजी मामलों में मार्गदर्शन, यह तो महाराज जी का रोज़ाना
का काम है। हम तो सोचते हैं कि जब चाहें, महाराज जी से बातचीत कर
के अपनी समस्या रख देंगे परन्तु जिन्हें महाराज जी के 9 साल बाद या
जीवन में पहली बार ही देह स्वरूप में दर्शन हुए, उन की तसल्ली भी
महाराज जी ही करा सकते हैं।

शाम को 4.30 बजे से 5.30 बजे तक नीचे के ही हाल में सत्संग
था। सत्संग में महाराज जी ने “शुद्ध आहार, शुद्ध विचार और शुद्ध
आचार” विषय लिया। अन्त में बताया कि हम ने जितना सत्संग से
फायदा लिया है, ठीक है, अब दो मिनट रेडियेशन का फायदा लो। दो

तीसरी विश्व यात्रा

मिनट सब चुपचाप भजन में बैठ जाओ। महाराज जी ने इतनी दया सब पर की कि सब तरफ नूर ही नूर भर गया। रात को फिर 8.30 से 9.30 बजे तक सत्संग हुआ। यह सत्संग शहर के एक बड़े हाल में था जिस का नाम प्लेयल साले चोई है। वहां पर एक व्यक्ति को, जो शायद हाल के प्रबन्धकों में से था और स्टेज पर Interpreter (दुभाषिये) के साथ बैठा था, महाराज जी ने कुछ कहने को कहा तो वह बोला, “क्या अब कुछ कहने को बाकी रह गया है?” 10 बजे के करीब महाराज जी वापस होटल में आ गये। सवेरे महाराज जी ने लंदन जाना है। वहां के कार्यक्रम के बारे में वहीं से लिखुँगा।

अदब और प्यार सहित,

दास

ज्ञानी भगवान सिंह

20. ज्ञानी जी का नौवां पत्र

लंदन
18 सितम्बर, 1972

मननीय तार्झ जी,

इस से पहले आप को हजूर महाराज जी के पैरिस के दौरे का हाल लिखा था। अब इंग्लैंड के दौरे के बारे में सुनिये। पैरिस से दिन के पौने ग्यारह बजे BEA कम्पनी के हवाई जहाज़ में बैठ कर पौने बारह बजे हम लंदन पहुंचे। पैरिस से रवाना होने से पहले हवाई अड्डे पर इस कंपनी का एक पायलट (विमान चालक) हजूर के पास आया और उन का नाम पूछा। फिर कहने लगा, “आप लंदन जा रहे हैं?” वह पायलट बाकी सारे यात्रियों को छोड़ हजूर महाराज जी और उन के साथियों को हवाई जहाज़ के अन्दर ले गया और कहने लगा, “आप जहां जिस सीट पर चाहें, बैठ जायें।” लंदन एयरपोर्ट पर BEA कम्पनी का एक बड़ा अफसर और इण्डियन हाई कमिशन (दूतावास) का पब्लिक रिलेशंस अफसर हजूर महाराज जी के स्वागत को खड़े थे। वे बाहर तक हजूर के साथ आए जहां बहुत लोग हजूर महाराज जी के दर्शनों के लिये खड़े थे। इन में भारतीयों की संख्या अधिक थी। वहां कुछ देर ठहरने के बाद हजूर महाराज जी कार में बैठ उस जगह पहुंचे जहां उन के ठहरने की व्यवस्था की गई थी।

माल्टा से मिस्टर पैरट, जो वहां के सत्संग के इंचार्ज हैं, कुछ लोगों को नाम दिलवाने लंदन आए हुए थे। लंदन में हजूर महाराज जी का निवास एक प्राइवेट फ्लैट में किया गया था। वहीं शाम चार से पांच बजे तक हजूर महाराज जी से बातचीत करने लोग आ जाया करते थे। शाम को बहुत बड़ी संख्या में अंग्रेज़ और हिन्दुस्तानी लोग मिलने आए

तीसरी विश्व यात्रा

और हजूर महाराज जी ने अलग—अलग कमरों में उन से बातें कीं क्योंकि दूसरों के सामने किसी ऐसी भाषा में बातचीत करना जिसे वे न समझते हों, अपमानजनक समझा जाता है। शाम को 7 से 8 बजे तक सेन्ट्रल पोलिटेक्नीक के बड़े हाल में सत्संग हुआ, पहले 11 सितम्बर, फिर 12 सितम्बर को। पहले दिन एकता और दूसरे दिन पिण्ड से ऊपर आ कर अन्तर दिव्य चक्षु खुलने, अपने आप को जानने और प्रभु का दर्शन करने का मज़मून हजूर महाराज जी ने खोल—खोल कर बड़े प्यार से लोगों को समझाया। उस हाल में सुबह 9 से 11 बजे हजूर महाराज जी लोगों को भजन बिठाने के लिये रोज़ जाते थे। शाम चार से पांच बजे तक मुलाकाती हजूर महाराज जी के निवास स्थान पर मिलने आ जाते थे।

13 सितम्बर: सुबह—सवेरे हजूर महाराज जी ने पोलिटेक्नीक हाल में लोगों को भजन बिठाया। शाम चार से पांच तक मुलाकातियों से बातचीत की और उन के सवालों के जवाब दिये। रात साउथहाल में सत्संग था। सत्संग से पहले हजूर महाराज जी सरदार सन्त सिंह जी के मकान पर गये। उन्होंने भजन के लिये एक खास कमरा निर्मित कर रखा है। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि मैंने भी भजन सुनिरण के लिए एक कमरा रखा हुआ था। एक बार हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज उस कमरे में पधारे। जब वे वहां से बाहर आए तो मैंने उस कमरे को बन्द करवा दिया और फिर किसी को उस कमरे के अन्दर नहीं जाने दिया। उस का यह असर हुआ कि जब भी मैंने उस कमरे में जाना तो शब्द की धुनकारें सुनाई देती थीं। पूर्ण—पुरुष जहां कहीं जाते हैं उन की Radiation अर्थात् मण्डल का ख़ास असर पैदा हो जाता है जो देर तक रहता है। सरदार सन्त सिंह के मकान से चल कर हजूर महाराज जी सत्संग के लिये चैम्बर आफ कामर्स हाल तशरीफ ले गये। भीड़ के कारण जगह इतनी तंग पड़ गई कि नीचे बैठ कर लोगों ने सत्संग सुना और

ज्ञानी जी का नौवां पत्र
कुर्सियां बाहर निकल दी गईं। सुनने वाले पंजाबी होने कर के हजूर
महाराज जी ने इस दौरे में पहली बार वहां पंजाबी में सत्संग किया। इस
सत्संग की टेप आप को भेजी जा रही है। सत्संग समाप्त कर हजूर
महाराज जी वापस लंदन अपने निवास स्थान में आ गये।

14 सितंबर: सुबह भजन का प्रोग्राम नहीं रखा गया था। सुबह 10
बजे छह कारों में बैठ कर लोग हजूर महाराज जी के साथ ईस्टबोर्न रवाना
हुए। वहां सब से पहले हजूर मिसिज़ मारग्रेट के घर तशरीफ ले गये, जहां
हजूर के दर्शन कि लिए बहुत बड़ी संख्या में लोग जमा थे जिन्हें मिसिज़
मारग्रेट ने दोपहर के खाने का न्योता भी दे रखा था। हजूर महाराज जी
के सभी साथियों ने उन लोगों के साथ बैठ कर खाना खाया। हजूर
महाराज जी किसी के घर का खाना नहीं खाते, उन का अपना अलग
प्रबन्ध था। इस के बाद हजूर महाराज जी के साथ सब लोग कारों में
समुद्र तट देखने के लिये चले। मिसिज़ मारग्रेट के पति सत्संगी नहीं हैं
लेकिन हजूर महाराज जी को वे अपनी कार में बिठा कर समुद्र तट
दिखाने ले गये। कहने लगे, “आज मुझे बड़ी भारी खुशी है कि हजूर
महाराज जी मेरे घर पधारे और मेरी कार में बैठे।” दायें—बायें दूर तक
लहराता हुआ सागर और बीच में पहाड़ का दृश्य, अजीब नज़ारा था।
चारों ओर पानी ही पानी था लेकिन पानी के बीच ही पहाड़ी को प्रभु ने
बना दिया। बड़ा अनुपम दृश्य था। वहां से तीन बजे के करीब हम वापस
मिसिज़ मारग्रेट के घर लौटे जहां शाम चार से पांच बजे तक मुलाकातियों
से हजूर ने बातचीत की। इस के बाद वहां पब्लिक लायब्रेरी हाल में
सत्संग था। हाल खचाखच भरा था, सत्संगीजनों के अलावा बहुत से नये
लोग भी आए हुए थे। सत्संग के बाद सवाल—जवाब हुए और फिर हजूर
महाराज जी वापस लंदन आ गये। मिसिज़ मारग्रेट से पहले मिस्टर जान
रोलैंड यहां के ग्रुप लीडर थे। वे बीमार थे और अस्पताल में पड़े हुए थे।

तीसरी विश्व यात्रा

हजूर महाराज जी सुबह दस बजे चल कर तीन सौ मील की यात्रा तय कर के शाम साढ़े छह बजे साउथ वेल्स के अस्पताल में गये जहां जान रोलैंड बीमार पड़े थे। अस्पताल की जगह मालूम न होने के कारण हजूर महाराज जी ने एक जानकार सत्संगी मिस्टर हेनरी राबर्ट को टेलीफोन द्वारा सन्देश भिजवाया, वह कार लेकर रास्ते ही में हमें आ मिला और अस्पताल ले गया। रास्ते में पहाड़ियों का सिलसिला भी था और समुद्र का किनारा भी। अस्पताल पहुंचे तो मालूम हुआ कि मिस्टर रोलैंड किसी दूसरे अस्पताल भेज दिये गये हैं। हजूर उस दूसरे अस्पताल में पहुंचे। हजूर महाराज जी उस वार्ड में पहुंचे जहां रोलैंड पड़ा था। मारे खुशी के उस की आंखों में आंसू आ गये। वह दर्द से तड़प रहा था। हजूर महाराज जी ने उस के माथे पर दो आंखों के बीच अंगूठा रख कर फरमाया, “अंतर अंधेरे में बड़े गौर से देखो, क्या है?” उसे हजूर महाराज जी की दया—मेहर से कई किस्म की रोशनी अन्तर में दिखाई दी। महाराज जी ने फरमाया, “रोशनी के बीचों—बीच ध्यान टिकाओ, आगे स्वरूप आ जायेगा।” इस के बाद महाराज जी ने उस के दोनों कानों पर अंगूठे रख दिये और कहा, “अन्तर में कुछ सुनाई देता है?” मिस्टर रोलैंड को शब्द ध्वनि सुनाई देने लग गई। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि अन्तर में (ज्योति और ध्वनि) ध्यान टिकाओ, तुम्हें दर्द महसूस नहीं होगा। थोड़ी देर हजूर वहां ठहरे और मिस्टर रोलैंड को अन्तर में ध्यान टिकाये रखने का आदेश दे कर वहां से चले और तीन सौ मील की यात्रा तय कर डेढ़ बजे रात लिवरपूल पहुंचे, जहां एक होटल में महाराज जी के ठहरने का प्रबन्ध किया गया था। हजूर महाराज जी हर तरह की तकलीफ सह कर भी अपने जीवों की संभाल करते हैं—यहां इस लोक में भी और मरने के बाद परलोक में भी। यह चौदह घण्टे का सफर भी विशेष महत्व रखता था। अस्पताल से लौटते समय हजूर महाराज जी मिस्टर रौलण्ड को कह आए थे कि तैयार रहो।

ज्ञानी जी का नौवां पत्र

16 सितंबर: सुबह 9 बजे से साढ़े दस बजे तक लंदन के एक मन्दिर में हजूर महाराज जी ने परमार्थाभिलाषी नर-नारियों को भजन बिठाया और सवालों के जवाब दिये, पुराने भाइयों की भजन की गलतियों को ठीक करने के बाद सब को नियमित रूप से रोज़ भजन बैठने का आदेश हजूर ने दिया। इस के बाद महाराज जी काहन चन्द चिब के घर थोड़ी देर तक रुके और वापस अपने होटल में आ गये। दोपहर एक से दो बजे तक मैथोडिस्ट चर्च में हजूर महाराज जी ने सत्संग किया जिस के बाद हजूर कार से Birmingham (बरमिंघम) के लिए रवाना हुए जहां शाम चार बजे पहुंचे। हजूर के साथ पांच और कारें चल रही थीं। बरमिंघम रवाना होने से पहले हजूर महाराज जी ने बड़े प्यार से मिस्टर राबर्ट को विदा किया जो केवल रोलैण्ड के अस्पताल की जगह हजूर को बताने के लिये कार लेकर आया था। हजूर महाराज जी ने उस की कार में यात्रा की, इस परम सौभाग्य की मस्ती में वह दो दिन घर ही नहीं गया, चाहे रात को सोने और सुबह बदलने के कपड़े तक उस के पास नहीं थे। मिस्टर राबर्ट रात आठ बजे सत्संग सुनने के बाद डेढ़ सौ मील की यात्रा कर अपने घर पहुंचा। हजूर महाराज जी के दर्शन और Radiation अर्थात् उनके मण्डल के प्रभाव से लोग अपने घर-बार की सुधि भूल जाते हैं।

बरमिंघम में भी होटल में हजूर के ठहरने का प्रबन्ध किया गया। पहले जिस होटल में इन्तज़ाम किया गया था वहां एक तो लिफ्ट नहीं थी, दूसरे वहां खाना पकाने की इजाज़त नहीं, इस लिये उसी समय दूसरे होटल में जाना पड़ा। वहां होटल वालों को जब पता चला कि ऐसी हस्ती को हमारे होटल में ठहराया जा रहा है तो उन्होंने हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध करने का वचन दिया। बरमिंघम में गुरु रविदास जी के गुरुद्वारे में

तीसरी विश्व यात्रा

शाम साढ़े सात बजे तक हजूर ने सत्संग किया। वहां के सत्संग का टेप रिकार्ड करके आप को भेजा जा रहा है। सत्संग गुरु ग्रन्थ साहब की वाणी के आधार पर था। वहां से हजूर एक और बड़े गुरुद्वारे में गये। यहां भी गुरवाणी के आधार पर पंजाबी में सत्संग कर के रात साढ़े नौ बजे वापस अपने होटल में आ गये।

17 सितंबर: सुबह 9 बजे हजूर कार पर बेडफोर्ड के लिए रवाना हुए। वहां ग्यारह से बारह बजे तक सत्संग किया। यहां ज्यादा आबादी भारतीयों की है। सत्संग हिन्दी में था जिस का टेप आप को भेज रहे हैं। सत्संग में बहुत भीड़ थी। यहां से डेढ़ बजे हजूर ल्यूटन में सरदार रघबीर सिंह मानवकेन्द्र वाले के सुपुत्र तेज सिंह कुण्डराल के घर गये। वहां थोड़ी देर ठहर कर साढ़े तीन बजे वापस लंदन पहुंच गये। वहां माल्टा के मिस्टर पैरट और बहुत से दूसरे लोग इन्तज़ार में बैठे थे। हजूर महाराज जी ने सब से बातचीत की। शाम साढ़े छह बजे से साढ़े सात बजे तक पोलिटेक्नीक के हाल में सत्संग हुआ। हजूर महाराज जी ने मनुष्य जन्म के महत्व का विषय लिया और कहा कि इसी योनि में आत्मा का साक्षात्कार और प्रभु का दर्शन हो सकता है। हजूर ने बताया कि परमात्मा को किस रूप में देखा जा सकता है। वहां से वापस होटल पर दिल्ली टैलीफोन बुक किया जो तुरन्त मिल गया और हजूर महाराज जी और हम सबने ताई जी से बातचीत की। उस समय यहां रात के सवा ग्यारह बजे थे और दिल्ली में चार बजे रहे थे।

18 सितंबर: सुबह नौ बजे पोलिटेक्नीक हाल में हजूर ने परमार्थाभिलाषी नर-नारियों को नामदान दिया। दीक्षा के बाद हजूर ने फरमाया कि आप सब को आत्मानुभव की नकद पूँजी अपने-अपने पुरबले संस्कारों के अनुसार, किसी को कम किसी को ज्यादा, मिल चुकी है। अब कमाई अर्थात् रोज़ अभ्यास कर के इस को और बढ़ाओ। रोटी न खाओ

ज्ञानी जी का नौवां पत्र
जब तक भजन न कर लो। यह (भजन) रुह की रोटी है और बाकायदा
अपनी रिपोर्ट भेजते रहो। मालिक दया करेगा। मेरी शुभ भावना आप के
साथ है।

इंग्लैंड के प्रोग्राम का आज आखिरी दिन है। कल सुबह हजूर
अमरीका रवाना हो जायेंगे। इस लिए लंदन और आसपास के इलाकों से
और माल्टा और अन्य देशों से लोग आये थे। वे सब हजूर महाराज को
विदा करने के लिये आये। हजूर महाराज ने विदा लेते हुए फरमाया कि
परमात्मा आप के अन्तर में ही है। जब मुँह उधर करोगे, मदद मिलेगी।
हर रोज़ नियम से भजन—सुमिरण करो। इस से आप को भी खुश मिलेगी
और दूसरों पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा। शाम साढ़े छह से साढ़े सात तक
साऊथहाल में सत्संग था। यह सत्संग भी हिन्दी में था जिस की टेप आप
को भेजा जा रही है। रात को सवा आठ बजे हजूर वापस लंदन पहुंचे।
बिशप मेकवर्टर साहब रात नौ बजे हजूर महाराज से मिलने आए और देर
तक बातें करते रहे। रेवरेंड मेकवर्टर 1965 ई. में विश्व धर्म सम्मेलन में
भाग लेने भारत आए थे। उन्होंने भारत और पाकिस्तान के संबंधों के बारे
में हजूर महाराज जी से पूछा। हजूर ने फरमाया कि भारत अपनी ओर से
इस बारे में पूरी—पूरी कोशिश कर रहा है। मैकवर्टर साहब ने कहा कि एक
बार मैंने बैरन ब्लॉम्बर्ग साहब से पूछा था कि क्या आप ने अन्तर में लाईट
(ज्योति) देखी है? उन्होंने जवाब दिया, “हां देखी है।” उन्होंने हजूर से
कहा कि मुझे दुख है कि मैं आप के सारे सत्संग नहीं सुन सका। हजूर
महाराज ने फरमाया कि ये heart to heart talks (अर्थात् दिल से
दिल की बातें) हैं शब्दों से कम, आंखों से ज्यादा बात समझाई जाती हैं।
मैकवर्टर साहब कहने लगे कि मैं कल आप को विदा करने एयरपोर्ट
आऊंगा मगर महाराज जी ने नम्रतापूर्वक कहा कि आप ने बड़ी मेहरबानी
की जो ब्राईटन से यहां लंदन आये हो। मुझे बड़ी खुशी है। आप एयरपोर्ट

तीसरी विश्व यात्रा

आने का कष्ट न करें। मैकवर्टर साहब ने कहा कि भारत में एक टाक में मैंने कहा था कि My heart is thy heart and thy heart is my heart अर्थात् मेरा दिल आप का दिल है और आप का दिल मेरा दिल है। आप अपना हाथ मेरे हाथ से मिलाओ। इसी तरह बड़ी दिलचस्प बातें होती रहीं। मैकवर्टर साहब ने हजूर महाराज जी से कहा कि जब आप फिर यहां आओ तो मुझे पहले से बताना, मैं कइयों से आप की बातचीत कराऊंगा। महाराज जी ने बताया कि मेरी उम्र 76 वर्ष की हो चुकी है। मैकवर्टर कहने लगे कि मेरी उम्र 73 वर्ष की हो जायेगी। आप उम्र में भी मुझ से बड़े हो। हजूर महाराज जी ने नम्रतापूर्वक फरमाया, “परमात्मा ने जिस से जो काम लेना है, ले रहा है।” अन्त में उस ने पूछा कि दुनिया की हालत सुधरेगी कि नहीं? हजूर महाराज ने कहा कि लोगों में जाग्रति आ रही है मगर यह काम जल्दी का नहीं, धीरे-धीरे हो रहा है। एक दिन कलियुग से सत्युग आयेगा।

इस के बाद मूवी और फोटो ली गईं जो आप को भेज दी जायेंगी। हजूर महाराज जी ने कल आगे अमरीका जाना है, इस लिए उन्हें विदा करने बहुत लोग यहां आए हुए हैं। रात बारह बजे हजूर महाराज जी ने अपना सन्देश आप सब भाइयों के लिए टेप में रिकार्ड करवाया जो आप को भेजा जा रहा है। साऊथ वेलस के अस्पताल से अभी अभी खबर मिली है कि मिस्टर जान रोलैंड जिन्हें हजूर महाराज जी शुक्रवार को मिले थे और अन्तर नाम से जोड़ आए थे, वह बड़े सुख चैन से अगले दिन दोपहर के एक बजे गुरु की गोद में समा गये। आगे अमरीका के हालात वहां पहुंच कर आप को लिखे जायेंगे।

दास

ज्ञानी भगवान सिंह

21. हजूर महाराज जी का पांचवा पत्र

न्यूयार्क

9 अक्टूबर, 1972

प्यारे नूर के बच्चों,

हजूर महाराज की दया—मेहर पहुंचे।

मैं कल सवेरे न्यूयार्क पहुंच गया हूँ। आप सब लोगों की कुरबानी से यहां हज़ारों लोगों को सत्संग और नाम का फैज़ (लाभ) हजूर महाराज की दया से मिल रहा है। यहां लोगों में जाग्रति आ रही है। यहां प्रोग्राम सुबह, दोपहर और शाम को भजन व सुमिरण, सवाल—जवाब, सत्संग वगैरह का ठीक से चल रहा है।

तकरीबन डेढ़ माह (महीना) गुज़र गया है। बाकी भी उम्मीद है कि हजूर महाराज जी की दया से प्रोग्राम खत्म होने पर जब मैं वापस दिल्ली आऊंगा, आप सब को मिल कर खुशी होगी। वक्त से फायदा उठाएं और सत्संग व भजन सुमिरण करते रहें। इस से प्यार और याद बनती है।

आश्रम में हरेक भाई बहन को मेरी तरफ से प्यार पहुंचे। बाकी टेलीफोन पर भी आप सब के लिए प्यार भेजा जाता है।

ज्यादा प्यार,

दास

किरपाल सिंह

22. हजूर महाराज जी का छठा पत्र
आश्रमवासियों के नाम
(अंग्रेजी से अनुवाद करके)

कैम्प वर्जीनिया
30 सितम्बर, 1972

आश्रम में निवास करने वाले मेरे प्रियजनों,

आप का 27 जुलाई का लिखा पत्र मिला जिस पर साइकिल स्टैंड पार्टी के कई प्यारे सेवादारों, आफिस, सिक्योरिटी (सुरक्षा) स्टाफ के सदस्यों तथा दूसरे प्रियजनों के हस्ताक्षर हैं जिन्होंने प्यार भरे भाव व्यक्त किये हैं। उनके प्यार की मैं कद्र करता हूं। मैं देखता हूं कि आप लोग बड़ी लगन के साथ अपनी ड्यूटी को पूरा कर रहे हो। मुबारिक हैं वे लोग जो निष्काम सेवा के लिये चुने गये हैं। आप को यही आदेश है कि आप एक—दूसरे के प्रति और ज्यादा प्रेम, आदर व नम्रता मन में पैदा करें ताकि सब के सामने नमूना बन दिखायें। आप सब को, एक—एक को, मेरा प्रेम और आर्शीवाद पहुंचे।

आप सभी लोग जिस्म करके गुरु का वियोग सहन कर रहे हैं। यकीन जानो कि मैं भी यह दौरा खत्म कर जल्दी से जल्दी आप के पास पहुंचना चाहता हूं।

मैं आप से यही कहना चाहता हूं कि नियमित रूप से भजन—सुमिरण में समय दें जिस से आत्मा कर के आप की तरक्की हो।

प्यार और शुभ भावना सहित,

किरपाल सिंह

23. ज्ञानी जी का दसवां पत्र

वर्जीनिया

5 अक्टूबर, 1972

मानयोग ताई जी,

आशा है कि आप सब हजूर महाराज जी दया—मेहर से राजी होंगे। इस पत्र से पहले आपको लंदन से चिट्ठी लिखी थी, उस में वहां के दौरे के हालात लिखे थे। अब आप को वर्जीनिया के दौरे के हालात लिखता हूँ।

29 सितम्बर: सवेरे 9 बजे हजूर महाराज जी लंदन में अपने निवास स्थान से अमरीका जाने के लिये हवाई अड्डे को रवाना हुए जो काफी दूर है, इस लिये जल्दी चलना पड़ा। 11.15 बजे हवाई जहाज़ चलना था। हवाई अड्डे पहुंच कर हजूर महाराज जी एक जगह पर बैठ गये। कुछ लोग कुर्सी आदि पर बैठ गये व शेष संगत ज़मीन पर बैठ गई। 10.30 बजे संगत को हाथ जोड़ कर हजूर महाराज जी हवाई जहाज़ पर पहुंचे। यह जहाज़ पैन अमरीकन कंपनी का था। 360 सीटों वाले इस हवाई जहाज़ पर उस समय 140 सवारियां बैठी थीं। बाकी जहाज़ खाली था। 11.15 बजे की बजाय 11.45 बजे जहाज़ रवाना हुआ। मिसेज़ फिटिंग भी हवाई अड्डे पर हजूर को छोड़ने आई और वहीं से जर्मनी चली गई। जर्मनी से बहुत सारे लोग लन्दन आये थे, वे भी वापस चले गये। 6 व्यक्ति रह गये थे, जो हजूर महाराज जी के साथ अमरीका पहुंचे।

जहाज़ में एक आदमी आया और हजूर से पूछने लगा कि आप कहां से आये हैं और कहां जा रहे हैं? वह पंजाबी में बात कर रहा था।

तीसरी विश्व यात्रा

फिर पूछने लगा कि आप किस काम से जा रहे हैं। वह पाकिस्तान का रहने वाला मुसलमान था। उसे बताया गया कि हजूर किस मकसद के लिये अमरीका जा रहे हैं। उसे कुछ किताबें भी पढ़ने को दी गई। किताबें पढ़ने के बाद वह कहने लगा कि आप बहुत अच्छे मिशन के लिये जा रहे हैं। फिर कहने लगा कि हजूर महाराज जी की शिक्षा सूफी—मत से मिलती—जुलती है। महाराज जी के बारे में उस ने कहा कि उन के सामने मैं तो एक कीड़े के बराबर हूं। ये बहुत ही ऊँची हस्ती हैं। महाराज जी के रुहानी जलाल को देख कर जहाज़ के कई मुसाफिर संत मत की शिक्षा के बारे में जानकारी चाहने लगे। कई लोगों को किताबें भी दी गईं, पढ़ कर वे लोग कहने लगे, “हम भी वहां सत्संग में आएंगे?” पैन अमरीकन कम्पनी के जो जहाज़ के कर्मचारी थे वे इतने खुश थे कि बार—बार हजूर के बारे में जानकारी लेने आने लगे। उन्हें भी किताबें दी गईं। उन्होंने बड़ा सहयोग दिया, यहां तक कि हजूर महाराज जी के लिए जहाज़ के किचन में चाय बनाने की इजाज़त दे दी। हम ने वहां चाय बना कर उन लोगों को भी दी।

यहां के समय के मुताबिक 3 बजे दोपहर जहाज़ डालस हवाई अड्डे पर पहुंच गया। जहाज़ से उतरते ही मि. टी. एस. खन्ना तथा मि. रेनू सीरीन हजूर महाराज जी के स्वागत के लिये वहां खड़े थे। उन्हें खास दरवाजे से बाहर ले गये। वहां योगी भजन की मण्डली कीर्तन कर रही थी। 500 के करीब लोग स्वागत करने लाइन में खड़े थे। 7 साल के बाद हजूर महाराज जी के दर्शन का मौका लोगों को मिला था। उनके प्रेम का वर्णन कर पाना सहज नहीं है। आंखों में आंसू थे, आत्मा में और ज़बान पर सत्तुरु—सत्तुरु (**Master and Master**)। यह नज़ारा देखने वाला था, लिखा नहीं जा सकता। लोगों के अन्तर की अवस्था अन्तर वाला

ज्ञानी जी का दसवां पत्र
(सत्गुरु) ही जानता है। यह कहन—सुनन से परे की बात है।

वहां से कार में बैठ कर हजूर महाराज जी खन्ना जी के घर पहुंचे। योगी भजन भी साथ में थे। वहां बहुत सारी फोटो ली गई। आप को भेज देंगे। यहां भी कई लोग महाराज जी के दर्शन करने आये। शाम 7.30 बजे वियाना कम्प्यूनिटी सेंटर हाल में सत्संग था। हजूर महाराज जी समय पर वहां गये। यह एक बहुत बड़ा हाल है जो खचाखच भरा हुआ था। कोई 1000 के करीब लोग इकट्ठे हुए। सत्संग में हजूर महाराज जी ने फरमाया कि आज मैं 9 साल के बाद यहां आया हूं। इस दरम्यान आप में से कई भारतवर्ष में आ चुके हैं। मैं किस प्रकार बयान करूं कि मेरे दिल में आप सब के लिये कितना प्यार है। आप सब मेरे दिल के नज़दीक हैं। आप सब परमात्मा के बच्चे हैं। हजूर ने एक उदाहरण दिया कि एक बार मसीह लोगों के बीच बैठे थे। कहने लगे, “जो परमात्मा के रास्ते पर चल रहे हैं वे (सब) मेरे बच्चे हैं।” मैं एक एक से अलग—अलग मिलना चाहता हूं। आप भी मुझे मिलना चाहते हो। मैं यहां आप के भीतर जो प्रभु का प्यार है उसे और बढ़ाने आया हूं। प्रभु ने हमारा—आप का जो नाता जोड़ा है वह कभी भी टूटने वाला नहीं है। “सच्चा साथ न तुट्टई गुरु मेले सइयां।” मेरी दिली ख़ाहिश है कि आप सब भजन—सिमरण में तरक्की करो। मेरा आशीर्वाद आप सब के साथ है।

20 सितंबर: सवेरे 9 हजूर महाराज लोगों को भजन बिठाने अमरीकन लिज़न हाल, फोक्स पहुंचे। 835 लोगों को अंतरीय अनुभव हुआ। फिर अमरीका के सब ग्रुप लीडरों की मीटिंग हुई। मि. रेनू सीरीन ने कहा कि हम हजूर महाराज जी द्वारा अंतर में अनुभव की दात और सत्संग की रुहानी रौ से लोगों को जो बरकत मिल रही है उस के लिये हजूर महाराज जी के आभारी हैं। श्री खन्ना ने कहा कि ग्रुप लीडर अपने—अपने

तीसरी विश्व यात्रा

विचार बतायें कि जिस से हजूर महाराज जी के अमरीका के दौरे से ज्यादा से ज्यादा लोगों को लाभ मिल सके। फिर हजूर महाराज जी ने सब ग्रुप लीडरों को सत्संग का काम बढ़ाने के लिये कंधे से कंधा मिला कर काम करने को कहा। फरमाया, “आप खुश—किस्मत हो कि परमात्मा ने आप को अपना काम करने के लिये चुना है।” इस के बाद हजूर महाराज जी ने अण्डे के बगैर बना हुआ केक काटा और सब को प्रशाद दिया।

शाम 4 से 5 बजे तक हजूर महाराज जी फिर उसी हाल में गये और एक घण्टा सवाल—जवाब हुए। ज्यादा सवाल इस बार में पूछे जाते हैं कि भजन सिमरण में तरकी कैसे हो? हजूर महाराज जी बड़े प्रेम से उन्हें समझाते हैं कि नियमित भजन—सिमरण व जीवन की पड़ताल से आगे रुहानी तरकी हो सकती है। एक भाई ने पूछा कि जब लोगों को पहले दिन अन्तर में ज्योति व धुन का अनुभव हो जाता है तो फिर भजन—सिमरण में समय क्यों दिया जाये? हजूर महाराज जी ने फरमाया कि जिस तरह घड़ी को 24 घंटे में चाबी देने की ज़रूरत होती है इसी तरह अन्तर के महारस को पाने के लिये वक्त देने की ज़रूरत है। इस के बाद लोगों ने अपनी निजी मुश्किलें हल करने के लिये सवालात किये और महाराज जी ने उनके हल बताये।

शाम को 7 बाद अमरीकन यूनिवर्सिटी लैकचर हाल में सत्संग था। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि मुझे विद्यार्थियों में बैठ कर खुशी होती है क्योंकि यह मौका मुझे भी मेरे विद्यार्थी जीवन की याद दिला देता है। मैं स्वयं भी एक विद्यार्थी हूं। मनुष्य हर रोज़ कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। यह पूर्ण पुरुषों की नम्रता है। स्वयं पूर्ण हो कर भी अपने आप को दूसरे

ज्ञानी जी का दसवां पत्र
के बराबर कहते हैं। सत्संग के बाद फिर सवाल जवाब हुए।

21 सितम्बरः 9 बजे हजूर महाराज जी भजन बिठाने के लिये उसी हाल में गये। वहां मैसूर के योगी स्वामी सहजानन्द हजूर से मिलने आए व सुरत शब्द योग के बारे में पूछा। महाराज जी ने उन्हें समझाया और योग पर अपनी किताब Crown of Life पढ़ने को दी। यहां लोग हठयोग की क्रिया करने वाले हैं और इसी के बारे में कई सवाल किये जाते हैं। शाम को 4 बजे से 5 बजे तक सवाल जवाब व रात्रि को सत्संग जार्ज मैसन यूनिवर्सिटी लैक्यार हाल में हुआ। हाल खचाखच भरा था, कई लोग बाहर भी खड़े थे।

22 सितम्बरः सवेरे टेलीविज़न पर हजूर महाराज जी का प्रोग्राम था। 7.30 बजे घर से निकले। एक घंटे का रास्ता था। ट्रैफिक पुलिस के दो पायलट पहले आ गये थे। रास्ते में बहुत भीड़ होती है, वे आगे रास्ता साफ करते जाते थे। जहां रास्ता नहीं होता था, वे साइरन बजाते जिस से सब कारें खड़ी हो जातीं और हजूर महाराज जी की कार को रास्ता मिल जाता। कई जगह पर लाल बत्ती होती, उस समय भी ट्रैफिक वालों ने सब को रोक कर हजूर महाराज जी को रास्ता दे दिया। 9 बजे प्रोग्राम शुरू हुआ। हजूर महाराज जी को 20 मिनट का टाइम दिया गया। वहां कई सवाल जवाब हुए। एक सवाल था कि शान्ति कैसे स्थापित हो सकती है? जवाब था कि मज़हब वाले मज़हबों के ऊपर उठें, मुल्क वाले मुल्कों से ऊपर उठें तो सुख शांति हो सकती है। इंसान मानवता के लैवल से रहे तो शान्ति हो सकती है। इस प्रोग्राम की टेप आप को भेजी जायेगी।

शाम को 4 बजे से 5 बजे तक सवाल जवाब हुए और रात को 7 बजे से 8 बजे तक सत्संग हुआ। बाद में हजूर महाराज जी मि. ए.एन.

तीसरी विश्व यात्रा

शर्मा के फार्म पर गये जो यहां से 80 मील दूर है। रात 10.30 बजे वहां पहुंचे। कई लोग और भी कारों से वहां पहुंच गये। सवेरे 6 बजे तक 100 के करीब लोग कारों से पहुंच गये थे। सवेरे 9 बजे हजूर महाराज जी ने लोगों के खुले मैदान में पेड़ों के नीचे भजन पर बिठाया। हजूर के दर्शन तथा बातचीत कर के लोग बहुत खुश हुए। यहां हजूर महाराज जी के खुले-खुले दर्शन सब को हुए। सवेरे 11.30 बजे से 12.30 बजे तक सत्संग हुआ। उस समय कोई 250 कारों से लोग पहुंच चुके थे। सब के लिए वहां लंगर का इंतज़ाम था। सब ने भोजन किया व 3 बजे के करीब हजूर महाराज जी वापस वर्जीनिया के लिए रवाना हो गये। यह जगह कोई 30 एकड़ भूमि में है। इस में से 10–15 एकड़ ज़मीन शर्मा जी सत्संग को भेंट देने को कहते हैं। 5 बजे हजूर महाराज जी वापस खन्ना जी के घर पहुंच गये। शाम को फ्रेंड्ज़ मीटिंग हाउस में सत्संग हुआ।

24 सितम्बर: सवेरे 8.30 बजे हजूर महाराज जी उस जगह पहुंचे जहाँ नामदान देना था। 100 के करीब व्यक्ति नामदान के लिये हाजिर थे। यहां सब को हजूर महाराज जी की दया—मेहर से प्रकाश और धुनि की पूंजी मिली। एक बजे हजूर महाराज जी नाम देकर वापस आ गये। शाम को 4 बजे साइलवान थियेटर (*Sylvaan Theatre*) में सत्संग था। यह एक खुली जगह है। शाम का समय होने से कई लोग वहां सैर करने आते हैं, उन्हें भी हजूर महाराज जी का सत्संग सुनने का मौका मिल गया। सत्संग का विषय “पराविद्या व अपराविद्या” था। पराविद्या है क्या? “आत्मा का मन—इंद्रियों से ऊपर आकर अंतर में प्रभु से मिलना।” अपराविद्या जीव को बाहरमुखी कर्मों में अटका देती है। यह नेक कर्म है परन्तु इससे आना—जाना खत्म नहीं होता, हंगता (अहं) नहीं जाती, मन में कर्ता होने का ख्याल बना रहता है। पराविद्या के मार्ग पर चलने के लिए

ज्ञानी जी का दसवां पत्र

जीव को कई गुण धारण करने पड़ते हैं: (1) प्रेम, (2) नम्रता व (3) हृदय की पवित्रता। ये गुण होने से जीव जल्दी प्रभु को पा सकता है। और यह काम इंसानी चोले में ही हो सकता है, न किया तो 84 लाख योनियों में भटकना पड़ेगा। संत सत्युरु इसी कारण संसार में शरीर धारण करते हैं ताकि जीव जन्म-मरण से छुटकारा पा सकें। सत्संग के बाद एक ने सवाल किया, “क्या जीव गुरु के बगैर भी परमात्मा से मिल सकता है?” हजूर महाराज जी ने जवाब दिया कि पूर्व जन्मों के संस्कारों से जीव को अंतर में थोड़ी रोशनी आ सकती है परन्तु आगे रास्ता नहीं खुलता। आगे बढ़ने के लिए गुरु की ज़रूरत है। इस के बाद कई लोग मिलने आये। कई लोगों ने अपने निजी सवालात किये जिन का हल हजूर महाराज जी ने बड़े प्रेम से उन्हें बताया। रात को खन्ना जी के घर भी बहुत से लोग मिलने आये।

25 सितम्बर: अमरीकन लिजन हाल में हर दिन की तरह 9 बजे भजन पर बिठाया गया व सवाल—जवाब हुए। शाम को 4.30 बजे से 5.30 बजे तक वहीं पर ही सत्संग भी हुआ जिस में हजूर महाराज जी ने बताया कि हम एक दूसरे को सुखी रखना चाहें तो सब सुखी हो सकते हैं। हम दूसरे की मदद करने लगें तो सब सुखी हो जायें। अपने—अपने मज़हब में रहते हुए हिन्दू सच्चा हिन्दू मुसलमान सच्चा मुसलमान व ईसाई सच्चा ईसाई बने। पराविद्या की तालीम सारे मज़हबों की साँझी है, उस को हासिल करें तो सच्चा सुख मिल सकता है। रात को हजूर के दर्शन करने कई लोग खन्ना जी के घर आये।

26 सितम्बर: रोज़ाना की तरह हजूर महाराज सुबह लोगों को भजन बिठाने उसी हाल में गये। सब को भजन पर बिठा कर हजूर महाराज जी Washington Health Education & Welfare Department में टाक देने गये। यह टाक दोपहर 12 बजे से 1 बजे

तीसरी विश्व यात्रा

तक थी। एक घंटे का रास्ता था। इस कारण 11 बजे घर से रवाना हुए। वहां पर मानव केंद्र के संबंध में भी हजूर महाराज जी ने बताया कि मुझे बचपन से ही किताबें पढ़ने का शौक था। मैंने 300 के करीब महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़े हैं। मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि पहले Man-making (मानव को सचमुच मानव बनाना), दूसरा Man-service (मानव सेवा) व तीसरा Land service (भू-सेवा), यह सब किताबों का निचोड़ है। Man Making के लिए रुहानी सत्संग है, जिस में सदाचारी जीवन व अन्तर नाम से जुड़ना, यह काम 1948 से चल रहा है। इस के साथ-साथ अब Man Service (मानव सेवा) के लिए एक मानव केन्द्र (Man Centre) देहरादून में बनाया गया है व दूसरा बड़ौदा से कोई 40 मील दूरी पर बनेगा। उसकी बुनियाद रख दी गई है। आप सब को मानव केन्द्र के बारे में पता है। वहां के लोगों को हजूर महाराज जी ने अच्छी तरह समझाया। 1.30 बजे वहां से हजूर महाराज जी मि. शर्मा के घर गये क्योंकि रात को जार्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी में सत्संग था। रास्ते में राष्ट्रपति भवन (White House), सर्वोच्च न्यायालय व अन्य कई सरकारी इमारतें आईं। 2 बजे हजूर वापस शर्मा जी के घर पहुंच गये।

शाम 6.30 बजे तक हजूर महाराज जी शर्मा जी के घर ठहरे। वहां भी लोग आ गये थे। जार्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी के चांसलर ने हजूर महाराज जी का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि हजूर महाराज जी दुनिया में प्रभु का काम करने आये हैं। हजूर महाराज ने फिर अपने विद्यार्थी जीवन का हवाला दिया कि विद्यार्थियों के बीच मुझे अपना वह जीवन याद आ जाता है। इन्सान जीवन में कई बातें सीखता है तो कई बातें अनसीखी भी करता है। इन्सानी जीवन के दो पहलू हैं: (1) अन्तरीय,

ज्ञानी जी का दसवां पत्र

(2) बाहरी। दोनों में इन्सान को पूर्ण बनना चाहिये। एक आदमी ने कहा कि पवित्र जीवन बनाना नामुमकिन है। हजूर महाराज जी ने जवाब दिया कि दुनिया में कोई बात नामुमकिन नहीं। 'जहां चाह वहां राह।' अगर इन्सान हिम्मत करे तो रास्ता भी बन जाता है। एक और व्यक्ति ने पूछा कि रुहानी तरक्की के लिये कितना वक्त लगता है? हजूर महाराज जी ने बताया, "No hard and fast rule, कोई पक्की बंदिश नहीं। जितनी नाम की कमाई ज्यादा, मन का फैलाव कम और जीवन की पवित्रता होगी, इन्सान उतनी जल्दी तरक्की कर सकता है।"

27 सितम्बर: सुबह 9 बजे अमरीकन लिजन हाल में भजन का प्रोग्राम था। दोपहर 2 से 3 तक Harward University School of Religions में टाक थी। Dr. Gandy, Head of the School of Religions ने हजूर महाराज जी का स्वागत किया। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि अगर मज़हब वाले Isms (वादों) के ऊपर आ जाएं, मुल्कों वाले मुल्कों के ऊपर आ जायें तो सब जगह शांति हो जाये। अब तो एक दूसरे को बुरा—भला बताने में और लड़ने में लगे हैं। इस लिए हमें अपनी धर्म पुस्तकों को खोजना पड़ेगा। धर्म पुस्तकों की सही Interpretation (व्याख्या) वही करसकता है जिस ने खुद अपने आप को जाना है। वही दूसरे की भी मदद कर सकता है। बुद्धि के लिहाज़ से नहीं बल्कि अमली तौर पर रास्ता दिखा सकता है। जिस ने आप अन्तर में प्रभु की ज्योति को प्रकट किया, वही दूसरे को ज्योति दिखा सकता है। परमात्मा को जिस ने देखा है वही दिखायेगा न। जो नाद स्वरूप है, वह नाद सुना सकता है, अन्तर में नाद से जोड़ देता है जिस की कमाई कर के जीव सही नज़री व प्रभु—प्राप्ति के रास्ते पर चलने लग पड़ता है। उस के बाद वाशिंगटन अखबार का प्रतिनिधि हजूर महाराज जी के पास

तीसरी विश्व यात्रा

आया। उस ने रुहानी सत्संग मानव केन्द्र तथा इस विश्व यात्रा के बारे में भी सवालात किये। हजूर महाराज जी ने उसे समझाया कि रुहानी सत्संग मानव केन्द्र क्या है। शाम को 8 से 9 बजे तक वियाना कम्यूनिटी सेंटर में सत्संग था। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि जब से हम प्रभु से बिछुड़े हैं अभी तक अपने घर वापस नहीं पहुंचे हैं। संत सत्गुरु जीव को अपने निज-घर वापस पहुंचाने में मदद करते हैं परन्तु इन्सान दुनिया व दुनिया की वस्तुओं में इतना गलतान (लम्पट) हो गया कि वह अपने आप को, अपने जीवन आधार को (जो इस दुनिया का चलाने वाला है) भी भूल गया है। जब तक हमारी आत्मा वापस प्रभु की गोद में नहीं पहुंचती तब तक जीव सुखी नहीं हो सकता।

28 सितंबर: सवेरे भजन बैठने का प्रोग्राम था। शाम को 4 से 5 का प्रोग्राम नहीं था। इस लिए ये लोग खन्ना जी के घर महाराज जी के दर्शनों को आये थे। रात्रि को ओकटन हाई स्कूल में टाक थी। यहां हजूर महाराज जी ने तीन पहलू—(1) सत्तनाम (2) सत्संग, एवं (3) सत्गुरु के मज़मून को खोल कर पेश किया।

30 सितंबर: सवेरे नामदान का प्रोग्राम था। 24 मर्दों व बीबियों ने नामदान लिया। हजूर महाराज जी की दया से हर एक को अंतर में ज्योति और धुनि की पूंजी मिली। दिन में कई लोग महाराज जी के दर्शनों के लिए खन्ना साहब के घर आये। शाम को फिर ओकटन हाई स्कूल में सत्संग हुआ। इस में हजूर महाराज जी ने आध्यात्मिक विद्या क्या है? को खोल—खोल कर लोगों के सामने पेश किया।

1 अक्तूबर: सवेरे भजन के प्रोग्राम के बाद Farewell talk थी क्योंकि शाम को हजूर महाराज जी ने Charlotte, (New

ज्ञानी जी का दसवां पत्र
Caroline) जाना था। सारा दिन ही लोग मिलने व दर्शन करने हजूर महाराज जी के पास आते रहे। कई लोग तो हजारों मीलों की यात्रा कर महाराज जी के दर्शन व सत्संग सुनने आये हुए थे। कई वापस जाने की तैयारी में थे व कई सुबह रवाना हो चुके थे। कुछ लोग Charlotte जाने की तैयारी में थे। जिस तरह जर्मनी में Mr. Franko हजूर महाराज जी को सत्संग आदि प्रोग्राम की जगहों पर ले जाता था और फिर अगले शहर जा कर हजूर महाराज जी को मिल जाता था इसी तरह यहां Mr. James Nickolson, जहां हजूर महाराज जी ने जाना होता था, कार लेकर खड़ा रहता था व आगे पहुंच जाता था, वह Charlotte भी आया है। एक लड़का कोई 10–12 साल का है। अपने माता पिता के साथ कार से आया था। जहां भी महाराज जी ने जाना होता हजूर महाराज जी की कार के आगे कार चलाता व रास्ता दिखाता था। जब हजूर महाराज जी की कार खड़ी होती वह लड़का अपनी कार से निकल कर दौड़ कर हर बार महाराज जी की कार का दरवाजा खोलता था। दो दिन हुए उस ने पगड़ी बांध ली। मुझे कहता था कि मुझे सरदार बनना है। मैंने उसे बताया कि तुम जिस समाज में पैदा हुए हो उसी में रह कर हजूर महाराज जी की बख्शी धुन को सुनो। वे लोग कहते थे कि हम भी भारत आएंगे। इन लोगों में प्रेम और सेवा भाव बहुत है, खुशी—खुशी तन—मन—धन से संगत की सेवा करते हैं, भोजन भी बनाते हैं।

सारा दिन मिलने जुलने वालों का तांता लगा रहा। शाम को 7 बजे हजूर महाराज जी Mr. Michael (Smiling) की कार में बैठ कर हवाई अड्डे पर पहुंचे। वहां कई लोग पहले से ही पहुंच चुके थे। थोड़ी देर बैठने के बाद जहाज़ के चलने का समय हो गया। हजूर महाराज जी ने हाथ जोड़ कर सब से विदा ली और जहाज़ पर चढ़ने को चल दिये। श्री

तीसरी विश्व यात्रा
खन्ना व मिसेज़ खन्ना भी साथ छोड़ने आये। Mr. & Mrs Serrine
कार में Charlotte गये। आगे का हाल फिर लिखा जाएगा।

हजूर महाराज जी की सेहत ठीक है। लोगों को आम फैज़ (लाभ)
मिल रहा है। सारी संगत को हजूर महाराज जी का प्यार व शुभ भावना
दें। भजन सिमरण की ताकीद करनी है।

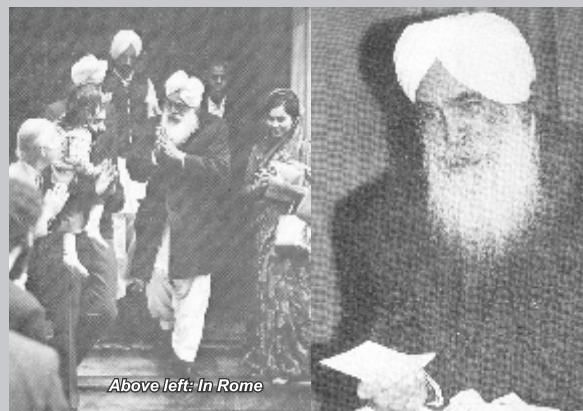
शुभ इच्छा व नम्रता सहित,

दास

भगवान् सिंह ज्ञानी



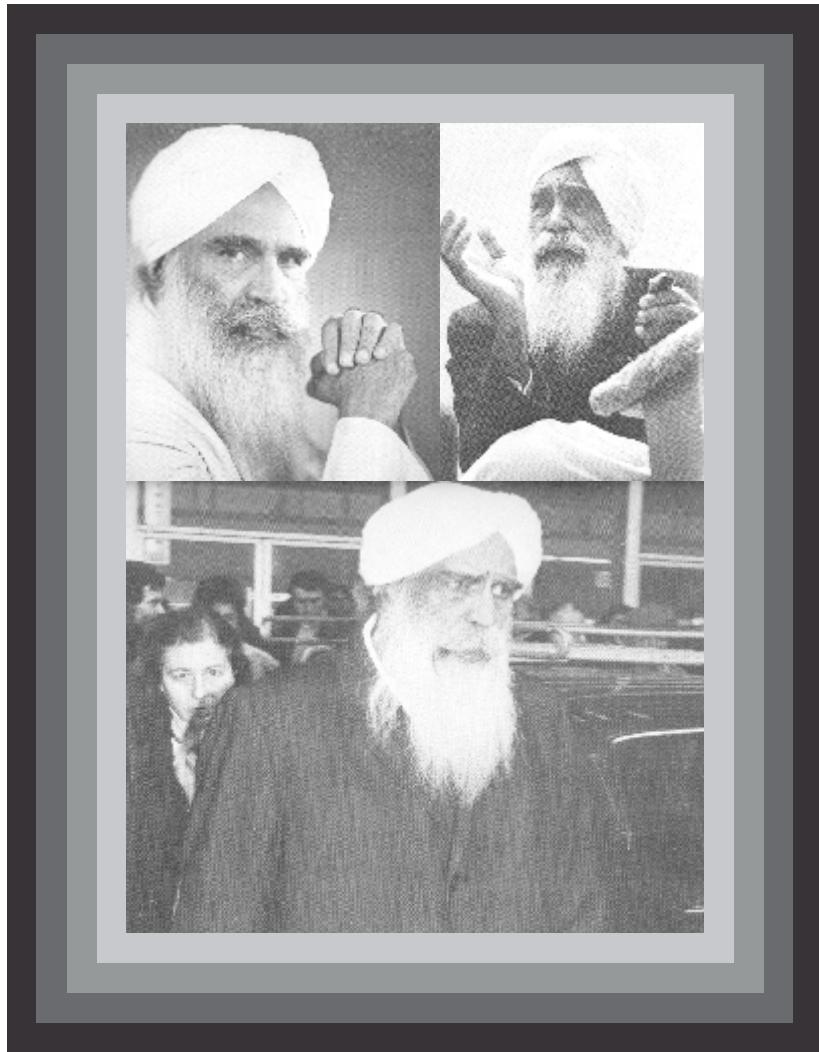
At Birch State Park, Ft. Lauderdale.



Above left: In Rome



X





Upper: At Sharma's Farm in Bowling Green, Virginia. Amar Nath Sharma's and his wife, Anusuya are to the left and right of the Master.



Left: Master's with some disciples who contributed to the satsang work in the West.

24. हजूर महाराज जी का सातवां पत्र (संदेश)

संतबाणी आश्रम, फ्रेंकलिन
18 अक्टूबर, 1972

हजूर महाराज जी ने फरमाया है कि यह बात सत्संग में सब को सुना दो कि वहां से (अर्थात् भारत से) भाई व बहन बहुत—सी चिटिठयां लिखते हैं। जो आज तक चिटिठयां आई हैं उन का जवाब भेज दिया है। आगे जिस को बहुत ज़रूरी काम हो तब लिखें, वरना न लिखें क्योंकि दिन में सत्संग, भजन—सुमिरण का प्रोग्राम और मिलने वाले, सफर और साथ में एक जगह पर सिर्फ दो—तीन दिन का प्रोग्राम होता है, इस लिए वक्त कम मिलता है। रात को भी देर तक काम करना पड़ता है, रात एक—दो बज जाते हैं। कोई ख़ास ही बात हो जिस के लिये दो मास तक ठहरा न जा सके तब तो लिखना ठीक है वरना चिटिठयां न लिखें। यह सब सैंटरों वालों को भी लिख दें।

हजूर महाराज ने आगे संगत के नाम यह सन्देश भेजने को फरमाया है “मुझे आप सब प्यारे हो। मेरे दिल में आप सब के प्यार की कद्र है। उदासी के लिए भजन व सुमिरण करें। इस तरह उदासी दूर होती है और अन्तर में एक ख़ास किरम की खुशी की रौ चल पड़ती है। आप सब को मेरी तरफ से प्यार पहुंचे। अपना भजन सुमिरण करते रहें और सत्संग पर बाकायदा आते रहें। मालिक दया करेगा। बाकी जहां इतना वक्त गुज़र गया है वहां थोड़ा और भी गुज़र जाएगा। जब मैं इधर का प्रोग्राम खत्म कर के उधर आऊंगा आप सबके दर्शन करके खुशी होगी।”

हजूर महाराज जी सेवा में,

दास—हरचरण सिंह

25. ज्ञानी जी का ग्यारहवां पत्र

न्यू जर्सी,

7 अक्टूबर, 1972

माननीय ताई जी,

पिछली चिट्ठी से आगे अब Charlotte N.C. के प्रोग्राम बारे हालात लिख रहा हूं। पहली अक्टूबर शाम को सात बजे के करीब हजूर महाराज जी ने वर्जीनिया में खन्ना जी के मकान के सामने लान में बैठ कर संगत को दर्शन दिए और परमार्थ के बारे में बातें करते रहे। सात बजे हजूर महाराज और उन के साथ दस—बारह सत्संगी भाई माईकल साहब की बहुत बड़ी स्टेशन वैगन में बैठ कर आधे घण्टे में एयरपोर्ट पहुंच गये। वहां नैशनल एयरपोर्ट में एक घण्टा बैठ कर हवाई जहाज़ में बैठ गये। हजूर के साथ श्री खन्ना, उनकी पत्नी, श्री व श्रीमति रीनो सीरीन (जो साथ ही दौरा कर रहे हैं) और अन्य दूसरे सत्संगी हवाई जहाज़ में बैठ गये जो पचास मिनट में कारलोटे पहुंच गया। ईस्टर्न कम्पनी के इस जहाज़ में सौ सीटें थीं। कारलोटे में बहुत बड़ी संख्या में लोग दर्शनों के लिए एयरपोर्ट पर आए हुए थे। वहां से हजूर श्री चार्लस फुलचर के मकान पर, जहां उनके ठहरने की व्यवस्था की गई थी, आधे घंटे में पहुंच गये। मिस्टर फुलचर एक बहुत बड़े विद्वान प्रोफेसर हैं। उन्होंने कई किताबें लिखी हैं। वह इस बात पर बहुत खुश थे कि हजूर महाराज जैसी हस्ती ने उन के मकान में चरण डाले हैं। मिस्टर फुलचर स्वयं बाहर होटल में सोते थे ताकि हजूर महाराज को असुविधा न हो। फिर उन से कहा गया कि वह अपने घर ही सोया करें।

ज्ञानी जी का ग्यारहवां पत्र

कारलोटे में 2 से 5 अक्तूबर तक अर्थात् चार दिन का प्रोग्राम था जिस में हर रोज़ सुबह 9 बजे, नये व पुराने नाम लेवाओं को साझथ पार्क आडिटोरियम या फिर ग्रेट हाल में जो मार्यस पार्क बैपिटिस्ट चर्च में है, वहां भजन पर बिठाया जाता था। जैसे वहां भारत में हजूर महाराज जी भजन बिठाने के बाद हरेक से अन्तरीय अनुभव के बारे में हाथ खड़े करवा कर पूछते हैं इसी प्रकार यहां भी पूछते हैं कि किस को नूरी स्वरूप अन्तर में आया और किस को सूरज, चांद, तारे, आसमान, रोशनी, सफेद, पीली या लाल आई है, वे सब हाथ खड़े करें। हर रोज़ तीन से पांच बजे तक हजूर महाराज लोगों की मुश्किलें, वे भजन—सुमिरण में तरक्की के बारे में हों या दुनियावी (सांसारिक) मामलों के सम्बन्ध में हों, हल करने के लिये लोगों को टाइम देते थे। रात को हर रोज़ नियमित रूप से सत्संग प्रवचन होता था।

2 अक्तूबर: सुबह भजन बिठाने से पहले हजूर महाराज ने फरमाया कि ध्यान का मतलब है अपनी तवज्जो को बाहर से हटा कर अन्तर नाम के साथ जोड़ना जिस की नकद पूँजी दीक्षा के समय पहले दिन ही हरेक को दी जाती है। नाम की इस पूँजी को बरकरार रखने और आगे तरक्की करने (अर्थात् इस पूँजी को बढ़ाने) के लिये हृदय की ज़मीन की तैयारी करनी पड़ती है। वह तैयारी क्या है? नेक—पाक—सदाचारी संयम का जीवन। यह काम इसी जीवन में इंसान कर सकता है। फिर सब को भजन बिठा दिया गया। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि एक दिन हम सब परमात्मा की गोद में थे। जब से हम वहां से बिछुड़ कर इस दुनिया में आए हैं अभी तक वापस नहीं पहुंचे। दूसरी बात यह कही कि महापुरुष दुनिया में आ कर लोगों को बताते हैं कि परमात्मा है। यह पहला सबक है जो पूर्ण पुरुष दुनिया को देते हैं। गुरु नानक साहब जब अभी

तीसरी विश्व यात्रा
 छोटे थे तो पिता ने उन्हें पढ़ने के लिए स्कूल भेजा। अध्यापक ने उन्हें
 अलफ बे (उर्दू की वर्णमाला) पढ़ाना शुरू किया तो उन्होंने फरमाया:
 अलफ अल्लाह नूं याद कर गफलत मनों विसार।

अब सवाल पैदा होता है कि क्या हम परमात्मा को देख सकते हैं? हम धर्मस्थानों में जाते हैं, धर्मग्रन्थों को पढ़ते हैं—हर कोई अपने—अपने धर्म के ग्रन्थों को —ये सारे शुभ कर्म हैं लेकिन हम उस प्रभु को बाहरी क्रियाओं—अर्थात् पूजा—पाठ आदि द्वारा नहीं देख सकते। परमात्मा का अनुभव करना है आत्मा ने। पहले हमें अपने आप को, अपनी आत्मा को जानना होगा। इस लिये महापुरुषों ने, जो भी आज तक आए, यह कहा कि अपने आप को जानो। अपने आप को जानने के बाद हम मालिक को जान सकते हैं। रात को फिर 8 से 9 बजे तक प्रवचन था। यह प्रवचन मार्यस पार्क बैपटिस्ट चर्च के बड़े हाल में हुआ। हजूर महाराज जी ने अपने प्रवचन में, “आध्यात्मिक विद्या क्या है?” इस विषय को खोल—खोल कर समझाया। सारा हाल खचाखच भरा हुआ था। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि spirituality और spiritism में बड़ा फर्क है। Spiritiuality अर्थात् रुहों (प्रेतात्माओं) को बुलाने, बीमारियों को ठीक करने, दूसरों पर अपना असर डालने या जादू आदि करने का नाम नहीं। रुहानियत क्या है? अपनी आत्मा को अन्तर्मुख परमात्मा की इज़हार में आई ताकत (करन—कारण प्रभु—सत्ता) के साथ जोड़ना जिस की नकद पूँजी अर्थात् व्यक्तिगत अनुभव पूर्ण पुरुष हरेक नामलेवा को सामने बिठा कर पहले दिन ही देते हैं।

3 अक्तूबर: सुबह चर्च के बाड़ में हजूर महाराज जी ने लोगों को भजन बिठाया। बाद में हरेक से पूछा गया कि उन्हें अन्तर में क्या दिखाई

ज्ञानी जी का ग्यारहवां पत्र दिया। फिर प्रवचन हुआ जिस में हजूर महाराज जी ने बताया कि परमात्मा प्रेम है। आत्मा उस की अंश है, यह भी प्रेम स्वरूप है और परमात्मा को मिलने का ज़रिया (माध्यम) भी प्रेम है। दुनिया का प्रेम जो है, उस को मोह कहते हैं। प्रेम कुरबानी देना जानता है। आगे चल कर हजूर महाराज जी ने फरमाया कि दो वक्तों अर्थात् अवसरों पर परमात्मा का अनुभव होता है, एक मरते समय (जो हरेक को होता है) और दूसरे जिस्म—जिस्मानियम अर्थात् मन इन्द्रियों से ऊपर आ कर (अभ्यास द्वारा) हम देखते हैं कि हां, कोई ताकत काम कर रही है। किसी पूर्ण पुरुष की कृपा से हम इसी जीवन काल में जिस्म—जिस्मानियत से ऊपर आ कर उस परिपूर्ण ताकत जिस के इज़हार (अभिव्यक्ति) के दो स्वरूप हैं—ज्योति और नाद—उस को अनुभव कर सकते हैं। अनुभव की इस पूंजी की रोज़ कमाई (अर्थात् अभ्यास) कर के एक दिन हम मालिक से मिल सकते हैं। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि दो प्रकार की विद्यायें हैं, एक अन्तरीय, दूसरी बाहरी, एक पराविद्या, दूसरी अपराविद्या। अपराविद्या अर्थात् मन—इन्द्रियों के घाट पर किये जाने वाली क्रियाओं और साधनों से अन्तर में प्रकाश और नाद का अनुभव नहीं हो सकता। ये नेक कर्म ज़रूर हैं, नेक फल मिलेगा मगर आना—जाना बना रहेगा। इस से जन्म—मरण खत्म नहीं होगा। अपराविद्या या शरीयत हरेक समाज की अपनी—अपनी है परन्तु पराविद्या अर्थात् अन्तर की विद्या सब समाजों की एक ही है जिस का अनुभव पिण्ड अर्थात् स्थूल शरीर से ऊपर आ कर किसी महापुरुष की कृपा से ही मिलता है। पूर्ण पुरुष कहते हैं कि हम ने उस मालिक को देखा है। जिस ने देखा है वह दूसरे को दिखा भी सकता है।

टाक के बाद खन्ना जी ने हजूर महाराज जी से अमरीका के ग्रुप लीडरों के साथ ग्रुप फोटो खिंचवाने की प्रार्थना की। फोटो के बाद हजूर

तीसरी विश्व यात्रा

महाराज जी मिस्टर फुलचर के घर आ गये। दोपहर को बहुत लोग हजूर महाराज जी के निवास स्थान के आगे इकट्ठे हो गये। पहले उन्होंने अपनी बोली में भजन गाये, फिर सवाल—जवाब का सिलसिला शुरू हुआ। एक सवाल यह था कि बाज़ार की बनी हुई चीज़ें खानी चाहिएं कि नहीं। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि हर चीज़ का असर मन पर पड़ता है। जैसा अन्न तैसा मन। बेहतर यही है कि घर की बनी चीज़ें या घर बना कर खाओ। एक और ने सवाल किया सत्युरु से हम कैसे प्यार करें? हजूर महाराज जी ने फरमाया जैसे हम अपने परिवार से, स्त्री और बच्चों से प्यार करते हैं ऐसे ही अगर हम सत्युरु के प्यार को बढ़ा लें तो सत्युरु का हमारे साथ प्यार और भी बढ़ेगा। असल में पहले सत्युरु ही हम से प्यार करता है। शिष्य का गुरु से प्यार Reciprocal अर्थात् उस प्यार के जवाब में है। रात फिर 8 से 9 बजे तक मायर्स पार्क हाई स्कूल में सत्संग हुआ। विषय था, “खुदशनासी अर्थात् आत्मानुभव और खुदा शनासी अर्थात् प्रभु अनुभव।” हजूर महाराज जी ने बताया कि परमात्मा को पाने के लिये जीवन की पवित्रता परमावश्यक है अर्थात् नेक—पाक—सदाचारी जीवन रुहानयित की पहली सीढ़ी है। परमात्मा को पाने के लिए पहले आत्मा को जानना होगा। इस वक्त हम मन—इन्द्रियों से आज़ाद हो कर अर्थात् उन से ऊपर आ कर अपने आप को अर्थात् आत्मा को जानें तभी हम परमात्मा को जान सकते हैं।

4 अक्तूबर: रोजाना की तरह सब लोग भजन बैठे। उस के बाद नार्थ कैरालिना की यूनिवर्सिटी के एक बड़े हाल में हजूर महाराज जी ने प्रवचन किया। हजूर के निवास स्थान से एक घंटे का रास्ता था इस लिये ग्यारह बजे वहां से चले। रास्ते में हलकी वर्षा हो रही थी। यूनिवर्सिटी वालों ने महाराज जी का भव्य स्वागत किया। हजूर महाराज जी ने वहां

ज्ञानी जी का ग्यारहवां पत्र
जीवन रहस्य विषय को खोल कर समझाया कि कैसे जीते—मरने का भेद
जानकर अर्थात् जीते—जी मन इन्द्रियों से ऊपर आ कर इंसान हमेशा की
जिन्दगी (अमर जीवन) को प्राप्त कर सकता है। एक घंटे का सत्संग था
जिस के बाद हजूर महाराज जी वापस अपने निवास स्थान को लौट
आए। शाम 4 बजे से फिर मिस्टर फुचलर के घर के सामने लान (घास के
मैदान) पर लोग इकट्ठे होने शुरू हो गये। हजूर महाराज जी ने उन्हें
संबोधन करते हुए फरमाया कि आगे आप मुझ से सवाल पूछते हो, आज मैं
आप से पूछता हूं। सब ने कहा, “ठीक है, पूछिये।” हजूर महाराज जी ने
कहा अगर वक्त जल्दी गुज़रता जाए तो उस को कैसे पकड़ सकते हैं?
फिर आप ही सवाल का जवाब देते हुए फरमाया कि सत्गुरु की प्रेम भरी
याद रखो, उस को न भूलो। इस प्रकार वक्त लम्बा किया जा सकता है।
जो नाम की कमाई करते हैं उन का हिसाब मरने के बाद धर्मराज नहीं
करता, सत्गुरु आप उन का हिसाब करते हैं। जो लोग सत्गुरु के वचनों
के अनुसार नाम की कमाई करते हैं वे दोबारा जन्म में नहीं आयेंगे। रात
को कोई प्रोग्राम नहीं था।

5 अक्तूबर: सुबह सवेरे हजूर महाराज जी ने परमार्थाभिलाषियों
को नामदान दिया। नामदान मिस्टर फुलचर के मकान पर दिया गया।
पुराने सत्संगियों को हजूर महाराज ने साऊथ पार्क आडीटोरियम में
अलग से भजन बिठा दिया। बारह बजे के करीब हजूर महाराज जी
नामदान दे कर वापस अपने कमरे में आए। बाद दोपहर दो बजे के करीब
हजूर महाराज ने अन्तिम प्रवचन किया जिस में कहा कि जैसे हवाई
जहाज़ में बैठने के लिए एयरपोर्ट जाना पड़ता है, इसी प्रकार रुहानी
सफर अर्थात् आध्यात्मिक यात्रा के लिए मन—इन्द्रियों से ऊपर आना
पड़ता है और साथ में बहुत कम सामान ले जा सकते हैं। हवाई जहाज़

तीसरी विश्व यात्रा

की यात्रा के समान आध्यात्मिक यात्रा में घर—बार, माल—खज़ाना, बुद्धि—विचार, हद यह कि अपने शरीर तक को छोड़ जाना पड़ता है। एक बार हवाई—जहाज़ पर बैठ जाओ और जहाज़ चल पड़े तो सफर अपने आप कट जाता है। आप को उस के लिए कुछ भी नहीं करना पड़ता। हवाई जहाज़ पायलट (विमान चालक) के निर्देशन से अपने आप चल पड़ता है। ऐसे सत्गुरु के निर्देशन से जीव सहज ही अपने निज घर पहुंच जाता है। सत्संग खत्म होने पर हजूर वापस लौटे। फिर शाम के साढ़े पांच बजे फिलाडेल्फिया जाने के लिए डगलस एयरपोर्ट रवाना हुए। रास्ते में हावड़ जानसन का बहुत बड़ा होटल है जहां एक बड़े बोर्ड पर लिख हुआ था ‘स्वागतम सन्त कृपाल सिंह जी’। एयरपोर्ट में बहुत लोग दर्शन के लिए खड़े थे। इन में दस—बारह हजूर महाराज के साथ आगे फिलाडेल्फिया जाने के लिए तैयार हो कर आए थे। जहाज़ 5 बज कर पचास मिनट पर चला और डेढ़ घण्टे में फिलाडेल्फिया पहुंच गया। आगे का हाल वहां से लिखेंगे।

दास

ज्ञानी भगवान सिंह

26. ज्ञानी जी का बारहवां पत्र

संतबाणी आश्रम

19 अक्टूबर, 1972

माननीय ताई जी,

अब आप को फिलाडैलफिया शहर में हजूर महाराज के प्रोग्राम के बारे में लिखा जा रहा है। फिलाडैलफिया तक जितना सफर था वह ज्यादातर हवाई जहाज़ से तय किया गया। चारलोटे से शाम साढ़े पांच बजे हम चले और साढ़े सात बजे फिलाडैलफिया पहुंच गये। यह ईस्टन एयरवेज का सौ सीटों वाला जहाज़ था। हजूर महाराज को सब से पहले जहाज़ में प्रवेश करने दिया गया (जिस से वे मनचाही सीट पर बैठ सकें) और साथ जाने वाले सत्संगीजन भी जब अपनी—अपनी सीट पर बैठ गये। तब दूसरे यात्रियों को अन्दर आने की इजाज़त मिली। फिलाडैलफिया में बहुत लोग हजूर महाराज के दर्शन और स्वागत के लिये हवाई अड्डे पर आए हुए थे। सब से मिल कर हजूर वारविक होटल पहंचे जहां उन के ठहरने का प्रबंध किया गया था। रात कई लोग हजूर के दर्शन और उन से बातचीत के लिए होटल में आए।

6 अक्टूबर: सुबह नौ बजे हजूर महाराज जी होटल की ऊपरी मंजिल में अपने कमरे से नीचे हाल में लोगों को भजन बिठाने गये। हाल खचाखच भरा हुआ था। शनिवार होने के कारण छुट्टी थी, इस लिये दूर दूर से लोग दर्शन और भजन के लिये आए हुए थे। दया—मेहर से सब को जिन में नये लोग भी शामिल थे, अन्तर में रोशनी आदि का अनुभव हुआ। हजूर ने उपस्थित लोगों से कहा कि भजन—सुमिरण में तरक्की के लिए

तीसरी विश्व यात्रा

सत्संग ज़रूरी है, इस से भजन करने के लिये उभार मिलता है। दूसरी सहायक चीजें हैं, रोज़ बाकायदा भजन—सुमिरण और जीवन की पड़ताल, जिस के लिए डायरियां दी गई हैं। दोपहर तीन बजे टैलीविज़न वाले आए, शाम को टी.वी. पर दिखाने के लिये प्रोग्राम की फ़िल्म लेने के लिये, उन्होंने हजूर से सवाल—जवाब किये, फ़िल्म ली। एक सवाल था, इंसान को स्थायी शान्ति कैसे मिल सकती है? हजूर महाराज जी के सहज सरल जचे—तुले जवाब सुन कर वे बहुत खुश हुए। शाम को साढ़े चार बजे से साढ़े पांच बजे तक हजूर महाराज जी ने नीचे हाल में एकत्रित लेगों को दर्शन दिये और थोड़ा प्रवचन भी किया। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि परमात्मा को मिलने के लिये इन चीजों की ज़रूरत है—पहली चीज़ है नम्रता। सेंट आगस्टन के कथानानुसार प्रभु के लिये प्रथम नम्रता, दूसरे फिर नम्रता और तीसरे नम्रता ज़रूरी है। पहले नम्रता हो तभी किसी महापुरुष के पास कोई जायेगा। दूसरे वहां जा कर भी नम्रता हो तभी कुछ हासिल करेगा। जो गिलास सुराही के नीचे होगा उसी में पानी भरा जा सकता है, सुराही के ऊपर जो गिलास होगा वह कैसे भरा जाएगा। अन्त में प्राप्ति के बाद वह कहता है, “हे मालिक, सब तेरी दया है।” नम्रता सन्तों का श्रृंगार है। जिस पेड़ को फल लगें वह झुक जाता है। हजूर महाराज ने मीठी ज़बान और नम्रता धारण करने का महत्व खोल खोल कर बयान किया। रात सात से आठ बजे तक फिर टाक थी जिस में हजूर ने फरमाया कि पूर्ण पुरुष लोगों को प्रभु से मिलाने के लिए दुनिया में आते हैं। वे आ कर बताते हैं कि मनुष्य जाति सब एक है। सब हम उस मालिक के बच्चे हैं। एक ही मानव परिवार के अंग हैं। सब को समान अधिकार प्रभु से मिले हैं। मनुष्य जीवन सर्वश्रेष्ठ योनी है क्योंकि इस में हम प्रभु से मिल सकते हैं। और सब योनियां भोग योनियां हैं। अब सवाल पैदा होता है,

ज्ञानी जी का बारहवां पत्र
क्या हम परमात्मा को देख सकते हैं? पूर्ण पुरुष कहते हैं कि हम ने
परमात्मा को देखा है। परमात्मा परिपूर्ण जो अभिव्यक्ति में नहीं आया, उस
को तो न किसी ने देखा, न देख सकता है। वह तो लय होने का मुकाम
है। जब वह होने में, अभिव्यक्ति में आया—“मैं एक से अनेक हो
जाऊँ”— उस में एक हिलोर उठी जिस से दो सूरतें पैदा हुईं, ज्योति या
प्रकाश और ध्वनि या नाद। इसी लिए कहा है कि परमात्मा ज्योति स्वरूप
है, वह नाद है जो घट घट में हो रहा है। उस को देखा भी जा सकता है,
सुना भी जा सकता है। इस मज़मून को हजूर ने खोल—खेल कर
समझाया। हाल में इतना रश था कि लोगों को बाहर खड़ा रहना पड़ा।

7 अक्तूबर: सुबह हजूर महाराज ने परमार्थाभिलाषियों को
नामदान दिया। बहुत सवेरे ही लोग नाम के लिए आने शुरू हो गये थे।
कुल 26 औरतों और मर्दों ने नाम लिया। सब को अपनी अपनी हृदय की
ज़मीन के अनुसार ज्योति आदि का अनुभव हुआ। दोपहर दो से तीन बजे
तक होटल के बाल रूम में आखिरी टाक थी। लोगों की इतनी भीड़ थी
कि कई लोग दीवारों के साथ लगे खड़े थे। बहुत से लोग घंटा भर पहले
ही आ कर सीटों पर बैठ गये, कइयों को बाहर बरामदे में बैठना पड़ा।
हजूर महाराज ने अपने प्रवचन में कहा कि इस दुनिया में आकर इंसान का
सब से बड़ा काम है कि वह मालिक को देखे। पूर्ण पुरुष बिछुड़ी हुई
आत्माओं को प्रभु से जोड़ने के लिये दुनिया में आते हैं। वे केवल बातें ही
नहीं करते बल्कि अन्तर में प्रभु अनुभव की पूँजी भी लोगों को देते हैं जिस
से प्रभु का थोड़ा रस पा कर जीव रोज़ कमाई (अभ्यास) कर के एक दिन
वापस प्रभु के धाम अर्थात् अपने निज धाम में पहुंच जाए। अब मैं शरीर
करके आप से दूर न्यूयार्क जा रहा हूँ प्रोग्राम के अनुसार। आप को अन्तर
रास्ता मिल चुका है, उस की रोज़ रोज़ कमाई करो और अन्तर तरकी

तीसरी विश्व यात्रा
करो। दिल से दिल को राह बनाओ, आप को हर तरह मदद मिलेगी। मेरा
आर्शीवाद आप के साथ है।

यहां एक परिवार दर्शनों के लिये आया, एक स्त्री, उस की दो
लड़कियां और एक लड़का। उस का पति मर चुका था। हजूर महाराज
जी ने उस को ढारस दी। लड़का हजूर महाराज जी की बहुत ही सुन्दर
फोटो बना कर साथ लाया था। हजूर महाराज ने हस्ताक्षर कर फोटो उस
को वापस कर दी। शाम को वर्षा में, जो रास्ते में और तेज़ हो गई, हजूर
महाराज कार से न्यूयार्क रवाना हो गये। सारा रास्ता पानी बरसता रहा।
न्यूयार्क के रास्ते में एक सुरंग पार करनी पड़ती है। शनिवार होने के
कारण इतनी ट्रैफिक थी कि रात भीगती बरसात में एक सत्संगी के घर
जा कर ठहरना पड़ा। जहां हजूर महाराज रात ठहरे उस घर वालों ने
बताया कि हम चार साल से आप की राह देख रहे हैं। हर साल मकान को
रंग रोगन करते हैं कि हजूर महाराज हमारे घर आयेंगे। आज हमारी यह
अभिलाषा पूरी हुई है। रात वहां काटी और सुबह साढ़े आठ बजे वहां से
न्यूयार्क को चल पड़े और आधे घंटे में हिल्टन होटल पहुंच गये। आगे
फिर।

दास

ज्ञानी भगवान सिंह

27. हजूर महाराज जी का आठवां पत्र
(जीवन सिंह जी के नाम)

कैम्प मांट्रियाल

23 अक्टूबर, 1972

प्यारे जीवन सिंह,

मुझे को तुम्हारे दो खत तीन अक्टूबर के सत्संग के बारे में मिल गये थे। मेरी गैर-हाज़री में ताई जी और दूसरे सज्जन श्री हजूर महाराज जी की तालीम को फैलाने के लिये जो कोशिश कर रहे हैं, उस की मेरे दिल में कद्र है। फिल्म और सत्संग जो मुख्तलिफ जगह पर हो रहे हैं, उस से उम्मीद है लोग फायदा उठायेंगे।

मुझे खुशी है कि बहुत प्रेमी सत्संग पर आते हैं और भजन-सुमिरण में बाकायदा वक्त दे रहे हैं। यही एक काम है जो हर बहन-भाई को करना चाहिये और मैं खुश हूंगा कि वे सब इस रास्ते पर तरकी कर रहे हैं।

मेरी तरफ से सब आश्रम वालों, सेवादारों और दूसरे भाइयों को प्यार पहुंचे।

कृपाल सिंह

28. ज्ञानी जी की तेरहवां पत्र

शिकागो,

29 अक्टूबर, 1972

माननीय ताई जी,

हजूर महाराज जी की दया से सब राजी होंगे ।

8 अक्टूबर: हजूर महाराज जी सवेरे नौ बजे न्यूयार्क के हिल्टन होटल में पहुंचे जहां उन के ठहरने की व्यवस्था की गई थी। थोड़ी देर वहां ठहर कर फिर हंटर्ज कालेज में लोगों को भजन बिठाने के लिये गये। नये—पुराने सत्संगी सब को भजन बिठाया। भजन में जिन की रुकावट थी हजूर महाराज की दया—मेहर से सब दूर हो गई। सब को अन्तर में रोशनी, सूर्य, चन्द्रमा, तारे, गुरु स्वरूप आदि का अनुभव हुआ। इस के बाद बाहर से आने वाले मुलाकातियों से बातचीत की और उन की समस्यायें हल कीं। कोई साढ़े ग्यारह बजे हजूर वापस होटल में आए। यह बहुत बड़ा और नामी होटल है जिस की इक्कीसवीं मंज़िल पर हजूर महाराज का कमरा है। शाम 5 बजे होटल के बड़े हाल में हजूर महाराज ने सवालों के जवाब दिए। ज्यादातर सवाल भजन में तरक्की के बारे में थे। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि रोज़ाना भजन—सुमिरण करने और नियमित रूप से जीवन की पड़ताल अर्थात् बिना नागा डायरी भरने से आगे रुहानी तरक्की हो सकती है।

रात न्यूयार्क के हंटर्ज कालेज में हजूर महाराज की पहली टाक हुई। यहां पर बहुत बड़ा हाल है जिस के ऊपर गैलरी है। सारा हाल लोगों से भरा हुआ था और बहुत लोग बाहर भी खड़े थे। अपने प्रवचन में हजूर

ज्ञानी जी का तेरहवां पत्र

महाराज ने समझाया कि रुहानियत क्या है? रुहानियत सिर्फ अपने आप को जानने और प्रभु को जानने का नाम है। परमात्मा को जानना आत्मा के द्वारा ही हो सकता है। शास्त्र कहते हैं, “वह प्रभु न इन्द्रियों से जाना जा सकता है, न मन से, न बुद्धि से, न प्राणों से। उस को अनुभव करना है आत्मा ने। जब तक आत्मा मन-इन्द्रियों से ऊपर नहीं आती यह अपने आप को नहीं जान सकती और जब तक वह (आत्मा) अपने आप को न जाने, अपने जीवनाधार परमात्मा को नहीं जान सकती। इस लिए सब महापुरुष कहते हैं, अपने आप को जानो। अपने आप को जानने से ही परमात्मा को जान सकते हो। रुहानियत रुहों को, जो शरीर छोड़ गई हैं, बुलाने का नाम नहीं। आप उन को बुला सकते हो, उन का सन्देश ले सकते हो, लेकिन वहां तक जहां तक वे हैं, आगे नहीं। रुहानियत जिरम-जिरमानियत से ऊपर आ कर, मन-बुद्धि से भी ऊपर जा कर परिपूर्ण प्रभु-सत्ता को अनुभव करने का नाम है। सत्संग प्रवचन में इस मज़मून को खोल खोल कर हजूर ने समझाया। सत्संग के बाद हजूर वापस होटल में आये। वहां कुछ मुलाकातियों से बातचीत करने के बाद लिखने-पढ़ने के काम में व्यस्त हो गये।

हर रोज़ सुबह सवेरे हजूर महाराज लोगों को विधि समझा कर भजन बिठाते हैं और हाथ खड़े करवा कर अन्तर्मुख अनुभव के बारे में पूछते हैं। फिर बातचीत और सवाल जवाब में लोगों की घरेलू और भजन संबंधी समस्याओं और कठिनाइयों को दूर करते हैं। एक बीबी हजूर महाराज के पास आई जो ज़ार-ज़ार रो रही थी, कहने लगी, मेरी माता गुज़र गई है। हजूर महाराज ने उसे ढारस दी और समझाया कि जन्म-मरण मालिक के हुक्म से होता है। उस के हुक्म के आगे सिर झुकाना पड़ता है। हमें रोना नहीं चाहिये, इस से मृतक आत्मा को दुख

तीसरी विश्व यात्रा

होता है। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि प्रभु दिवंगत आत्मा को शान्ति दें। हमें मालिक की रजा में, हरि इच्छा में रहना चाहिए। एक आनन्दमार्गी हजूर के पास आया। कहने लगा, “मुझ को अन्तर में कुछ भी दिखाई नहीं देता, न ही मेरी कोई रुहानी तरक्की है। आप मुझे guide करो, मेरा मार्गदर्शन करो।” हजूर महाराज ने फरमाया, “तुम पहले अपने रुहानी गुरु से कहो कि वह तुम्हें अन्तर्मुख अनुभव करा दे। वह करा दे तो ठीक, न कराये तो फिर ऐसे पुरुष को तलाश करो जो तुम को यह चीज़ (अनुभव का दान) दे सके।”

शाम साढ़े तीन से साढ़े चार बजे तक नीचे होटल के बड़े हाल में हजूर ने लोगों को दर्शन दिए और सवाल—जवाब हुए और जिन की जो मुश्किल होती है, हल कर देते हैं। एक रूसी भाषा का विद्वान् हजूर से मिलने आया और Sprituality:What it is? का रूसी भाषा में अनुवाद हजूर महाराज को पेश किया। हजूर महाराज ने फरमाया कि इस पुस्तक के अनुवादक ने बड़ा नेक काम किया है। अब रूस के लोग भी इस तालीम से फायदा उठा सकते हैं।

एक आदमी ने हजूर महाराज जी से सवाल किया कि क्या आप क्राईस्ट यानी इशु मसीह का अवतार हैं? हजूर महाराज जी ने फरमाया, “नहीं। क्राईस्ट पावर कहो, गाड़ पावर कहो, गुरु पावर कहो (सब एक ही है), वह समय अनुसार किसी इंसानी पोल पर, कभी किसी में, कभी किसी में काम करती रहती है। अब भी उसी प्रभु सत्ता कर के लोगों को फायदा मिल रहा है।”

11 अक्तूबर: सुबह हजूर महाराज जी ने परामार्थाभिलाषी नर—नारियों को नामदान दिया। कुल 86 नर नारी नाम लेने बैठे। हरेक को अंतर में ज्योति, सूर्य, चांद, सितारे, गुरु स्वरूप के अनुभव की पूंजी

ज्ञानी जी का तेरहवां पत्र
अपनी—अपनी हृदय की ज़मीन के अनुसार मिली। दोपहर के बाद हजूर नीचे हाल में लोगों को दर्शन देने गये तो वहां ‘दर्शन’ की व्याख्या की कि दर्शन क्या है? दर्शन का मतलब है कि तुम्हारे और सत्गुरु के बीच तीसरा कोई न हो। तुम रहो या वह। पूर्ण पुरुष जब संसार में आते हैं तो हज़ारों लोग उन का दर्शन करते हैं लेकिन हर कोई फायदा नहीं उठाता। आंखें खिड़कियां हैं जिन से रुह बाहर झांकती है। *Eyes are the windows of the soul.* अगर तुम्हारे और सत्गुरु के बीच अन्य कोई नहीं तो आप सत्गुरु की रुहानियत की रौ से, उस के दिव्य मण्डल से फायदा उठा सकते हैं। अपना सारा ध्यान सत्गुरु की आंखों के बीच टिकाओ, जिस्म में नहीं। जितना ध्यान टिकेगा उतना रुहानी असर ज्यादा होगा। अगर आप की दिल से दिल को राह बन जाये और आप अपने जिस्म को भूल जायें तो इस तरह बहुत से पाप नाश हो जाते हैं। इस का नाम है दर्शन करना। दर्शन के लिए भक्ति भाव ज़रूरी है कि कोई और ख्याल अन्तर में न आए। यह तरीका मन को पवित्र करने का है। जब दो से एक हो जाओ, इस का नाम सच्ची भक्ति है।

रोज़ाना रात को न्यूयार्क के हंटर्ज़ कालेज में 8 से 9 तक नियमित रूप से सत्संग होता रहा जिस में नये से नया मज़मून लोगों के सामने पेश किया जाता था। हजूर महाराज जी ने रुहानियत में तरक्की के लिए नेक—पाक सदाचारी जीवन पर बड़ा ज़ोर दिया और फरमाया कि जिस समाज में तुम हो उस के नियमों और मर्यादाओं का पालन करो ताकि तुम सदाचारी बन सको। किसी समाज में रहना एक बरकत है मगर उस की जकड़ में फंस जाना पाप है। *To born in a temple is a blessing but to die in it, is sin.* सदाचारी जीवन से हृदय की ज़मीन बनती है और साथ में किसी पूर्ण पुरुष से नाम की पूँजी लेकर उस की रोज़ कमाई

तीसरी विश्व यात्रा
करने से जीव मनुष्य जन्म के परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

कई लोग कहते हैं कि परमात्मा का अनुभव नहीं हो सकता। इस प्रसंग में हजूर महाराज ने फरमाया कि जिस प्रकार दूध में मक्खन है और मक्खन से घी निकलता है मगर जब आदमी दूध को देखता है तो कहता है कि दूध के अन्दर मक्खन नहीं हो सकता। जिन्होंने दूध को गर्म कर के उस को जमा कर और उसे बिलो कर मक्खन निकाला है उन को पता है कि दूध के अन्दर मक्खन है। जिन को यह तरीका मालूम नहीं वे कहते हैं कि यह हो ही नहीं सकता। इसी प्रकार इस देह से, मन इन्द्रियों से ऊपर आ कर हम उस मालिक का अनुभव किसी पूर्ण पुरुष की कृपा से कर सकते हैं। मगर यह मार्ग बड़ा झीना या बारीक है और अंधेरे से शुरू होता है। इस में अंधेरे से पार हो कर आगे जाना पड़ता है, दर्जे बदर्जे तरक्की करते हुए इन्सान एक दिन मालिक के दर्शन कर लेता है। इस प्रकार रोज़ नये से नये मज़मून हजूर सत्संग में पेश करते हैं। सत्संग में इतनी भीड़ हो जाती है कि कई लोग खड़े रह जाते हैं और कईयों को नीचे ज़मीन पर भी बैठना पड़ जाता है।

12 अक्तूबर: सुबह सवेरे न्यूयार्क का आखरी प्रवचन था। हजूर महाराज ने रोज़ाना अभ्यास करने और डायरी भरने की ताकीद करते हुए फरमाया कि दूसरों के आगे सच्चा बनने की बजाय अपने आप के सामने सच्चे बनो। सच सब से ऊपर है मगर सच्चा और सुच्चा (स्वच्छ) जीवन सदाचार से ऊपर है। अगर आप कपट रखते हैं, अन्दर कुछ, बाहर कुछ, लोगों के सामने स्वांग रचना करते हैं तो आप के और सत्तुरु के बीच दीवार बन जाएगी। सत्तुरु तुम्हारी तरक्की चाहता है। आप एक कदम इस रास्ते पर चलो तो सत्तुरु सत्ता हज़ार कदम आगे बढ़ कर आप की मदद करती है। साफ जीवन, पवित्र विचार, सत्तुरु के लिये मन में प्यार,

ज्ञानी जी का तेरहवां पत्र
उस के हुक्म की बजावरी और नियमित रूप से भजन—सुमिरण से आप
मंजिल पर पहुंच जाएंगे ।

ग्यारह बजे भीगती बरसात में हजूर कार पर बोस्टन रवाना हुए ।
रास्ते में 2.30 से 3.30 तीन बजे कनकटीकट में न्यू हैवन यूनिवर्सिटी में
वर्षा ही में हजूर ने प्रवचन किया जिसे बहुत से लड़के लड़कियों ने सुना ।
हजूर ने फरमाया कि बच्चा जब माता के गर्भ में होता है तभी से उस की
शिक्षा शुरू हो जाती है । इस के बाद वह माता—पिता और बहन—भाइयों से
सीखता है । बड़ा हो कर स्कूल में अध्यापकों से शिक्षा प्राप्त करता है ।
अध्यापकों के लिए भक्ति भाव मन में रखो । एक तिहाई हिस्सा तालीम
इन्सान ज़बानी उपदेश से ग्रहण करता हैं और दो—तिहाई ख्याल की
रेडिएशन से अर्थात् मण्डल की रौ से लेकिन आदर्श निश्चित होना चाहिए,
तभी कुछ हासिल होगा । अपनी मिसाल देते हुए हजूर महाराज ने कहा
कि हमारे मिशन स्कूल में एक मिशनरी (पादरी) आया और लड़कों से
पूछने लगा, “तुम किस लिए पढ़ रहे हो?” किसी ने कहा, “ मैं डाक्टर
बनने के लिए पढ़ रहा हूं तो किसी ने इंजीनियर बनने के लिए कहा ।”
जब मेरी बारी आई तो मैंने कहा, “मैं सिर्फ ज्ञान प्राप्त करने के लिये पढ़
रहा हूं ।” वह बड़ा खुश हुआ और इस विषय पर घंटा भर उस ने टाक दी ।
मैंने तीन सौ के करीब महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़े हैं और सब में यह
शिक्षा मिलती है कि एक वक्त में एक काम करना चाहिए । हजूर महाराज
ने फरमाया कि मुश्किल यह है कि हम ने जीवन में कोई आदर्श नहीं
बनाया । कभी हम परमार्थी बन जाते हैं कभी दुनियादार । पहले फैसला
करो तुम क्या बनना चाहते हो? एक बार फैसला कर लो, फिर जो कदम
उठाओगे तुम्हें मंजिल के करीब ले जाएगा । प्रवचन समाप्त कर भर
बरसात में हजूर वहां से चले और रात आठ बजे बोस्टन में मिसिज़

तीसरी विश्व यात्रा

मिलडेड प्रेंडरगास्ट के घर पहुंचे। बोस्टन में तीन दिन का प्रोग्राम था। सुबह 8 बजे लोगों को भजन बिठाया जाता, फिर थोड़ा प्रवचन या सवाल-जवाब, शाम 8 बजे तक दर्शन, रात आठ से नौ बजे तक टाक होती।

यहां एक पादरी, एक डाक्टर और उन का परिवार हजूर से मिलने आये और देर तक बातें करते रहे। जो आदमी उन को लाया था, उस ने बताया कि डाक्टर की घरवाली को दर्शन करते हुए अन्तर में धंटे की धुनि सुनाई दी और डाक्टर को अन्तर में पीले रंग की रोशनी दिखाई दी। पूर्ण पुरुषों की Radiation से अर्थात् उन के मण्डल में चलने वाली अध्यात्म की धारा से इन्सान को तत्काल वह चीज़ मिल जाती है जो हजारों वर्षों के कठिन साधनों और तपस्या से नहीं मिल सकती। फिर सेवा के बारे में हजूर महाराज ने फरमाया कि निष्काम सेवा करने से मन में नम्रता आती है और भजन-सुमिरण से आत्मा को खुराक मिलती है। इस लिए निष्काम सेवा और भजन दोनों करने चाहियें।

एक आदमी ने कहा कि मेरे कई गुरु हैं। हजूर महाराज जी ने उसे समझाया कि एक बेड़ी ही में पांव रखना चाहिये। बाकी के लिये मन में आदर का भाव रखो। जिस से जो भी सीखा है उस की इज़्ज़त करो, मगर गुरु एक ही है, उसी को सीस निवाओ।

14 सिंतबर: बोस्टन रेडियो का एक अधिकारी हजूर से मिला और कई सवाल किये जो रेडियो पर ब्राउकार्ट किये जायेंगे। महाराज जी ने उस को बताया कि रुहानी तरकी के लिये किसी पूर्ण पुरुष की हिदायत (मार्ग दर्शन) ज़रूरी है। अन्तर में कई मण्डल पार करने पड़ते हैं जो बिना गुरु तय नहीं हो सकते। गुरु की पहचान के प्रसंग में हजूर महाराज ने कहा कि अन्तर्मुख ज्योति और नाद का अनुभव जो दे, वही गुरु है। रेडियो

ज्ञानी जी का तेरहवां पत्र
वाले ने पूछा, “क्या आप वही तालीम दे रहे हो जो हजूर बाबा सावन सिंह
जी महाराज देते थे?” हजूर ने फरमाया कि सभी पूर्ण पुरुष जो आज दिन
तक आए, उन की अर्थात् मूलभूत तालीम यही थी। कई प्रकार के योग
प्रचलित हैं मगर कलियुग में वे सब करने मुश्किल हैं। अतः सन्तों ने
सुरत शब्द योग का मार्ग अपनाया, जो कुदरती योग है जिसे बच्चा, बूढ़ा,
जवान हर कोई कर सकता है। एक सवाल था कि चेतनता क्या है? हजूर
ने फरमाया, “यह अवस्था बयान में नहीं आ सकती। इस को केवल
अनुभव किया जा सकता है।”

“भीखा बात अगम की कहन—सुनन में नाहिं।

जो जाने सो कहे न, कहे सो जाने नाहिं।।।”

इसी प्रकार जिसम से ऊपर आ कर पहले सूक्ष्म मण्डल में ज्योति
का अनुभव होता है। फिर सूक्ष्म से कारण, कारण से महाकारण और उस
से पार चेतन देश और अन्त में महाचेतन में जा कर रुह लय हो जाती है।
अन्त में हजूर महाराज ने थोड़े शब्दों में ध्यान का तरीका बताया जिस से
लोग रेडियो पर सुन कर फायदा उठा सकें। उस के जाने के बाद
मिशियोकुशी हजूर से मिलने आया। वह नेचरोपेथी (प्राकृतिक चिकित्सा)
का विशेषज्ञ है जो पिछली यात्रा में भी हजूर से मिलने आया था। शाम को
बैरन ब्लार्मर्ग मिलने आए और देर तक बातचीत करते रहे। रात को
हारवर्ड यूनिवर्सिटी के लोवेल हाल में सत्संग हुआ। यहां पर काफी लोग
बाहर से दर्शन करने आए हुए थे क्योंकि दो दिन की छुट्टियां थीं।

हजूर महाराज जी ने संगत से पूछा कि आप को मुझे देख कर
क्या लाभ होता है, क्या मिलता है? एक व्यक्ति ने कहा, “सब कुछ मिल
जाता है।।।” हजूर महाराज जी ने फरमाया कि जितना दिल से दिल को
राह बनेगा उतना ही ज्यादा फायदा होगा। जैसे वायरलेस के बीच में कोई

तीसरी विश्व यात्रा

चीज़ आ जाएगा तो वह काम नहीं करती, इसी प्रकार सत्गुरु और शिष्य के बीच अगर कुछ आ जाए तो सत्गुरु की रेडियेशन का लाभ नहीं मिलता। हरेक चीज़ के बनने में समय लगता है। मैं जब पहले—पहल नौकर हुआ तो मुझे कुर्सी पर बैठने की आदत नहीं थी। आधा घंटा भी बैठना मुश्किल था। धीरे—धीरे आदत बन गई। एक दफा ऐसा मौका आया कि मुझ को लगातार 36 घंटे कर्सी पर बैठना पड़ा। तो अभ्यास बड़ी चीज़ है। अभ्यास द्वारा ही इंसान तरकी कर सकता है।

रात के सत्संग के बाद सीधे संतवाणी आश्रम जाना था मगर दूसरी कारें लेट होने के कारण वापस लौटना पड़ा। फिर रात नौ बजे चले और सवा ग्यारह बजे संतवाणी आश्रम पहुंचे। मिस्टर रसल परकिंस (अंग्रेजी सतसंदेश के सम्पादक) कार ले कर पहले ही बोस्टन आ गये थे। हजूर महाराज जी रात वहां पहुंचे तो फरमाया, “आप का प्रेम मुझे एक दिन पहले यहां ले आया है।” हजूर महाराज जी की दया से मौसम ठीक चल रहा था। आसपास बड़ी बर्फ पड़ी मगर संत वाणी आश्रम में नहीं पड़ी। यहां के बाकी हालात अगली चिट्ठी में भेजे जायेंगे। हजूर महाराज सारी संगत को अपना प्यार और शुभ—भावना भेजते हैं, सब लोग प्रेम प्यार के साथ भजन—सुमिरण में वक्त दें और अन्तर में रुहानी तरकी करें। दूरी का कोई सवाल नहीं, सिर्फ मुंह उधर सत्गुरु की तरफ होना चाहिए, बगैर मांगे मदद मिलेगी। पिता को सारे बच्चों का ख्याल होता है, सभी उस की याद में होते हैं, वे कहीं भी हों।

प्यार और अदब के साथ,

दास,

ज्ञानी भगवान सिंह

29. हजूर महाराज जी का नौवां पत्र लंगर के सवादारों नाम

सिनसिनाटी

4 नवम्बर, 1972

प्यारे नूर के बच्चों,

आप का 22 अक्टूबर का प्रेम पत्र मिला, हाल मालूम हुआ। यहाँ पर हजूर महाराज की दया से सत्संग, भजन—सुमिरण, मिलने वालों से बातचीत और सवाल—जवाब का प्रोग्राम ठीक तरह चल रहा है और लोग लाभ उठा रहे हैं। यह सब हजूर महाराज की बरकत काम कर रही है। मेरा जल्दी वापस आने का प्रोग्राम बन रहा है, अभी पक्का नहीं हुआ। जब बन जाएगा आप सब को मालूम हो जाएगा। दो माह और दस दिन गुज़र गये हैं और बाकी भी हजूर महाराज जी की दया से यहाँ का प्रोग्राम खत्म कर के जब मैं आप के पास आऊंगा तो सब को मिल कर खुशी होगी।

हजूर महाराज की दया से मेरी जिस्मानी सेहत ठीक है। गुज़रा हो रहा है। आप फिक्र न करो। वक्त से लाभ उठाओ और हर रोज़ भजन—सुमिरण करो। मन कबूल करे या न, भजन—सुमिरण ज़रूर करो, अन्तर से मदद मिलेगी। जिन के इस पत्र पर नाम लिखे हैं या नहीं, सब को मेरी तरफ से प्यार पहुंचे। सब संगत को मेरी तरफ से प्यार पहुंचे। आप सब की याद मेरे दिल के अन्दर हैं। मैं उसी तरह ही हूँ, आप सब को याद करता हूँ। प्रेम प्यार के साथ भजन—सुमिरण को वक्त देते रहो। सत्गुरु ताकत सदा अंग—संग होकर संभाल कर रही है। रोज़ आपस में मिल बैठा करो। इस से बरकत मिलेगी। सारी संगत को पढ़ कर सुना दें।

ज्यादा प्यार,

किरपाल सिंह

30. हजूर महाराज का दसवां पत्र पण्डाल के सेवादारों के नाम

सिनसिनाटी
4 नवम्बर, 1972

प्यारे नूर के बच्चों,

आप सब का दस्तखत किया हुआ 22 अक्टूबर का प्रेम पत्र मिला,
हाल मालूम हुआ। यहां पर हजूर महाराज की दया से सत्संग, भजन व
सुमिरण, मिलने—जुलने वालों से बातचीत, सवाल—जवाब, रेडियो और
टेलीविज़न का प्रोग्राम ठीक तरह से चल रहा है और लोग फैज़ (लाभ)
उठा रहे हैं। यह सब हजूर महाराज जी की बरकत काम कर रही है। आप
सब की याद मेरे दिल में हैं। वक्त से फायदा उठायें। भजन—सुमिरण रोज़
करें, साथ में डायरी रखें। इस से मन को शान्ति मिलती है, अंतर से ढारस
बंधती है और एक ख़ास प्रकार की खुशी की रौ अन्तर में चलने लग पड़ती
है। आप ने लिखा है कि आप सब साथी मिल कर सत्संग की मन लगा
कर सेवा करने की कोशिश करते हैं। मन लगा कर करें। कोशिश का
मतलब है कभी करते हैं, कभी नहीं। एक मन और एक चित्त होकर सेवा
करें। अन्तर में मदद मिलेगी। खुशी है कि सेवादारों की गिनती बढ़ रही
है। मेरी तरफ से सब को प्यार पहुंचे, जिन्होंने दस्तख़त किए हैं उन को भी
और जिन्होंने नहीं किए उन को भी। और सारी संगत को प्यार पहुंचे।
बाकी मेरा जल्दी आने का वहां का प्रोग्राम बन रहा है। अभी पक्का नहीं
बना। जब बन जाएगा आप सब को पता लग जाएगा। प्रेम प्यार से
भजन—सुमिरण को वक्त देते रहा करें। सत्युरु ताकत सदा अंग—संग हो
कर मुनासिब सम्भाल कर रही है।

आश्रम में सब को मेरी तरफ से प्यार पहुंचे। सारी संगत को पढ़
कर सुना दें।

किरपाल सिंह

31. ज्ञानी जी का चौदहवां पत्र

मानयोग ताई जी,

हजूर महाराज जी की दया से आप राजी खुशी होंगे। इस से पहली चिट्ठी में आप को बोस्टन तक के हालात लिखे थे। अब संतवाणी आश्रम के हालात लिख रहा हूं।

हजूर महाराज जी 15 अक्टूबर को बोस्टन से 7 बजे रात को चल कर 11 बजे रात संतवाणी आश्रम पहुंच गये। असल में पहला प्रोग्राम यहां 16 अक्टूबर की सुबह पहुंचने का था। आश्रम के सत्संगियों की खुशी की हड़ नहीं रही। वे लोग बड़ी चाह से हजूर महाराज जी का इंतजार कर रहे थे। हजूर महाराज जी ने वहां फरमाया कि आप का प्यार मुझे पहले ही खींच लाया है। इस आश्रम की जगह 200 एकड़ के करीब है। सारा जंगल ही जंगल है। यहां पर लोग छुट्टियां लेकर भजन—सुमिरण के लिए आते हैं। जब भी किसी को मौका मिलता है इस जगह आ जाता है। एकांत में कुदरत के नज़ारे तथा रुहानी आनंद लेने की जगह है। यहां पर पानी का छोटा सा तालाब भी है जिस के आसपास सेब के दरख्त हैं और सब्जियां उगाई जाती हैं।

हजूर महाराज जी के रहने का नया मकान सब भाई—बहनों ने मिल कर रात दिन सेवा कर के बनाया है। इस की फोटो भेजी गई है। बड़ा सादा व सुन्दर बना है। 1963 में हजूर महाराज जी यहां आये थे और एक दिन आश्रम में घूमते फिरते यहां की घास पर लेट गये थे। उस वक्त गुरु नानक साहब हजूर महाराज जी के पास आये और कहने लगे, “जब मैं भी भ्रमण करते करते थक जाता था तो आप की तरह से घास पर लेट जाता था।” जिस वृक्ष के नीचे व पथर पर हजूर बैठा करते थे उस की

तीसरी विश्व यात्रा

फोटो आप को भेजी है। हजूर महाराज जी के साथ—साथ कई लोग दूसरे शहरों से दर्शन व सत्संग का लाभ लेने अपनी कारों पर आये थे। कारों की कई लाइनें लग गई थीं। सत्संग के समय सारा आश्रम भर जाता था। ज्यादा भीड़ होने से हाल की सब कुर्सियां हटा दी गई थीं, लोग फर्श पर बैठते थे। पास के कमरे में भी बैठते, फिर भी जगह कम होती थी। बाहर काफी सर्दी थी। यहां का वातावरण पहाड़, पेड़, बड़ी—बड़ी झीलें, प्रकृति की देन हैं, इस का वर्णन लिखने में नहीं आ सकता।

16 अक्टूबर: सुबह महाराज जी ने सब को भजन बिठाने से पहले फरमाया कि जब मैं 1963 में यहां आया था तब बहुत थोड़े लोग थे। अब तो आश्रम का नक्शा ही बदल गया है। भजन का तरीका बता कर हजूर महाराज जी ने सब को भजन पर बिठा दिया। एक घंटे के बाद सब से पूछा गया। सब को अन्तर में रोशनी आदि का और कईयों को गुरु स्वरूप के दर्शन का अनुभव हुआ। इस के बाद सवाल—जवाब हुए। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि अमृत का सरोवर नाम है। इस के बीच में सिर के बल छलांग लगा कर कूद पड़ो—हमेशा की जिन्दगी प्राप्त हो जाएगी। एक आदमी ने बताया कि आप का स्वरूप हजूर बाबा सावन सिंह जी के स्वरूप में बदल जाता है। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि वही पावर इंसानी पोल पर काम कर रही है। इस लिए बाईबल में कहा है, 'मैं और मेरा पिता एक हूँ।'

आगे हजूर ने बताया कि अगर आप को किसी किस्म की दावत दी जाये तो खूब पेट भर कर खाते हैं। यह (नाम) भी एक प्रकार आत्मा की दावत है, इस को जितना ज्यादा खाओगे उतना ज्यादा महाराज जी को प्राप्त करोगे। इस लिये सब डट कर भजन करो।

कोई 11 बजे के बाद हजूर अपने कमरे में वापस आये। कैनेडा से

ज्ञानी जी का चौदहवां पत्र

मि. एरन स्टीफन, रत्ना (एरन की पत्नी) व कई दूसरे भाई—बहन दर्शन करने आये थे, हजूर महाराज जी के पास बैठ कर एक घंटे तक फिर बातचीत चलती रही। एक बीबी ने कहा कि मैं और सब कैनेडा वाले आप का बड़ी बेसब्री से इन्तज़ार कर रहे हैं। यह कहते—कहते उस का गला भर आया और आंखों से आंसुओं की धारा बह चली। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि अब तो मैं यहां आ गया हूँ, फिर भी तू रोती है। मिल कर तो खुशी होनी चाहिये। दरअसल रुहानी प्यार की कहानी कुछ अजीब है। इस का बयान करना ही कठिन है। दुनिया का प्रेम बड़े इंतज़ार के बाद मिलाप हो जाने से दिन—ब—दिन घटता है परन्तु सद्गुरु व सिख का प्यार एक दूसरे से मिलने पर बढ़ता ही जाता है, कशिश पैदा करता है। खुशी (मिलने की) में भी आंखों से बेअख्त्यार आंसू निकल जाते हैं। यह शारीरिक प्रेम नहीं, आत्मिक प्रेम है। हजूर महाराज जी ने बताया कि सत्तुरु से मिलने के पहले भी दर्शन के लिए प्रेमी (सिख) पुकार करता है। मिलाप होने से कुछ ढारस मिलती है। प्रेम बढ़ता है मगर फिर जिस्मानी तौर पर दूर होने से प्रेमी के अन्दर विरह, सोज़ उबाल खाता है। प्रेमी फिर पुकार करता है। यह एक अजीब हालत है जो लिखने में नहीं आ सकती, दिल ही जान सकता है। हजूर महाराज जी ने अपने जीवन की एक घटना सुनाई। एक बार हजूर (बाबा सावन सिंह जी महाराज) डलहौज़ी दो महीने के लिए गये। ज्यों त्यों कर के दो महीने विरह सोज़ में गुज़ारे मगर हजूर ने फिर दो महीने वहां और ठहरने का प्रोग्राम बना लिया। सब को चिट्ठियां लिख दीं। जब यह समाचार मिला कि हजूर अभी नहीं आ रहे हैं तो मैंने एक रुक्का लिख कर हजूर के पास भेजा कि आप के दर्शन की राह देखते—देखते दो महीने गुज़ारे मगर यह सुन कर कि आप दो महीने और नहीं आ रहे हैं, वहां के लोगों के लिए तो बसन्त आ रहा है मगर मेरी तो बस अन्त हो चुकी है। जब यह पत्र हजूर को मिला तो

तीसरी विश्व यात्रा

उन्होंने पढ़ कर उसे छाती से लगा लिया और बीबी लाजो को कहा कि सामान बांध लो, आज ही डेरे वापस जाना है, अब मैं यहां नहीं ठहर सकता। बीबी ने टोका कि आप ने सब को यह सूचना भेज दी कि आप अभी दो महीने डेरे वापस नहीं जाएंगे। इस पर हजूर ने जवाब दिया कि मैं आज ही वापस जाऊंगा।

सत्गुरु और सिख के प्यार की कहानी का वर्णन नहीं हो सकता। परमहंस के पास जब नरेन्द्र (यह स्वामी विवेकानंद का पहला नाम था) कई दिनों तक नहीं जाता था तो परमहंस उसकी (शिष्य की याद) में रोया करते थे। प्रेम की धारा दो से एक रूप बना देती है। दुनिया की तलवार काट कर एक के दो कर देती है परन्तु प्रेम की तलवार जोड़ कर दो से एक रूप कर देती है। जब ये प्रेम और विरह की बातें हो रही थीं सब की आंखों से आंसू बह रहे थे। हजूर महाराज जी ने बताया कि हर एक को इस अवस्था से गुज़रना पड़ता है।

दोपहर को 3.30 से 5.30 बजे तक हजूर फिर से सब को दर्शन देने हाल में पहुंचे। फरमाया कि हम सब मन इन्द्रियों के घाट पर सोये पड़े हैं, जागो, उठ खड़े हो जाओ और जब तक अपनी इच्छित मंज़िल पर न पहुंच जाओ तब तक आराम से न बैठो। समय और दरिया की लहर किसी का इन्तज़ार नहीं करते। जाग प्यारी अब काहे को सोवै, तूने अभी तक प्रभु को मिलने की कोई तैयारी नहीं की। हे आत्मा, तूने शरीर रूपी जो पोशाक धारण की है वह काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अंहकार के सबब से मैली व गन्दी हो चुकी है। वह तुझे साफ करनी है। इस काम को मानव चोले में ही कर सकते हैं। उस की पवित्रता के बाद ही तुझे मालिक के दर्शन हो सकते हैं।

जिन के चोले रत्तड़े प्यारे, कन्त तिना के पास, जिन के चोले

ज्ञानी जी का चौदहवां पत्र
मालिक के रंग में हुए हैं उन की संगत सोहबत में बैठ कर ही तू अपने को
पवित्र बना कर (उस रंग में रंग कर) प्रभु को पा सकती है। अब ही वह
समय है जब नाम का रंग चढ़ सकता है। समय बीतता चला जा रहा है।
हर एक घंटा, मिनट, सैकिंड तुझे उस घड़ी के निकट पहुंचा रहा है जिसे
शरीर छोड़ने का वक्त कहते हैं। उस के पहले-पहले ही इस रंग में रंग
जा।

यह प्रोग्राम समाप्त होने के बाद हजूर अपने कमरे में आ गये।
रात को फिर 7.30 से 8.30 तक सत्संग था। हजूर महाराज जी ने यह
मज़मून लिया कि यह दुनिया तेरे रहने का मुकाम नहीं। एक दिन इसे
छोड़ कर जाना है। उस से पहले इस ज़िन्दगी के राज़ (रहस्य) को हल
कर ले।

उसी रात को सन्त बाणी प्रेस देखने के लिए हजूर गये जहां
सत्संग की पुस्तकें व सत्संदेश छपता है। यह प्रेस शहर से कुछ मील की
दूरी पर है। प्रैस के बिल्कुल पीछे एक बड़ी सुन्दर नहर बहती है। इस की
स्लाइड आप को भेजी है।

17,18,19 अक्तूबर: रोज़ाना सवेरे 9 से 11 भजन सिमरण बिठाया
जाता था तथा उस के बाद थोड़ी देर सत्संग होता था। 19 अक्तूबर को
हजूर महाराज जी ने स्वामी जी का यह शब्द लिया:

‘तजो मन यह सुख दुःख का धाम।’

हजूर महाराज ने फरमाया, “यह शरीर व संसार सुख दुःख का
घर है। इसे छोड़ो व इस से ऊपर आ कर सतनाम से जो हमेशा अटल
लाफानी है, लगो। रोज़—रोज़ उस से जुड़ने से एक दिन सत्गुरु की दया
से अपने निज धाम पहुंच जाओगे।” 3 से 4 बजे तक फिर खुले मैदान में

तीसरी विश्व यात्रा

सत्संग हुआ। हाल में बैठने की जगह कम हो गई थी। उस वक्त हजूर साहब ने तुलसी साहब का यह शब्द लिया: 'दिल का हुजरा साफ कर जानां के आने के लिये' और फरमाया कि दिल की सफाई करने के साधन पूर्ण पुरुषों का सत्संग, नाम की कमाई (सिमरण, ध्यान व धुनि का सुनना) से जन्म-जन्मांतर की मैलें उत्तर जाती हैं, जीव मालिक की दरगाह में कबूल हो जाता है।

रात को 7 से 8 तक लोगों से मिलने व बातचीत का वक्त था। हजूर महाराज जी ने वलीराम का जो बादशाह अकबर का मंत्री था, उदाहरण दिया। बताया कि बेपरवाह प्रभु की भक्ति करने से जीव भी बेपरवाह बन जाता है। एक दिन अकबर बादशाह अपने दरबार में आ रहा था। अदब से सब दरबारी खड़े हो गये। वलीराम के चोगे में एक बिछु था। उसने एक डंक मारा। वलीराम अदब से हिला नहीं, दूसरा मारा, तीसरा मारा, इसी तरह बिछु ने 9 जगह डंक मारे परन्तु वलीराम अपनी जगह से हिला नहीं। बादशाह के बैठ जाने के बाद वहीं चोगा फाड़ डाला। उस ने सोचा कि एक दुनियावी बादशाह के अदब में बिछु के डंकों का ख्याल न कर मैं खड़ा रहा, अगर मालिक की भक्ति इसी अदब व लगन से की जाए तो मैं भी प्रभु की तरह बेपरवाह हो सकता हूं। वहां से जंगल की राह ली, प्रभु की याद में नदी के किनारे जा बैठा। अकबर ने सोचा कि यह मेरा बड़ा अच्छा वज़ीर है, इस को किसी भी तरह बुला लेना चाहिए। पहले नौकरों को भेजा, फिर वज़ीरों को भेजा, परन्तु वह नहीं आया। फिर खुद उस के पास जंगल में गया। कहने लगा, "वलीराम तू मेरा बड़ा लायक वज़ीर है, मेरे मन में तेरे लिये बड़ी इज़्ज़त है, हर काम में मैं तेरी सलाह लेता हूं तू वापस चल।" वलीराम ने जवाब दिया कि जब तक तेरी नौकरी में था, मैंने पूरी तरह निभाई। अब मैं मालिक की नौकरी

ज्ञानी जी का चौदहवां पत्र
में हूं उसे पूरी तरह निभाऊंगा। अकबर ने कहा, “कुछ मांग, मैं तुझ पर
बहुत खुश हूं।” वलीराम ने कहा, “मुझे कुछ नहीं चाहिए।” अकबर ने
फिर जिद्द की, “कुछ तो मांग।” वलीराम लेटा हुआ था, बोला, “मेरे
सिरहाने से हट जा।” इस प्रकार प्रभु की चर्चा करते हुए रात प्रोग्राम
समाप्त हुआ और महाराज जी अपने कमरे में चले गये। रात को 1-2 बजे
तक काम करते हैं। बाहर से हजूर इतने कार्यक्रम में बिज़ी दिखते हैं,
अन्तर में रुहानी मंज़िलों की सैर करते हैं, अपने जीवों की सम्भाल और
दूसरे अंतर के काम करते रहते हैं। काम करते समय इतने एकाग्र होते हैं
कि उस समय उन के कमरे में कोई जा कर वापस आ जाये, पता नहीं
लगता।

18 व 19 अक्तूबर: इसी तरह भजन सिमरण, सत्संग के ऊपर
दिये प्रोग्राम में बीत गये। 18 अक्तूबर को गुरवाणी का शब्द लिया, ‘मनवा
दह दिस धावन्दा ओह कैसे हर गुण गावै, और उस के बाद कबीर साहब
का शब्द लिया, ‘हंसा सुध कर अपनो देसा’ ताकि लोगों को यह समझ आ
जाये कि जो शिक्षा हजूर देते हैं वह कोई नई नहीं, यह पुरातन से पुरातन
सनातन से सनातन है। हजूर महाराज जी ने यह भी बताया कि मुझे खुशी
है कि मैं आप के बीच हूं। एक दिन मैं आप ही की तरह था। पूर्ण पुरुष की
यही नम्रता है कि वे अपने आप को छिपाते हैं, अपना बड़प्पन नहीं जताते।
नम्रता सन्तों का श्रृंगार है। इस के बाद हजूर ने फरमाया कि आप सब
मालिक के परिवार के सदस्य हैं और आने वाली पीढ़ी के बनाने वाले हैं।
अपने बच्चों के आगे आदर्श बन कर दिखाओ। आप बनो और अपने बच्चों
को भी बनाओ। केवल शब्दों से काम नहीं चलेगा, मिसाल बन कर
दिखाओ। महापुरुषों के जीवन से इन्सान बहुत कुछ सीखता है। John
Bunyan का सिद्धांत था कि हर रोज़ कुछ लिखो, Write

तीसरी विश्व यात्रा

something daily. एक और महापुरुष का कहना है कि Finish something daily (हर रोज़ कुछ न कुछ काम पूरा करो)। मेरे ख्याल में दोनों में फर्क है। हर रोज़ कुछ काम खत्म करो, यह ज्यादा अच्छा है। पहले माता पिता बच्चों को खाना नहीं देते थे अगर वे मन्दिर—गुरुद्वारों में सुबह नहीं जाते थे। पहले आत्मा को खुराक दो, फिर शरीर को खुराक दो।

यहां एक पड़ोसी गांव से स्कूल के बच्चे व टीचर हजूर महाराज के दर्शन के लिए आए। हजूर ने बच्चों से कहा कि महापुरुषों व बड़े लोगों के जीवन चरित्र पढ़ो। इस से मन में उन के जैसा बनने का शौक पैदा होता है। अपने शिक्षकों की इज्जत करो। फिर हजूर ने बच्चों को प्रशाद बांटा। यहां जो लोग अपने बच्चों को साथ लाये थे वे बच्चों के कारण सत्संग नहीं सुन पाये थे, उन्हें हजूर ने अन्दर बुला कर प्रसाद दिया।

संतबाणी आश्रम से करीब 250 मील दूरी पर कुछ सत्संगी भाइयों ने कृपाल गोट (Goat) फार्म बनाया है। वे लोग भी हजूर महाराज से मिलने आये। उन्होंने उस जगह को मानव केन्द्र की शाखा बनाने को कहा। यह जगह कोई 250 एकड़ है। मि. रेनू सीरीन स्वयं इस जगह को पहले देखेंगे। उन की रिपोर्ट पर हजूर महाराज जी फिर विचार करेंगे। एक ग्रुप लीडर ने पूछा कि मैं किस तरह ग्रुप लीडरी के अहंकार की बीमारी से बच सकता हूं। हजूर महाराज जी ने उसे समझाया कि तू मालिक का काम समझ कर काम कर, नम्रता को धारण कर। तू खुशकिस्मत है जो तुझे परमात्मा ने इस काम के लिये चुना है। मालिक का काम समझ कर उस के हवाले हो कर काम करता रह, अन्दर से मदद मिलेगी। अपने आप को अहमियत (importance) नहीं देनी, न ही श्रेय (credit) आप लेना, बल्कि सत्त्वरु को अर्पण करते जाना। अपने आप

ज्ञानी जी का चौदहवां पत्र
को केवल एक सेवक (कारिन्दा) समझ। यह बड़ी फिसलन है। हौमें व
मैं—मेरी से सारे ही सेवा करने वालों को बचना चाहिए।

संतवाणी आश्रम में एक पुलिस अफसर यह देखने आया कि इतने
लोग क्यों इकट्ठे हुए हैं? उस ने भी दर्शन किये व सत्संग सुन कर और
महाराज जी से बातचीत करके बहुत ही प्रभावित हुआ और कहने लगा कि
अगर सब इस तरह रहने लग पड़े तो सुख हो जाये। मैं खुश हूं कि आप
इतना बड़ा काम कर रहे हैं और लोग आप से फैज़ उठा रहे हैं। आश्रम के
लोगों के बारे में उस ने कहा कि ये लोग प्रेम प्यार व मेलजोल से रह रहे
हैं, मैं इस से बहुत खुश हूं।

19 अक्तूबर: हजूर महाराज जी ने भजन—सिमरण में बिठाने के
बाद निष्काम सेवा की महत्ता बताई। फरमाया कि भजन—सिमरण के
साथ—साथ हरेक को निष्काम सेवा—दूसरों की भलाई आदि करनी
चाहिये। इससे जीवन में त्याग की एक खास तरह की खुशी इंसान
महसूस करता है। रात के सत्संग में हजूर ने “सत्गुरु क्या है?” उस की
ड्यूटी क्या है? लोगों को वह किस तरह तालीम देता है? इस मज़मून को
पेश किया।

यहां दो नौजवान पादरी हजूर महाराज जी से मिलने व सत्संग
सुनने आये। सत्संग के बाद वे कमरे में आये और परमार्थ के बारे में पूछने
लगे। अन्त में हजूर महाराज बोले कि कोई और सवाल पूछो। कहने लगे
कि और कुछ पूछने लायक रहा नहीं। उनका नाम—दान आदि लेने का
ख्याल था परन्तु मांस, अण्डे आदि खानपान की पाबन्दी से वे नाम—दान
नहीं ले सके। वे गांवों में प्रचार करते हैं और जो भी लोग दे देते हैं, खाना
पड़ता है जिस में मांस अण्डे भी होते हैं। पहले इन को छोड़ना चाहते हैं,
फिर इस रास्ते को अपनाना चाहते हैं।

तीसरी विश्व यात्रा

यहां काफी सर्दी थी । आसपास के इलाकों में बर्फ पड़ती है । एक आदमी ने बर्फ पड़ने की बात कही तो हजूर महाराज ने फरमाया कि आप सब के प्यार ने इतनी गर्मी पैदा कर दी है कि बर्फ भी यहां पर नहीं गिरी । मालिक ने आप सब के प्रेम को देख कर बर्फ दूसरी तरफ भेज दी है । पूर्ण पुरुषों की नम्रता देखिये कि वे अपना नाम नहीं लेते और मालिक का नाम लेकर बात को टाल देते हैं ।

20 अक्टूबरः सवेरे हजूर महाराज जी ने 52 आदमियों—बीबियों का नाम दान दिया । हजूर महाराज जी की दया से सब को अन्तर में प्रभु अनुभव की पूंजी मिली । उन्हें महाराज जी ने बाकायदा भजन—सिमरण का अभ्यास बढ़ाने, सत्संग सुनने व डायरी रखने की हिदायत दी । कोई 12.30 बजे हजूर महाराज जी वापस कमरे में आये और आगे जाने की तैयारी हो गई । 2.30 बजे यहां से कृपाल आश्रम वरमौंट जहां नीना गीटाना रहती हैं, वहां जाना था । जाने से पहले हजूर ने सब को दर्शन दिए और फरमाया, “मैं आज प्रोग्राम के मुताबिक आगे जा रहा हूं । आप के दर्शन कर के मुझे खुशी हुई है ।” यहां भी बाहर से 250—300 कारों पर लोग सत्संग सुनने आये थे । 2.30 बजे रवाना हो कर कोई 6 बजे हजूर महाराज जी कार से वरमौंट कृपाल आश्रम में पहुंचे । चलने से पहले लोग कतार बना कर कार से लग कर कितनी दूर हजूर महाराज जी के दर्शन के लिए खड़े थे । मूर्वी कैमरा न होने से फिल्म नहीं खींची जा सकी जो आप को भेजते तो आप देख कर खुश होते ।

आगे का हाल फिर लिखा जाएगा । हजूर महाराज जी की तरफ से आप सब को प्यार पहुंचे ।

दास

भगवान सिंह, हरचरण सिंह

32. ज्ञानी जी का पन्द्रहवां पत्र

वेनकुवर

8 नवम्बर, 1972

माननीय ताई जी,

हजूर महाराज की दया मेहर से आप सब ठीक होंगे। हम को यहां न तो वक्त, न दिन और तारीख का अहसास है—सिर्फ पहुंचने और चलने का पता लगता है। जब हमारा ख्याल आप सब की तरफ जाता है तो सोचते हैं कि आप सब किस तरह हजूर महाराज जी की वापसी के इन्तज़ार में समय काट रहे होंगे। यह ठीक है कि चिट्ठी मिलने से कुछ ढारस बंधती है और हजूर की याद बनती है। इस चिट्ठी में आप को हजूर महाराज जी के कृपाल आश्रम के, जो वरमोंट में है, सत्संग के प्रोग्राम के बारे में लिख रहे हैं जहां कि नीना गीटाना रहती हैं। जंगल में दरख्तों के बीचों—बीच चलती हुई कार हजूर महाराज जी और पाठी को ले कर शाम सात बजे वहां पहुंची। कृपाल आश्रम थोड़ी सी जगह में बना हुआ है। यह जंगली और पहाड़ी इलाका है। कुदरत का नज़ारा देखने लायक है। बिल्कुल एकान्त जगह है। आश्रम अन्दर से पुराने ज़माने के फकीरों की सादा झोंपड़ी की तरह है। दरख्तों को काट कर मेज—कुर्सियां बनाई हुई हैं। यहां की फोटो भी आप को भेजी है। हजूर महाराज जी के कमरे के पीछे दरख्त ही दरख्त हैं। यहां बड़े ज़ोरों की सर्दी है, इतनी कि बाहर पानी जम जाता है। बाहर जंगल में पतले—पतले ऊंचे—ऊंचे दरख्त हैं। बीच में पानी के नाले बह रहे हैं, पानी इतना ठंडा कि हाथ डालो तो सुन्न हो जाता है लेकिन कमरों को गर्म रखने का बंदोबस्त होने के कारण अन्दर सर्दी का पता नहीं लगता था। रात को सत्संग नहीं था लेकिन लोग दर्शन के लिये इकट्ठे हो गये थे।

तीसरी विश्व यात्रा

21 अक्तूबरः सुबह दस बजे भजन—सुमिरण का प्रोग्राम था। अमरीका में शनिवार और इतवार को छुट्टी होने के कारण लोग दूर—दूर से बारह—बारह सौ मील तक का सफर कारों से कर के सत्संग के लिये आ जाते हैं। कई हवाई जहाज़ से भी आए थे। कारों की कोई हद नहीं है यहां, बड़ी कारें, छोटी कारें, स्टेशन वैगन, रिहायशी मकानों जैसी कारें चारों तरफ नज़र आती थीं। भजन—सुमिरण का प्रोग्राम कृपाल आश्रम से दो मील दूर जंगल में था। सूर्य देवता के उदय होने से मौसम सुहाना हो गया था, धरती पर घास का बिछौना था। भजन बिठाने से पहले हजूर महाराज जी ने फरमाया कि सुरति आत्मा की बाहरी अभिव्यक्ति का नाम है। जब तक हमारा ख्याल जिस्म से, मन—इन्द्रियों से ऊपर नहीं आता, हम परमात्मा की ज्योति को नहीं देख सकते। इस वक्त हमारा ख्याल या सुरति धन—दौलत पैदा करने और दुनिया के सामान इकट्ठा करने में लगी हुई है। मनुष्य जीवन पा कर हम ने आत्मा को अन्तर्मुख परमात्मा परिपूर्ण की ज्योति से जोड़ कर और चेतन होना था, मगर हम दुनिया के सामानों में लग गये, मनुष्य जन्म के आदर्श को भूल गये। जब तक आप दुनिया के भोगों—रसों में लम्पट रहोगे तब तक सोते रहोगे और जब जिन्दगी का आखिरी दिन आएगा तब देखोगे कि यह सब सपना हो गया है। सियाने बनो भई, दूर अन्देशी (दूरदर्शिता) से काम लो। दुनिया और उस के सामान साथ नहीं जायेंगे, यह शरीर भी जो पैदा होते वक्त साथ आता है जाते वक्त यहीं रह जाएगा, साथ नहीं जाएगा, तो शरीर कर के जो सामान बने हैं वे कैसे साथ जा सकते हैं?

हजूर महाराज जी ने मिसाल पेश की कि एक बादशाह था। वह मरने लगा तो वज़ीर से कहने लगा कि मैंने जो भी सामान जिन्दगी में इकट्ठे किए हैं वे सब मेरे सामने रख दो। वज़ीर ने कहा, “बादशाह सलामत, इन में से कोई चीज़ आप के साथ नहीं जा सकती।” बादशाह ने

ज्ञानी जी का पन्द्रहवां पत्र

कहा, “यह बात तुम ने मुझे पहले क्यों नहीं बताई जब मैं यह सामान इकट्ठा करने के लिये लोगों को कत्ल कर रहा था, बच्चों को अनाथ और औरतों को विधवा कर रहा था और लूट मार कर अपने खज़ाने भर रहा था।” मतलब कहने का यह है कि दुनिया में रहो, मगर उसमें फंसो नहीं। बेड़ी (नाव) पानी में रहे, पानी बेड़ी में न आए, नहीं तो ढूब जायेगी। इस लिए पहले से वह सामान तैयार रखो जो जाते वक्त तुम्हारे साथ जाने वाला है और खुशी-खुशी दुनिया से जाओ। वह सामान है नाम की कमाई। नाम की कमाई करने वाले शिष्य को सत्गुरु आप लेने आते हैं। उस वक्त उस को इतनी खुशी होती है जैसी शादी के वक्त भी नहीं होती। बाकी दुनिया के लोग रोते हुए आते हैं और रोते हुए दुनिया से चले जाते हैं। इस के बाद हजूर महाराज जी ने सब को भजन बिठा दिया और एक घंटे बाद हरेक से पूछा कि उन को क्या अनुभव अन्तर में हुआ है। सब को ज्योति आदि का अनुभव हजूर महाराज जी की दया मेहर से हुआ। भजन वालों में नये और पुराने दोनों शामिल थे। फिर कृपाल आश्रम आ कर खाना खाया और जाने की तैयारी होने लगी। दोपहर डेढ़ बजे वरमोंट को रवाना हो गए।

वरमोंट में, यूनिवर्सिटी आफ वरमोंट, बरलिंगटन में शाम चार बजे हजूर महाराज का भव्य स्वागत किया गया। प्रवचन से पहले हजूर महाराज जी ने यूनिवर्सिटी के प्रबन्धक से कहा कि मैं आप को धन्यवाद देता हूं कि आप ने यहां धर्म की क्लास रखी है। दुनिया में आकर हमारा सब से बड़ा आदर्श मालिक को जानना है। आप को दुनिया और बाहर की विद्याओं की पूरी जानकारी है लेकिन आप को अपने बारे में, आत्म विद्या के बारे में कोई ज्ञान नहीं। एक महापुरुष का कथन है कि ऐ इंसान! तूने दुनिया के सारे इल्म हासिल कर लिये लेकिन तूने अपने आप को नहीं जाना कि तू कौन है तो तू मूर्ख है। पूर्ण पुरुष अपने आप को भूलने वाले

तीसरी विश्व यात्रा

मानव को आत्मानुभव देने के लिए दुनिया में आते हैं। अगर आप को यह पता लग जाए कि परमात्मा सब के अन्तर में है फिर कुदरती बात है कि आप सब से प्रेम करोगे। तो इस शरीर के रहते हुए हम ने मालिक को जानना है। पूर्ण पुरुष किसी विशेष समाज या देश कि लिये नहीं आते, वे सारे संसार के लिये आते हैं।

प्रवचन के बाद हजूर महाराज ईस्ट आफ लेक इन्न एंड होटल पहुंचे जहां दो रात ठहरना था। पहली रात वरमोंट की ईरा एलन चेपल यूनिवर्सिटी में प्रवचन था। वहां बहुत बड़ा हाल और गैलरी सब लोगों से भर गये। कुछ लोगों को स्टेज पर बिठाना पड़ा। हजूर महाराज ने 'अपने आप को जान' और 'नई तालीम' का विषय लिया। एक सज्जन ने सवाल किया, "मन और आत्मा का क्या काम है, function है?" हजूर महाराज ने फरमाया कि मन आत्मा से ताकत लेता है और उसी पर सवार है। हमें आत्मा को मन से आजाद कराना है लेकिन यह काम किसी पूर्ण पुरुष की कृपा ही से हो सकता है। प्रवचन के बाद दो पादरी मिलने आए। उन्होंने हजूर को बताया कि हम ने आप की किताब Naam of Word पढ़ी है। हजूर महाराज से उन्होंने परमार्थ संबंधी सवाल किये और उत्तर सुन कर बड़े खुश हुए। उस वक्त एक व्यक्ति ने कहा कि कई लोग यह समझते हैं कि आत्मा के रास्ते पर चलने वाले गुमराही में जा रहे हैं (अर्थात् पथभ्रष्ट हो रहे हैं)। हजूर महाराज ने फरमाया कि मुर्गी और बतख के अण्डे मुर्गी के नीचे इकट्ठे सेये जाते हैं। मुर्गी के बच्चों के साथ बतख के बच्चे भी घूमते हैं। पानी देखते ही बतख के बच्चे उस में कूद पड़ते हैं तो मुर्गी के बच्चे चिल्लाते हैं कि ये ढूब गये। मगर बतख के बच्चे पानी में तैरना शुरू कर देते हैं। हजूर महाराज ने फरमाया कि ज़बान मीठी नम्रता भरी हो और प्रेम से सेवा की जाए तो दूसरों पर भी अच्छा असर पड़ेगा और आज जो यह समझते हैं कि तुम गुमराही में जा रहे हो, वे भी तुम्हारे जीवन—आचरण से प्रभावित हो कर इस रास्ते आ सकते हैं। यह बात सुन कर दोनों पादरी

ज्ञानी जी का पन्द्रहवां पत्र

बहुत खुश हुए। एक आदमी हजूर के पास आया। कहने लगा, “मुझे आप पर बड़ा गुस्सा है कि आप ने मेरी घरवाली को नाम दिया है।” हजूर महाराज ने बड़े प्रेम से उसे समझाया कि मैंने उस का धर्म तो नहीं बदला, न ही उसे घर-बार छोड़ने को कहा है। यह तो अन्तर का मार्ग है जिस का व्यक्तिगत अनुभव उस को दिया गया है। हजूर की बातें सुन कर वह बड़ा प्रभावित हुआ और उस का विचार बदल गया। पूर्ण पुरुष सब से प्रेम करते हैं, प्रेम से सब के मन को खींच लेते हैं।

22 अक्तूबर: सुबह सवेरे हजूर महाराज जी ने परमार्थाभिलाषियों को नाम-दान दिया। हजूर महाराज के सत्संग से प्रभावित हो कर यूनिवर्सिटी वालों ने एक अलेहदा हाल नामदान और भजन-सुमिरण के लिए हजूर को दिया। 74 मर्दों-औरतों ने नामदान लिया। सब को हजूर की दया से अन्तर में ज्योति और धुनि की पूंजी मिली। हजूर महाराज ने दीक्षितों को बताया कि नाम की दौलत जो आप को मिली है उस को बढ़ाने के लिये रोज़ाना नियमित रूप में भजन-सुमिरण करना, रोज़ाना किसी महापुरुष की वाणी पढ़ना, सत्संग में जाना और सत्गुरु की याद में आपस में मिल बैठना और डायरी भरना ज़रूरी है। इस से आगे तरकी होगी। भजन-सुमिरण में नागा करने, खाना-पान का परहेज़ न रखने, अन्तरीय अनुभव दूसरों को बताने और बुरी संगति से अन्तर में पर्दा पड़ जाता है, शिष्य नाम और सत्गुरु से दूर होता जाता है। शाम चार प्रोफैसर, जो वरमोंट यूनिवर्सिटी में धर्म की चेयर के इन्चार्ज हैं, कई विद्यार्थियों को संग ले कर मोटल में, जहां हजूर ठहरे थे, मिलने आए। उन में से एक प्रोफैसर ने कहा, “इतने लोग हमारी यूनिवर्सिटी में प्रवचन करने आए मगर आप ने जो बातें कहीं, ऐसी बातें किसी ने नहीं बताई।” हजूर महाराज ने उन का धन्यवाद किया और कहा कि मैंने Parallel Study of Religions (सारे धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन) और अपने सत्गुरु

तीसरी विश्व यात्रा

के चरणों में बैठ कर जो प्राप्त किया है वही आप के सामने पेश किया है।

शाम 5 बजे हजूर महाराज ने मोटल में दर्शनार्थ एकत्रित लोगों को दर्शन दिये। रात फिर यूनिवर्सिटी में प्रवचन हुआ। भीड़ का यह हाल था कि हाल और गैलरी खचाखच भर गए और बाहर भी लोग खड़े थे। सत्संग में Pin drop silence थी (अर्थात् ऐसी खामोशी कि जिस में सुई गिरने की आवाज़ भी साफ सुनाई दे जाती)। प्रवचन का विषय था, “इन्सान कैसे सुखी हो सकता है?” हजूर महाराज जी ने फरमाया, “हरेक इंसान सुखी होना चाहता है क्योंकि यह आत्मा का निज स्वरूप है। परमात्मा परमानन्द का महासागर है। आत्मा उस महासागर की बून्द है, यह भी आनन्द स्वरूप है मगर यह (आत्मा) इस वक्त मन-इन्द्रियों से धिरी पड़ी है और अपने निज स्वरूप से अनभिज्ञ और अनजान होने के कारण बाहर की चीजों में सुख खोज रही है जो इस को मिलता नहीं, इस लिए यह दुखी है। आत्मा को परमात्मा से मिलने पर ही सुख हो सकता है। प्रवचन के बाद कुछ खास आदमी अलेहदा कमरे में हजूर महाराज से मिलना चाहते थे परंतु समय न होने के कारण हजूर को उन्हें कहना पड़ा कि ऐसी हालत में सब को छोड़ कर अलेहदा वक्त देना मुश्किल है।

13 अक्टूबर: सुबह नौ बजे हजूर महाराज कार पर मांट्रियाल की ओर चल पड़े और दोपहर का वहां विंडसर होटल पहुंच गये जहां उन के ठहरने की व्यवस्था की गई थी। वहां बहुत लोग दर्शनों के लिए खड़े थे। सब को दर्शन देकर हजूर महाराज मोटल में ऊपर अपने कमरे में चले गये। मांट्रियाल के हालात आप को अगली चिट्ठी में लिखे जायेंगे। हजूर महाराज जी की तरफ से आप सबको प्यार।

अदब और सत्कार के साथ,

दास
ज्ञानी भगवान सिंह व हरचरण सिंह

33. ज्ञानी जी की सोलहवां पत्र

सानफ्रांसिस्को

15 नवम्बर, 1972

माननीय ताई जी,

हजूर महाराज जी के सम्मुख हमारी प्रार्थना है कि आप सब ठीक ठाक रहें और हमारे लिए आप भी प्रार्थना करो कि हम भी राजी—खुशी रहें और सेवा कर सकें। इस से पहली चिट्ठी में आप को वरमोंट के सत्संग के व दौरे के प्रोग्राम के बारे में लिखा था। अब आप को मांट्रियाल के प्रोग्राम के बारे में लिखा जा रहा है। मांट्रियाल हजूर महाराज जी दिन के 12 बजे पहुंचे। जब वरमोंट से चले तब बारिश हो रही थी। मांट्रियाल कैनेडा में है और वरमोंट अमरीका में है। अतः बार्डर (सीमा) पर पास्पोर्ट आदि दिखाने को ठहरना पड़ा। यहां अमरीका में पार्किंग, पुल पार करने, हाई वे (मुख्य सड़क) पर जाने का, सब का टोल टैक्स देना पड़ता है। मांट्रियाल में हजूर महाराज जी के ठहरने का इन्तज़ाम विंड्सोर होटल में था। ठहरने का काफी बड़ा कमरा था। होटल में एक बड़े हाल में हजूर संगत को दर्शन देने आए। वहां सब को दर्शन दे कर व सब का हाल पूछ कर हजूर वापस अपने कमरे में आये। सब से पहले एक पत्रकार मिलने आया। उस ने कई प्रश्न हजूर महाराज जी से किये। एक प्रश्न यह था, क्या परमात्मा को इन्सान अपनी कोशिश से या खुद अपने आप मिल सकता है?" हजूर महाराज ने जवाब दिया," इन्सान अपनी शक्ति या अपने बनाये साधनों से उसे नहीं मिल सकता और न ही वह आत्मिक विद्या को जान सकता है। केवल किसी पूर्ण पुरुष की दया से इंसान परमात्मा को जान सकता है। जिन्होंने सत्गुरु की दया से उस को जाना है वे गवाही देते हैं कि हम ने

तीसरी विश्व यात्रा

उसे देखा है।" *La Presse* अखबार में फिर यह बात छपी है कि हजूर महाराज जी का यह कहना है कि इंसान अपने आप को जाने, फिर परमात्मा को जाने तो उस की सारी मुश्किलें हल हो सकती हैं। इस से मनुष्य के बनाये अपने मत—मतांतर, झगड़े, तंगदिली सब समाप्त हो जाते हैं। इन्सान सुख का जीवन व्यतीत कर सकता है। अखबार में यह मज़मून तथा और भी बातें हजूर के सम्बन्ध के 25–10–1972 को छपी हैं। इस की भाषा फ्रेंच है।

शाम के चार बजे उसी बड़े हाल में नीचे जाने से पहले लोगों से, जो बाल—बच्चों सहित आये थे और वहां ठहरे थे, हजूर उन से मिले। फिर बाकी लोगों से मिले। यहा फ्रेंच भाषा होने से अंग्रेजी कम लोग जानते हैं। मि. रोगर्ज फोर्ड्जी ने फ्रेंच में अनुवाद कर के हजूर की बात लोगों को बताई। एक सवाल था, "सुरत शब्द योग में क्या अपने मज़हब के रीति—रिवाज को छोड़ना या घटाना पड़ता है?" हजूर महाराज जी ने फरमाया कि मैं आप के सामने कोई नई चीज़ नहीं पेश कर रहा। यह तालीम सनातन से सनातन और पुरातन से पुरातन है। मैं मन्दिर, गिरजा, गुरुद्वारा व मस्जिद सब जगह सत्संग करता हूं। किसी इन्सान पर ज़बरदस्ती कोई चीज़ लागू नहीं की जाती मगर प्रेम व मीठी ज़बान से, जो चीज़ सब धर्म ग्रन्थों में लिखी है, पेश की जा सकती है। एक और प्रश्न था कि इस जीवन में ही क्या इंसान सच्चण्ड तक पहुंच सकता है? हजूर महाराज जी ने फरमाया कि इन्सान को अपनी पूरी लगन से मेहनत करनी चाहिए। बाकी इन्सान एक दिन में पी० एचडी० नहीं बन सकता। शाम छह बजे मांट्रियाल के सारे सत्संगी हजूर महाराज जी को मिले। हजूर ने पहले सब के दिल का हाल पूछा, फिर फरमाया, "आप को मिल कर मुझे बड़ी खुशी हुई है।" एक नौजवान ने एक पत्थर पेश किया कि महाराज

ज्ञानी जी का पन्द्रहवां पत्र जी इसे Bless करें (आर्शीवाद दें)। फरमाया, “किस लिए?” उस ने फिर प्रार्थना की कि हजूर इस पत्थर को आशीश दें। हजूर महाराज ने फरमाया, “इस पत्थर की बजाय मैं तुम को आर्शीवाद देता हूं।” हजूर महाराज ने मांट्रियाल के सत्संगीजनों को बाकायदा भजन—सुमिरन करने और डायरी रखने की ताकीद की।

रात के आठ बजे यूनिवर्सिटी में प्रवचन था। सर जार्ज विलियम यूनिवर्सिटी के डिपार्टमेंट ऑफ रिलिजनज़ (धर्म विभाग) के प्रोफैसर रासनर ने हजूर महाराज जी का स्वागत सत्कार किया। हजूर महाराज जी ने अपने प्रवचन में फरमाया कि परमात्मा अनाम है, अशब्द है। जब वह इज़हार में आया (व्यक्त हुआ) तो नाम और शब्द (ज्योति और नाद) रूप में व्यक्त हुआ। अनाम और अशब्द अवस्था में वह गुप्त था। जब उस ने चाहा, “मैं एक से अनेक हो जाऊँ,” “एको कवाओ तिसते होए लक्ख दरियाओं” तो यह सारी सृष्टि इज़हार में आई (अस्तित्व में आई), “नामे ही ते सब जग होवा।” नाम ही से यह सारा जहान बना है। नाम ही सारे जहान की कण्टोलिंग पावर अर्थात् करन—कारण सत्ता है। इस करन—कारण प्रभु सत्ता को मनुष्य जन्म ही में जाना जा सकता है। जब यह ताकत खण्डों—ब्रह्मण्डों से हटती है तो खण्डों—ब्रह्मण्डों की प्रलय हो जाती है, जब शरीर से हटती है तो शरीर की प्रलय हो जाती है। इस ताकत को जानने के लिए हमें ऐसी हस्ती के पास जाना होगा जिस के अन्तर में नाम या शब्द प्रकट है। ऐसी हस्ती की संगति से हमारे अन्तर में भी प्रकट हो सकता है अर्थात् नाम की पूँजी हमें मिल जाती है। “सन्तन मोक्षो पूँजी सौपी।” इस पूँजी को प्राप्त कर के इस की रोज़ कमाई करने से मनुष्य की आत्मा नाम में अभेद हो जाती है।

24 अक्तूबर: सुबह हजूर महाराज जी ने 59 आदमियों—औरतों

तीसरी विश्व यात्रा

को नाम दान दिया। पुराने सत्संगियों को अलेहदा भजन बिठा दिया गया। सब को हजूर महाराज की दया मेहर से अन्तर में अच्छा अनुभव हुआ। शाम चार बजे हजूर महाराज ने हाल में फिर सब को दर्शन दिये और सवाल—जवाब हुए। एक ने पूछा, “क्या इस वक्त आप की समाधि की अवस्था है?” हजूर महाराज जी ने कहा कि जब कोई इंसान पी० एचडी० हो जाए तो उस को हर वक्त इल्म काम में नहीं लाना पड़ता। उस के पास डिग्री है। एक ने पूछा, “क्या आप को समाधि के लिये अभ्यास करना पड़ता है?” फरमाया, “जब इंसान पी० एचडी० कर लेता है तो उस को ए.बी.सी. याद नहीं करनी पड़ती मगर जब तक वह इस दुनिया में है वह इन्द्रियों से काम लेता है। पर इस का यह मतलब नहीं कि वह इन को छोड़ नहीं सकता। वह जब चाहे इन्द्रियातीत हो सकता है, इन्द्रियों से ऊपर आ सकता है।” रात आठ से नौ बजे तक होटल में टाक थी। हजूर महाराज जी ने सुरत शब्द योग और दूसरे योगों का महत्व बताया। फरमाया, “हरेक योग की अपनी कीमत है। योग कई प्रकार के हैं। हठयोग का संबंध शरीर के साथ है। इस के करने से शरीर हृष्ट पुष्ट होता है। प्राण योग से आयु लम्बी होती है। ज्ञान योग के द्वारा इंसान किताबें पढ़ कर निष्कर्म निकालता है, ज्ञान की बातें करता है कि परमात्मा है, उस से हमारा क्या सम्बन्ध है, हम कहां से आए, कहां जाना है, इत्यादि। भक्ति योग में इंसान को कोई सहारा (काल्पनिक आधार) या इष्ट बनाना पड़ता है जिस से ध्यान एकाग्र कर सके मगर सुरत शब्द योग कुदरती योग है। यह रास्ता इंसान का बनाया हुआ नहीं। सुरत या ख्याल के परिपूर्ण परमात्मा के साथ, जो प्रकाश स्वरूप और नाद स्वरूप है, जुड़ने का नाम सुरत शब्द योग है। इस को बच्चा, बूढ़ा, जवान, अमीर, गरीब हर कोई कर सकता है। बाकी जितने योग हैं वे कलियुग में करने

ज्ञानी जी का पन्द्रहवां पत्र
के लिये हमारे पास उम्र नहीं। हजूर महाराज जी ने इस मज़मून को खोल
खोल कर समझाया। सुबह चार बजे महाराज जी दर्शनार्थ एकत्रित लोगों
से विदा लेकर हवाई अड्डे को रवाना हुए। हवाई जहाज़ का कमांडर हजूर
महाराज जी और उन के साथियों को सब से पहले हवाई जहाज़ में ले
गया ताकि वे अपनी मन पसन्द सीटों पर बैठ जायें।

हवाई जहाज़ साढ़े नौ बजे चला और साढ़े दस बजे टोरांटो पहुंच
गया। वहां मिस्टर और मिसिज़ शाईनराक (एडना और स्टेनले) जो
दिल्ली आश्रम में कई साल रह चुके हैं और उन के साथ पांच सौ आदमी
हजूर महाराज जी के स्वागत के लिए खड़े थे। सब से मिल कर हजूर मौंट
सॉडाऊ होटल पहुंचे जहां रात ठहरना था। वहां से पन्द्रह मिनट बाद
हजूर एक गिरजे में गये जहां लोग इन्तज़ार कर रहे थे। हजूर ने वहां
थोड़ा प्रवचन किया और फिर सब को भजन बिठा दिया। शाम चार बजे
बहुत से लोग हजूर से मिलने आए और भजन—सिमरन और दुनियावी
मामलों के बारे में बातचीत करते रहे। रात आठ बजे थियोसोफिकल
सोसायटी में सत्संग हुआ। हजूर महाराज विश्व यात्रा में पहली बार
टोरांटो आए थे। हाल खचाखच भरा हुआ था और बरामदों के बाहर भी
लोग खड़े थे। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि परमात्मा कहां मिल
सकता है? यह सवाल हमारे सब के सामने है। परमात्मा प्रेम है। आत्मा
उस की अंश है। यह भी प्रेम स्वरूप है। जिन के हृदयों में प्रेम (प्रभु प्रेम)
ठाठे मार रहा है, उन की संगति में हमारे अन्तर में भी प्रेम जाग उठता है:

“सुभर भरे प्रेम रस रंग । । उपजे चाओ साध के संग । ।”

जहां आग जल रही हो वहां से चिंगारी ले लेनी चाहिए। खुद
लकड़ियाँ रगड़ कर आग निकालना मुश्किल है। अगर कहीं एकाध
चिंगारी निकल भी जाए वह हमेशा नहीं रहती। प्रेम आत्मा का गुण और

तीसरी विश्व यात्रा
स्वभाव है। जो यह कहता है कि मैं परमात्मा से प्यार करता हूं और लोगों
को जिन के सब के अन्तर परमात्मा बैठा है, उन को दुःख देता है उस का
सच्चा प्रेम नहीं बना। बाबा फरीद कहते हैं:

“जो तो पिया मिलन दी सिक्क ता हिया न ठाही काही दा ।”

26 अक्तूबर: सुबह सवेरे हजूर ने 24 मर्दों—औरतों को नामदान
दिया। हजूर की दया मेहर से सब को अन्तर्मुख अच्छा अनुभव
अपनी—अपनी हृदय की भूमि के अनुसार हुआ। हजूर महाराज जी ने नाम
की कमाई और आगे तरकी कि लिये नियमित रूप से अभ्यास करने और
डायरी रखने का आदेश दिया। साढ़े बारह बजे हजूर वापस होटल लौटे
और दोपहर डेढ़ बजे हवाई अड्डे पर बहुत लोग दर्शन के लिये आये हुए
थे। हजूर ने हाथ जोड़ कर सबसे विदा ली। हवाई जहाज़ तीन बजे चल
कर साढ़े चार बजे शिकागो पहुंच गया। वहां का प्रोग्राम अगली चिट्ठी में
आप को लिखा जाएगा।

हजूर महाराज जी की तरफ से आप सब को प्यार पहुंचे।

दास

हरचरण सिंह, ज्ञानी भगवान सिंह

34. ज्ञानी जी का सत्रहवां पत्र

माननीय ताई जी,

हजूर महाराज जी की दया से आप सब ठीक होंगे। अब मांट्रियाल से आगे शिकागो के दौरे का हाल सुनिये।

शिकागो हवाई अड्डे पर ओल्मा डोननबर्ग, राजी (हजूर का पोता) और भारी संख्या में संगत स्वागत के लिये आई हुई थी। हजूर ने सब को दर्शन दिये। सब की ज़बान पर मास्टर, मास्टर (सत्गुर) था और आंखों से आंसू बह रहे थे। सब से मिलने के बाद कार में बैठ कर हजूर अपने निश्चित निवास स्थान बैल्मांट होटल पहुंचे। शाम 6 बजे एक पत्रकार हजूर का इंटरव्यू लेने आया (फोटो आप को पहले भेजी है)। देर तक परमार्थ के बारे में सवाल-जवाब होते रहे। वह बहुत प्रभावित और प्रसन्न हुआ। हजूर महाराज ने उस से कहा कि सतयुग कोई आसमानों से गिरने वाला नहीं, कलियुग से ही सतयुग बनेगा। और वह युग आ रहा है। इसी लिये सब जगह लोगों के अन्दर जागृति आ रही है।

होटल में एक बड़े हाल में रात साढ़े सात बजे सत्संग हुआ। विषय था, “सन्तों का मार्ग क्या है?” हजूर ने फरमाया, “सन्तों का मार्ग किसी इंसान का बनाया हुआ नहीं है, यह मालिक का बनाया हुआ है। यह कुदरती साधन है जिस को बच्चा, बूढ़ा, जवान हर कोई कर सकता है। बाकी साधनों से यह आसान साधन है। हठयोग, प्राणयोग आदि के लिये कलियुग के ज़माने में इतनी उम्र नहीं रही कि लोग ये साधन कर सकें। ये पिछले युगों के साधन हैं। सतयुग में कहते हैं, इंसान की उम्र एक लाख वर्ष की थी, त्रेता में घट कर दस हजार वर्ष, द्वापर में एक हजार और कलियुग में सौ वर्ष रह गई है। इस लिए कबीर साहब, गुरु नानक साहब

तीसरी विश्व यात्रा

और अन्य महापुरुषों ने सुरत शब्द योग का रास्ता अपनाया और लोगों को यही तालीम दी।” रात साढ़े दस बजे पचास साठ स्त्री पुरुष दर्शन करने ऊपर हजूर के कमरे में आए और उन से अपनी व्यक्तिगत समस्याओं और भजन—सुमिरण के विषय में बातचीत की।

27 अक्टूबर: सुबह भजन सुमिरण बिठाने के प्रोग्राम के बाद सवाल—जवाब हुए। एक ने पृष्ठा कि जिज्ञासु शरीर कर के गुरु से दूर हो तो वह अन्तर में कैसे तरकी कर सकता है? हजूर ने फरमाया कि गुरु सत्ता नाम देते समय हरेक शिष्य के अन्तर में बैठ जाती है और उस के हर काम को देखती है। वह कभी उस से दूर नहीं होती। हमारे हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज फरमाया करते थे कि गुरु जब नाम देता है तो शिष्य के अंतर हो बैठता है और उस वक्त तक साथ नहीं छोड़ता जब तक उसे धुरधाम न पहुंचा ले। गुरु पावर कभी मरती नहीं। गुरु जिस्म के अन्तर काम कर रही परिपूर्ण परमात्मा की ताकत है। इस लिए घबराने की ज़रूरत नहीं। सिर्फ हमारा मुँह उधर होना चाहिये। दोपहर एक से दो बजे तक इलीनायास यूनिवर्सिटी में हजूर महाराज ने टाक दी जिस में सुरत शब्द योग तथा अन्य दूसरे योगों के बारे में खोल कर समझाया। यहां लोग हठयोग, प्राणयोग आदि को प्रभु प्राप्ति का रास्ता समझते हैं। हजूर महाराज ने फरमाया कि हरेक योग की अपनी कीमत है और अपनी हद है लेकिन सुरत शब्द योग कुदरती रास्ता है। सुरति कहते हैं ख्याल को, ध्यान को, जो आत्मा का बाहरी इज़हार या अभिव्यक्ति है। सुरति या ख्याल को अन्तर नाम या शब्द के साथ जोड़ना, जिस में ज्योति और नाद दोनों चीजें हैं, और इस साधन की कमाई या अभ्यास करना, इस का नाम है सुरत शब्द योग। इस के लिये हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि को जो मन को अस्थिर रखते हैं और चेतनता को कम करते हैं, उन का दमन करना है, उन पर काबू पाना है। जो चीजें काम, क्रोध आदि को बढ़ाने और चेतनता को कम करने वाली हैं उन्हें हम ने छोड़ना है और

ज्ञानी जी का सत्रहवां पत्र

जिन से चेतनता बढ़े, उन को ग्रहण करना है। रात को साढ़े सात बजे फिर सत्संग था कि परमात्मा को कैसे देखें? हजूर ने फरमाया कि आम लोगों के लिये यह पहली है कि क्या परमात्मा है? इस के लिये परमात्मा मार्गदर्शन के लिये पूर्ण पुरुषों को दुनिया में भेजता रहता है। वे आ कर गवाही देते हैं कि हाँ परमात्मा है।

हजूर महाराज ने फरमाया कि परमात्मा को देखने के लिये पहला कदम यह है कि इंसान अपने मन को खड़ा करे। पानी में लहरें उठ रही हैं, लहरें शान्त हों तभी चेहरा साफ दिखेगा। इसी तरह मन में संकल्प—विकल्प की लहरें शान्त होने पर इंसान अपने आप को व प्रभु को देख सकेगा। अच्छे कर्म परमार्थ के करीब और बुरे कर्म दूर ले जायेंगे। नेक—पाक सदाचारी जीवन मन की पवित्रता के लिए पहला कदम है। यह बाहर की सफाई नहीं कि एक दो कोट सफेदी के पोत कर दाग को छिपा दिया जाए। यह अन्तर की सफाई है, रोम—रोम की सफाई होती है। जब तक हम बुरे काम छोड़ कर नेक—पाक नहीं बनते, पिण्ड से ऊपर आ कर नाम के साथ नहीं लगते, मालिक को हम देख नहीं सकते। धर्मग्रन्थों का स्वाध्याय नेक कर्म है मगर उन में जो लिखा है उस को प्राप्त करना असल चीज़ है। धर्मग्रन्थ क्या कहते हैं? यही न कि परमात्मा आप के अन्तर में है, अन्तर चलो। अन्तर्मुख होने के लिये किसी संत सत्गुरु की शरण में जाओ जिस ने परमात्मा का अनुभव किया है, उस की संगति में एक दिन आप भी उस गति को प्राप्त कर लोगे जिस को उस ने पाया है। खाली पढ़ने से यह गति नहीं मिलती। इसी लिये एक मुसलमान फकीर ने कहा है कि यदि हज करना चाहते हो तो किसी हाजी को साथ ले लो जिस ने हज किया है, जो रास्ता जानता है।

28 अक्तूबर: सुबह सवेरे हजूर महाराज ने परमार्थाभिलाषियों को नामदान दिया। कुल मिला कर 62 स्त्री पुरुषों ने नाम लिया। हजूर

तीसरी विश्व यात्रा

महाराज की दया मेहर से सब को अन्तर्मुख ज्योति और अखण्ड कीर्तन (नाद) की पूंजी मिली। दोपहर साढ़े तीन बजे शिकागो की थियोसोफिकल सोसाइटी में हजूर महाराज जी की टाक थी। सोसाइटी के अध्यक्ष ने हजूर महाराज का भव्य स्वागत किया। अपने प्रवचन में हजूर ने बताया कि अन्तर में ज्योति का विकास और अखण्ड कीर्तन का अनुभव कैसे हो सकता है? हजूर ने फरमाया कि योगीजन इस अनुभव के लिये हज़ारों वर्ष तप कर हड्डियों का ढेर हो गये मगर यह चीज़ उन को न मिली। पूर्ण पुरुष दुखी जनता पर दया करते हैं। अपने जीवन की रौ का, Life impulse का उभार दे कर उन की आत्मा को पिण्ड से ऊपर ला कर परिपूर्ण परमात्मा से जोड़ देते हैं। हजूर महाराज की टाक सुन कर लोग बहुत हैरान हुए। ऐसी बातें उन्होंने पहले कभी नहीं सुनी थीं। वहां से हजूर मिसिज़ ओला डोननबर्ग के पति को देखने अस्पताल गये। वे हजूर के दर्शन पा कर बड़े खुश हुए। बाद में अपनी पत्नी से उन्होंने कहा कि अब जब भी मेरी नज़र किसी पर पड़ती है मुझे हजूर महाराज का स्वरूप दिखाई देता है। शाम 6 बजे मिसिज़ ओला डोननबर्ग ने हजूर महाराज के आने की खुशी में हजूर महाराज और सारे ग्रुप लीडरों को होटल में डिनर दिया जिस की फोटो आप को भेज रहे हैं।

रात को साढ़े सात बजे होटल में सत्संग हुआ। विषय था, “प्यार क्या चीज़ है?” हजूर महाराज ने कहा, “आप जानते ही हो प्यार किस को कहते हैं। क्या आप प्यार को व्यान कर सकते हो? यह बड़ी जटिल समस्या है। प्यार दिल को खींचता है। पहले सत्गुरु शिष्य से प्यार करता है। शिष्य का प्यार reciprocal है अर्थात् इस प्यार के जवाब में है। पूर्ण पुरुष दुनिया में आ कर प्यार का प्रचार करते हैं। क्योंकि परमात्मा इन के अन्तर में प्रकट होता है और परमात्मा प्रेम का सागर है, वे (पूर्ण पुरुष) जहां भी जाते हैं सर्वत्र प्रेम की धारा बिखेरते चले जाते हैं। वे हमेशा यह

ज्ञानी जी का सत्रहवां पत्र
बात कहते हैं कि प्यार आप के अन्तर में है। उस को (प्यार को) आप कैसे
प्रकट कर सकते हैं? अगर आप किसी गँधी की दुकान पर जा कर वहां से
कुछ न भी खरीदें तब भी आप के कपड़ों से सुगन्ध आने लग जाएगी।
अगर दुकानदार साथ में एक शीशी इत्र भी दे दे फिर तो क्या कहने। प्रेम
की पूंजी सत्गुरु नामदान के समय शिष्य को देते हैं। जितना अन्तर में
नाम के साथ जुड़ोगे, अन्तर में प्रेम जाग उठेगा। Love beautifies
everything, प्रेम हर चीज़ को खूबसूरत कर देता है और प्रेम बदला
नहीं मांगता, लेना नहीं जानता वह तो देना, कुरबानी करना जानता है,
सेवा करना जानता है। Love knows service and sacrifice,
जब तक यह शरीर है, देते रहो। जितनी ज्यादा कुरबानी करोगे उतना
ज्यादा प्रेम आप को मिलेगा।

29 अक्तूबर: सुबह साढ़े नौ बजे यूनिटेरियन चर्च में टाक थी।
चर्च के मिनिस्टर ने हजूर महाराज जी का स्वागत किया। हजूर ने
फरमाया, “अपने आप को जानने के बाद सब दुखों का इलाज हो जाता
है। लोग इसी कारण गिरजे, मन्दिर, गुरुद्वारे वगैरह में जाते हैं। वहां क्या
है धर्म स्थानों में? वहां ज्योति और नाद के चिन्ह, नमूने रखे हुए हैं। वह
ज्योति और नाद आप के अन्तर में है। परमात्मा ज्योति है, नूर है। हम इस
नूर के बच्चे हैं लेकिन जब तक इन्सान खुद आप अपने अन्तर में इस चीज़
को नहीं देखता, उस की तसल्ली नहीं होती। इस मज़मून को खोल कर
पेश किया। इस के बाद सवाल—जवाब हुए। एक ने पूछा, “भजन करते
समय नींद पर कैसे काबू पाया जाए?” फरमाया, “नींद आती है अगर पूरी
नींद न ली जाए या फिर पेट खराब होने के कारण।” हजूर ने इस बारे में
एक महात्मा का उदाहरण दिया। एक शिष्य ने उस से कहा कि मैं भजन
बैठता हूं तो नींद आ जाती है। महात्मा बोले, “अपने पेट पर नज़र रखो।”
एक और आदमी गया और महात्मा से शिकायत की कि मैं भजन में

तीसरी विश्व यात्रा

एकाग्रचित् नहीं बैठ सकता, मन भटकता रहता है। उस को भी वही जवाब दिया, पेट पर नज़र रखो। तो खुराक का मन पर बड़ा भारी असर पड़ता है। इसी लिए हज़रत मुहम्मद साहब और अन्य सारे महापुरुषों ने कहा कि भजन—सुमिरन करने के लिये चाहिये कि पेट का आधा हिस्सा रोटी से भरो, चौथाई हिस्सा पानी से भरो। शेष चौथाई खाली हिस्सा खुदा के नूर से भर जाएगा।

रात साढ़े सात बजे पामर हाऊस में सत्संग था, कर्मों की गति के विषय पर। हजूर महाराज जी ने बताया कि तीन प्रकार के कर्म हैं—संचित, प्रारब्ध और क्रियमान। संचित कर्म वे हैं जो जन्म—जन्मान्तर से जमा हो रहे हैं। इन में जो कर्म फलीभूत होते हैं— उन के अनुसार यह जन्म हमें मिलता है, ये प्रारब्ध कर्म कहलाते हैं। छह प्रकार के प्रारब्ध कर्म हैं, दुख—सुख, अमीरी—गरीबी, यश—अपयश, जो मनुष्य को इस जीवन में प्रारब्ध अनुसार मिलते हैं। और क्रियमान कर्म वे हैं जो अब हम कर रहे हैं। कर्मों के चक्कर से छूटना मुश्किल है। नेक कर्म करो नेक फल, बुरे कर्म का बुरा फल, यह चक्कर चलता रहता है। इसी लिए भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा, नेक कर्म और बुरे कर्म जीव को बांधने के लिए दोनों समान हैं, जैसे लोहे की बेड़ी हो या सोने को बेड़ी, दोनों बांधती हैं। जब तक यह नेह कर्म न हो, इन्सान कर्मों के चक्कर से छूट नहीं सकता। नाम के साथ जुँड़ने से ही इंसान नेह कर्म हो सकता है। “सो नेहकर्म जो शब्द विचारे।।” हजूर महाराज ने इस विषय को खोल कर समझाया।

30 अक्तूबर: सुबह हजूर महाराज उन माताओं और बच्चों से मिलने पामर हाऊस गये जो सत्संग में नहीं आ सकते थे। उन्हें दर्शन देने के बाद आ कर लोगों को भजन बिठाया। शाम चार बजे दर्शनाभिलाषियों से बातचीत की। रात साढ़े सात बजे सत्संग था। सत्संग जाते हुए रास्ते में राजी (हजूर महाराज के पोते सरदार राजिन्द्र सिंह) के घर गये। वहां

ज्ञानी जी का सत्रहवां पत्र
सब को प्रसाद दिया, चाय पार्टी और फोटो हुई। सत्संग में हजूर ने सच्चे
और सुच्चे जीवन (सदाचार) के विषय की खोल कर व्याख्या की।

31 अक्तूबरः नियामानुसार सुबह सवेरे लोगों को भजन बिठाया
गया, बाद दोपहर चार बजे दर्शन और बातचीत और रात को सत्संग
हुआ। विषय था, नाम या शब्द क्या है? हजूर महाराज ने इस विषय की
खोल खोल कर व्याख्या की।

1 नवम्बरः हजूर महाराज ने सुबह सवेरे परमार्थाभिलाषी
नर-नारियों को नामदान दिया। 65 स्त्री पुरुषों ने नाम लिया। इस के बाद
हजूर मिसिज़ ओल्लाडोननबर्ग के पति को देखने अस्पताल गये। शाम
चार बजे दर्शन और बातचीत और रात को होटल में अन्तिम सत्संग था।
सारा हाल खचाखच भरा हुआ था। बाहर अन्य शहरों से भी लोग दर्शन
और सत्संग के लिये आए हुए थे।

2 नवम्बरः सुबह साढ़े आठ बजे हजूर होटल की दसवीं मंज़िल
पर अपने कमरे से नीचे आए जहां बहुत लोग दर्शनों के लिये खड़े थे। सब
को हाथ जोड़ कर हजूर कार में बैठ गये और पौने घंटे में शिकागो
एयरपोर्ट पहुंच गये। वहां जहाज़ चलने तक संगत चरणों में बैठ कर
दर्शन करती रही। दस बज कर बीस मिनट पर जहाज़ चला और दो घंटे
में अगले पड़ाव सिनसिनाटी नगर के हवाई अड्डे में पहुंच गया। वहां के
हालात अगली चिट्ठी में लिखेंगे। हजूर महाराज की तरफ से सबको प्यार
पहुंचे।

सत्कार सहित,

दास

हरचरण सिंह, ज्ञानी भगवान सिंह

35. ज्ञानी जी का अठारहवां पत्र

वैनकुवर

1 नवंबर, 1972

माननीय ताई जी,

हजूर महाराज जी की दया—मेहर से आप सब राजी होंगे। इस से पहली चिट्ठी में शिकागो के हालात आप को लिखे थे। अब सिनसिनाटी और उस से आगे के बारे में लिखा जा रहा है।

शिकागो से डाल्टा कम्पनी के हवाई जहाज में हजूर महाराज सिनसिनाटी रवाना हुए। दोपहर बारह बज कर बीस मिनट पर जहाज सिनसिनाटी हवाई अड्डे पर उत्तरा जहां की ग्रुप लीडर मिसिज कार्ल कोथ और बहुत से प्रेमी हजूर महाराज जी के स्वागत के लिए खड़े थे। जैसे इटली के शहर मीलान में पीयरे मरसीनारो हजूर महाराज जी से मिल कर कभी रोते थे, फिर खुद ही हंस पड़ते थे, वही अवस्था यहां की ग्रुप लीडर मिसिज कोथ की थी। उस की आंख से बेअद्धियार आंसू बह रहे थे। रोती भी जाए, हँसती भी जाए। ज़बान से बार बार मास्टर, मास्टर (सत्गुरु) कहती जाए। अजीब हालत थी। हजूर महाराज ने उसे कहा, “तुम तो रो रही हो, जाने का रास्ता कौन बताएगा?” हवाई अड्डे से चल कर हजूर होटल बरनान मोनर पहुंचे जहां ठहरने की व्यवस्था की गई थी। थोड़ी देर अपने कमरे में ठहर कर हजूर नीचे हाल में आए जहां बहुत लोग दर्शन के लिये एकत्रित थे। हजूर ने सब का हाल पूछा और बातें कीं।

शाम चार बजे दर्शन और सवाल—जवाब का प्रोग्राम था। तरह—तरह के सवाल लोगों ने पूछे। एक ने सवाल किया कि हमें खाना खाते

ज्ञानी जी का अठारहवां पत्र
वक्त सुमिरण करना चाहिये और रोटी सब से अलग—थलग एकान्त में
खानी चाहिये? हजूर महाराज जी ने सुमिरण के प्रसंग में एक मिसाल दी।
फरमाया, “अगर आप को चोट लग जाए तो क्या आप उस दर्द को याद
करोगे? उस का सुमिरण करोगे? उस की चुभन अपने आप होती रहेगी,
हर वक्त रहेगी। इसी तरह सुमिरण पक जाए (अर्थात् परिपक्व हो जाए)
तो अपने आप चलता रहता है हर वक्त। इसी प्रकार और कई सवाल हुए
जिन का तत्काल उत्तर हजूर ने सीधे सादे शब्दों में दिया। रात के आठ
बजे एजकिलफ कालेज में हजूर महाराज की टाक थी। कालेज के
प्रेज़ीडेंट ने हजूर महाराज जी का भव्य स्वागत किया। हजूर ने पूर्ण पुरुषों
की तालीम की व्याख्या करते हुए बताया कि यह पुरातन से पुरातन और
सनातन से सनातन तालीम है जो हमेशा से चली आई है। पूर्ण पुरुष
समय—समय पर इस तालीम को ताज़ा करने, इसका व्यक्तिगत अनुभव
लोगों को देने के लिये दुनिया में आते हैं।

3 नवंबर: सुबह सवेरे हजूर महाराज ने युनिटी टेम्पल में लोगों को
भजन बिठाया। बाद में हजूर के निवास स्थान पर बहुत लोग मिलने के
लिए आए। शाम चार बजे सवाल—जवाब का प्रोग्राम था। एक सज्जन ने
हजूर से पूछा, “क्या कोई ऐसा तरीका है जिस से हम को यह पता लग
सके कि यह प्रारब्ध कर्म है यह क्रियमान कर्म अर्थात् नया कर्म है।” हजूर
महाराज जी ने फरमाया कि स्थूल और सूक्ष्म मण्डल को पार कर कारण
मण्डल में चलो तो कर्मों का सारा सिलसिला आप देख और समझ सकते
हैं। रात को सिनसिनाटी यूनिवर्सिटी, विंडसर प्लेस में हजूर महाराज ने
टाक दी। यहां पर सत्संग यूनिवर्सिटी हालों या गिरजों में हो रहे हैं।
यूनिवर्सिटी में टाक देते हुए हजूर महाराज ने सन्त मत के बारे में खोल
कर समझाया।

तीसरी विश्व यात्रा

4 नवंबरः सुबह सवेरे हजूर महाराज ने परमार्थाभिलाषी नर-नारियों को नामदान दिया। शाम को चार बजे लोगों को दर्शन दिये, उन से बातचीत की, सवालों के जवाब दिये, सांसारिक और परमार्थ संबंधी समस्याओं का समाधान किया। रात को एक नई जगह सत्संग था, फिर भी भारी संख्या में लोग सत्संग सुनने आए थे।

5 नवंबरः सुबह मुंह अंधेरे डेनवर जाना था। इतवार होने के कारण बाहर से भी लोग आए हुए थे। सुबह सात बजे हजूर होटल में अपने कमरे से नीचे उतरे और प्रेमीजनों को जो दर्शनों के लिए वहाँ खड़े थे हाथ जोड़ नमस्कार किया और सब से विदा हो कर कार में बैठ एयरपोर्ट रवाना हो गए। वहाँ भी बहुत लोग आगे ही पहुंचे हुए थे। हवाई जहाज़ आठ बजे कर पच्चीस मिनट पर चलना था, अभी समय बाकी था। हजूर महाराज वहाँ एयरपोर्ट पर सत्संगीजनों के बीच बैठ गए। हजूर महाराज की सोहबत संगत की मर्स्ती के बाद वियोग का दुख उन्हें कचोट रहा था। आंखों से बेअखिल्यार आंसू बह रहे थे। जैसे ही जहाज के चलने का वक्त हुआ कम्पनी वालों ने हजूर महाराज और उन के साथ जाने वालों को सब से पहले अंदर बिठा दिया। बाकी मुसाफिरों को बाद में जगह मिली। जहाज पूरे 10 बजे डेनवर पहुंच गया। रास्ते में पहाड़ ही पहाड़ थे, इस लिए जहाज 37 हजार फुट ऊँचा उड़ता रहा। पहाड़ बर्फ से ढके होने कर के सफेद नज़र आते थे। हजूर के डेनवर पहुंचने से पहले इतनी बर्फ पड़ी कि वहाँ लोगों के घरों के आगे, बागों में, सड़कों पर बर्फ की तह जमी थी। लोग कहते थे कि दो दिन में पन्द्रह इंच बर्फ पड़ी है। हजूर महाराज के पहुंचते ही धूप निकल आई। हजूर जहाँ जाते हैं वहाँ मालिक पहले ही मौसम ठीक कर देता है।

डेनवर के हवाई अड्डे पर बहुत लोग हजूर महाराज के स्वागत के

ज्ञानी जी का अठारहवां पत्र
लिये खड़े थे। जहाज़ लेट होने के कारण इन लोगों को बहुत देर इन्तज़ार
करना पड़ा। हजूर महाराज के साथ पच्चीस प्रेमीजन जहाज़ में सफर कर
रहे थे। सब के लिए जहाज़ वालों को विशेष रूप से वेजीटेरियन (वैष्णो)
भोजन का प्रबंध करना पड़ा जिस के कारण जहाज़ आधा घंटा लेट हो
गया। यहां यह ज़िक्र करना मुनासिब मालूम होता है कि जिस कम्पनी के
जहाज़ में हजूर महाराज सफर करते हैं वहां का पायलट और अन्य
कर्मचारी खुशी से फूले नहीं समाते और लाऊड स्पीकर पर बार-बार यह
घोषणा करते हैं कि हमें बड़ी खुशी है कि ऐसे महापुरुष हमारे जहाज़ में
सफर कर रहे हैं, हम उन का हार्दिक स्वागत करते हैं। डेनवर में रुहानी
सत्संग के ग्रुप लीडर मिस्टर लियों पांचे ने हजूर महाराज का स्वागत
किया। वहां एकत्र सत्संगीजनों से मिल कर हजूर कार में बैठ विलियम
सालह अपार्टमेंट होटल पहुंचे जहां उन के ठहरने की व्यवस्था की गई
थी। शाम चार बजे हजूर डेनवर मोटर होटल में प्रेमीजनों को दर्शन देने
के लिए गये। वहां हजूर ने थोड़ा प्रवचन किया और सवालों के जवाब
दिये। रात साढ़े सात बजे से साढ़े आठ बजे तक Houston Fine
Arts Centre Temple Buell College में टाक हुई। विद्यार्थियों
और प्रोफेसरों ने बड़ी एकाग्रता से हजूर महाराज का प्रवचन सुना।
इसके बाद डेनवर के ग्रुप अर्थात् वहां के सत्संगीजन हजूर महाराज से
मिलने आए। वहां फोटो भी ली गई जो आप को भेजी जा रही है।

6 नवंबर: सुबह नियामनुसार लोग भजन बैठे। हजूर महाराज
जहां भी जाते हैं, लोग पहले से ज्यादा तादाद में भजन-सुमिरण के लिये
आते हैं। भजन बैठने वालों की संख्या बढ़ने का कारण यह है कि लोगों
को हजूर की दया से तत्काल अनुभव की पूंजी मिल जाती है। दूसरी
radiation अर्थात् हजूर के दिव्य मण्डल में आ कर दुनिया भूल जाती है
और ऐसा आनंद और मरती मिलती है जिसे शब्दों में वर्णन नहीं किया जा

तीसरी विश्व यात्रा

सकता। इस प्रकार अपने आप ही प्रचार हो जाता है। शाम चार बजे हजूर दर्शनाभिलाषियों से मिलने कोच रूम हार्ट और डेनवर मोटर होटल में गये। रात को रेजंसी इन इंटरस्टेट में हजूर महाराज जी का टाक हुई। टाक के बाद कई लोग मिलने आए।

7 नंवंबर: हजूर महाराज ने परमार्थाभिलाषी नर-नारियों को नामदान दिया। नामदान से पहले डेनवर के एक प्रेस रिपोर्टर ने हजूर महाराज का इंटरव्यू लिया और संत मत के बारे में कई सवाल किये। शाम चार बजे हजूर फिर दर्शन देने डेनवर मोटर होटल गये। रात साढ़े सात बजे हजूर ने टाक दी।

8 नवंबर: सुबह आठ बजे हजूर महाराज अपने कमरे से नीचे आए और दर्शन के लिये एकत्रित प्रियजनों को हाथ जोड़ कर नमस्कार किया और अगले पड़ाव वैनकोवर जाने के लिए एयरपोर्ट को रवाना हो गये। मिस्टर रीनो सिरीन और उन की पत्नी एयरपोर्ट से वापस घर चले गये क्योंकि उन्हें आगे कैलिफोर्निया जा कर हजूर महाराज के वहां पहुंचने से पहले सारा प्रबंध करना था। एयरपोर्ट पर बहुत लोग दर्शनों के लिए आए हुए थे। जहाज़ सवा नौ बजे चलना था। इस लिये हजूर महाराज एयरपोर्ट में अपने प्रियजनों के साथ बैठ गये और उन्हें दर्शन देते रहे। वैनकोवर जाने के लिए रास्ते में सीटल जाकर जहाज़ बदलना था। डेनवर से सीटल तक हजूर कांटीनेंटल एयरलाईंज़ के हवाई जहाज़ पर बैठे जहां से वैनकोवर के लिए जहाज़ बदला। सीटल में एक घंटा रुकना पड़ा क्योंकि एक और जहाज़ पहले चलना था। कम्पनी के कर्मचारियों ने हजूर महाराज के ठहरने के लिये पहले ही प्रबंध कर रखा था कि जहाज़ की प्रतीक्षा में हजूर को किसी प्रकार की कोई असुविधा न हो। सीटल से चल कर बाद दोपहर पौने दो बजे वैनकोवर पहुंचे। कैनेडा दूसरा देश है।

ज्ञानी जी का अठारहवां पत्र

इस लिये पास्पोर्ट आदि के लिए एक घंटा वहां लग गया लेकिन हजूर महाराज को अधिकारियों ने पहले ही एयरपोर्ट की सीमा से बाहर जाने की इजाज़त दी। बाहर छह—सात सौ लोग दर्शनों के लिये इन्तज़ार कर रहे थे। हजूर महाराज सब को मिले और यहां के ग्रुप लीडर एरन स्टीफन्स और उसकी पत्नी रतना के साथ कार में बैठ सेंटेंयाल मोटर होटल पहुंचे जहां हजूर महाराज के रहने की व्यवस्था की गई है। सब से पहले एक पत्रकार ने हजूर जी से सवाल—जवाब किये। उस ने अपनी पुस्तक 'वार एण्ड पीस' हजूर को भेंट की। पत्रकार से पौन घंटा बातें हुईं। फोटो आदि आप को भेज चुके हैं।

वेनकोवर में 8 से 11 नवंबर तक चार दिन का प्रोग्राम था। नियानुसार रोज़ सुबह सवेरे हजूर महाराज भजन बिठाते हैं और भजन की रुकावटों को दूर करते हैं। भजन युनिटी हाल में बिठाया जाता है। शाम चार बजे का समय रोज़ाना दर्शन और सवाल—जवाब के लिये निश्चित था और रात सात बजे से आठ बजे तक सत्संग। आठ तारीख रात्रि को मिस्टर पाल टविचल के ग्रुप के लोग हजूर महाराज से मिलने आए। उसने श्री हजूर महाराज जी से नाम लिया था और अब चोला छोड़ा गया है पाल टविचल के ग्रुप के लोगों ने आगे तरक्की के लिये प्रार्थना की और संत मत की तालीम के बारे में देर तक हजूर से बातें करते रहे। बाद में सब ने हजूर से नामदान ले लिया।

9 नवंबर: हजूर महाराज दोपहर एक बजे एक नई जगह तशरीफ ले गये जो आश्रम के लिये मिस्टर किरोली ने भेंट की है। हजूर महाराज जी पहले श्री किरोली के घर गये, फिर उस नई जमीन पर गये। वहां सैकड़ों की संख्या में नर—नारी एकत्रित थे। बड़ा मनोरम दृष्टि था। वहां ऊंचे ऊंचे पेड़ और दूर तक पहाड़ ही पहाड़ हैं। यह पहाड़ी इलाका है और

तीसरी विश्व यात्रा

बड़ा रमणीक स्थान है। थोड़ी देर ज़मीन पर क्या कुछ बनाया जाए, इस बारे में विचार—विमर्श होता रहा। इस के बाद हजूर महाराज ने सब को भजन बिठा दिया। यहां की फोटो और मूवी आप को भेज दी गई है। अन्त में महाराज जी ने उपरिथित सत्संगीजनों को प्रसाद दिया। यहां 10 हज़ार के करीब भारतीय रहते हैं जो ज्यादातर पंजाब के रहने वाले हैं, इस लिये यहाँ हजूर जी ने पंजाबी में सत्संग किया।

11 नवंबर: सुबह सवेरे हजूर ने परमार्थाभिलाषियों को नामदान दिया। 224 जीवों ने नाम लिया। नाम देने के बाद हजूर ने मिस्टर और मिसेज़ नागर, मिस्टर व मिसेज़ एरन स्टीफ़स के घरों में चरण डाले।

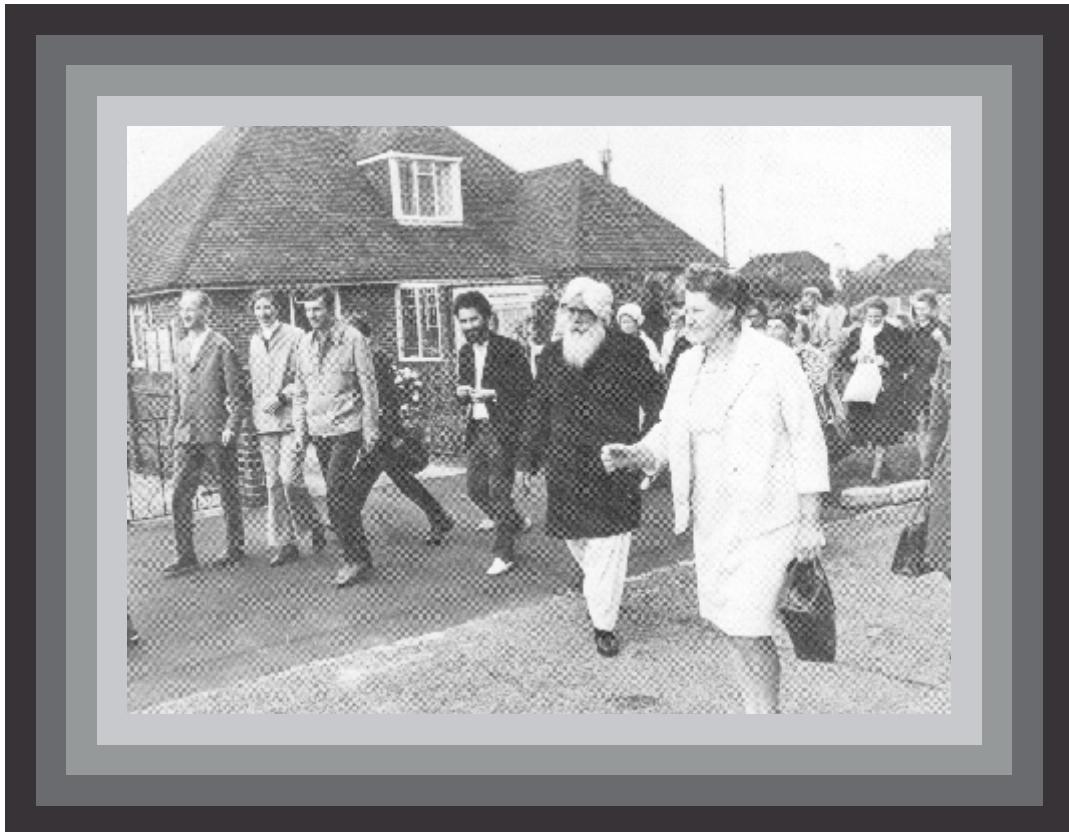
12 नवम्बर: सुबह सवेरे सानफ्रांसिस्को (केलीफोर्निया) से रवानगी थी। हजूर महाराज जी ने संगत को दर्शन दिये और नियमित रूप से भजन—सुमिरण और सत्संग करने की ताकीद की। हजूर ने फरमाया, ‘मैं चाहता हूं कि आप नेक—पाक बनो और भजन सुमिरण में पूरा वक्त दो ताकि रुहानी तरक्की कर के अपने निज देश पहुंच जाओ जहां से वापस न आना पड़े। इस के बाद हजूर ने संगत को नमस्कार किया और हवाई अड्डे को रवाना हो गये। जहाज़ एक घंटा लेट था, वह समय कस्टम और इमीग्रेशन वालों ने ले लिया। सवारियां ज्यादा होने के कारण भी समय ज्यादा लग गया। पहले सीटल पहुंचे। वहां से दूसरा हवाई जहाज़ लिया और दोपहर साढ़े बारह बजे सानफ्रांसिस्को (केलीफोर्निया) पहुंच गये। वहां के हालात अगली चिट्ठी में आप को लिखे जायेंगे।

हजूर महाराज जी की तरफ से सबको प्यार,

अदब के साथ,

दास

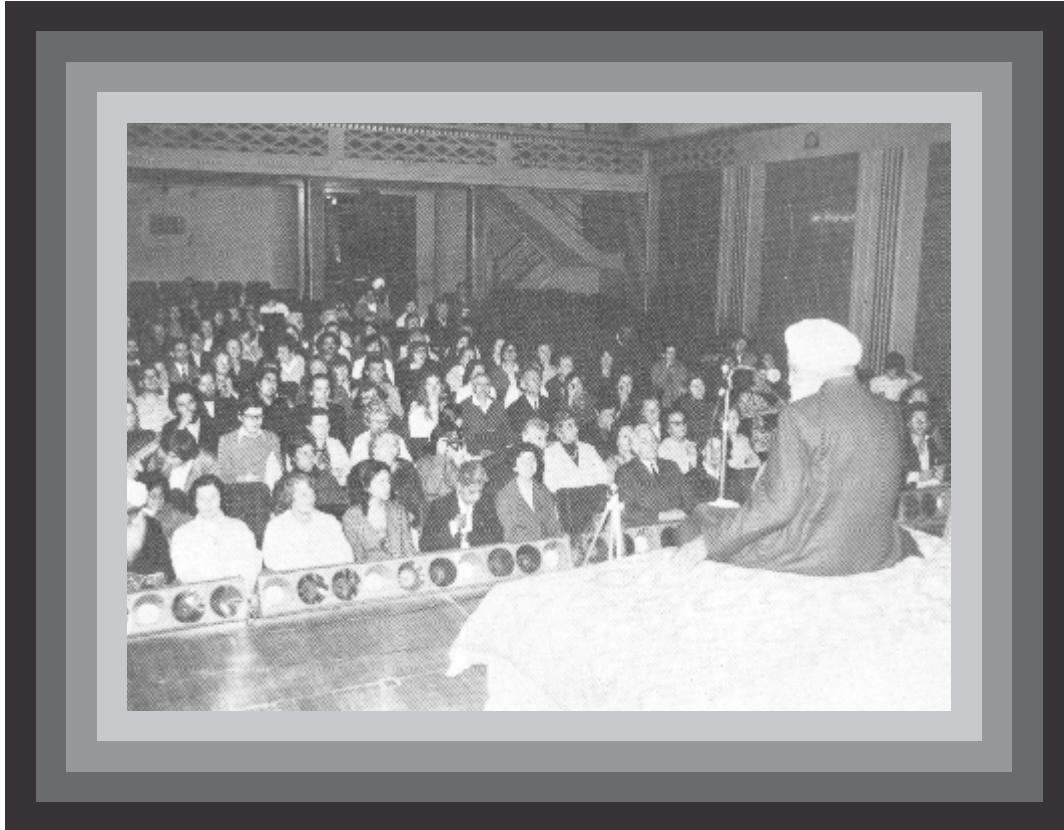
ज्ञानी भगवान सिंह, हरचरण सिंह



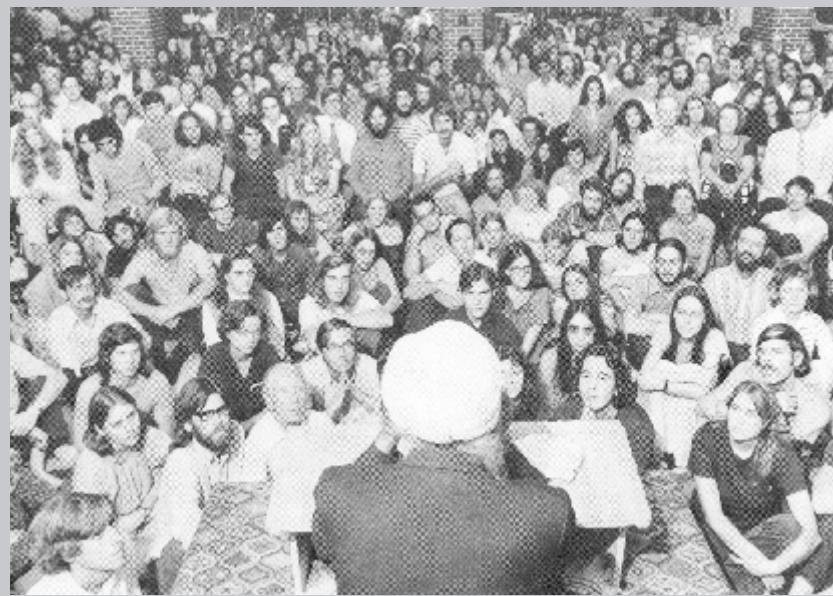
In Middlesex, England, September-1972



In Eastbourne. Standing to the Master's right is Sant Singh, the Master's representative in England. Also seen in the photo are S. Harcharan Singh, S.R. Bhalla (extreme left) and B.S. Gyani (extreme right).



In Stuttgart, Germany, August 1972, with some of the disciples
who helped with the satsang work in Europe



In St. Petersburg

36. हजूर महाराज जी का ग्यारहवां पत्र

2 दिसंबर, 1972

ताई जी और सब सत्संगी भाइयो और बहनो,

आज हम डलास से चल कर सेंट पीटरज़बर्ग जा रहे हैं। यहां 60 आदमियों ने नाम लिया है। यहां सिर्फ दो दिन ही ठहरे थे। उम्मीद है आप सब राजी खुशी होंगे। आप सब को मेरा प्यार पहुंचे।

दास
कृपाल सिंह

37. हजूर महाराज जी का बारहवां पत्र

ताई जी,

आप को चिट्ठी आज सवेरे लिख रहा था, वह तो लास एंजिलिस में ही रह गई। मैं जहाज़ में जा रहा हूं लेकिन ख्याल आप की तरफ है और सब की तरफ जो भी वहां हैं। उम्मीद है आप सब सुखी होंगे। सत्संग में सब को प्यार पहुंचे। सत्गुरु ताकत आप सब के सिर पर है और मुनासिब संभाल कर रही है। आप अपनी आंख का खास ख्याल रखो। ताकीद है।

आप सब दिल से नज़दीक हो। आप कभी दूर नहीं हुए। मेरी खुशी इसी में है कि आप नमूना बन कर दिखाओ कि आप सब सत्संगी हो। बाकायदा भजन करो और नेक-पाक बनो। हवाई जहाज़ पर जाते हुए मेरी शुभ भावना आप सब सब के साथ है। मेरे सत्गुरु के प्यारे बच्चों, आप सब को मेरा प्यार पहुंचे।

मेरी किस्मत में है, कोई मिल कर रो रहे हैं, कोई पीछे रह कर।
मालिक दया करे।

दास
कृपाल सिंह

38. ज्ञानी जी की उन्नीसवां पत्र

एनाहेम (केलिफोर्निया)

10 दिसम्बर, 1972

मानयोग ताई जी,

हजूर महाराज जी दया मेहर से आप शारीरिक तौर पर स्वस्थ होंगे। इस चिट्ठी में हजूर महाराज जी के सानफ्रांसिस्को (केलीफोर्निया) के दौरे का समाचार दे रहे हैं।

12 नवंबरः सथिले से चल कर हजूर महाराज जी दोपहर 12:20 बजे सानफ्रांसिस्को पहुंचे। हजूर महाराज जी के स्वागत के लिये मि. एण्ड मिसिज रेनू सीरीन, डाक्टर लवलेस और उन की पत्नी, ग्रुप लीडर स्इअर्टस शीला जड तथा 700–800 अन्य प्रेमीजन आये थे। डा. लवलेस की कार में बैठ कर हजूर महाराज मि. जड के घर आये। थोड़ी देर तक हजूर महाराज जी ने डा. लवलेस तथा उपस्थित सज्जनों से बातचीत की। फिर टी.वी. का अधिकारी हजूर महाराज जी की फोटो लेने आया। उस ने कई फोटो खेंची जो अगले दिन टेलीविज़न पर दिखाई गई। बड़ी अच्छी तसवीरें थीं। फोटो के साथ—साथ हजूर महाराज जी का प्रोग्राम टेलीविज़न पर प्रसारित किया गया। यहां पुलों का सिलसिला, जो आठ मील लम्बा है, उसे पार कर हजूर महाराज शहर में पहुंचे।

हजूर शाम को यूनिटेरियम चर्च में चार बजे दर्शन देने गये। वहां सब का हालचाल पूछा और बातचीत की। रात 8 बजे यहीं पर सत्संग हुआ। सत्संग का हाल बहुत बड़ा था, फिर भी भीड़ इतनी जमा हो गई कि पूरा हाल खचाखच भर गया। लोगों को जगह न मिल पाने से वे निराश

ज्ञानी जी का उन्नीसवां पत्र हो कर बाहर से ही वापस चले गये। इस जगह की फिल्म आप को भेजी जा रही है। रात 11 बजे एक स्वामी जी, उन के लड़के व कई सज्जन उन के साथ हजूर के पास आये। यह फोटो भी आप को भेजी है।

13 व 14 नवंबर: रोज़ाना सुबह सवेरे, भजन, शाम को दर्शन व रात को सत्संग, इस तरह से प्रोग्राम हुए। सत्संग के बाद भी कई लोग दर्शन के लिए आ जाते थे। पाकिस्तान के मियां शौकत, जो सत्संगी हैं, उन के भाई हजूर महाराज जी से मिलने आये। पाकिस्तान के कई सत्संगियों की चिट्ठियां यहां हजूर के पास आ रही हैं। हिन्दुस्तान में वे लोग नहीं लिख सकते। पाकिस्तान के सारे भाई—बहन दर्शन को तड़प रहे हैं। पूछते हैं, यह वियोग कब तक चलेगा? शौकत ने पाकिस्तान से यहां आने की कोशिश की थी परन्तु इजाज़त नहीं मिली। शायद किसी और जगह उन्हें दर्शन का मौका मिल जाये। घाना (अफ्रीका) के मिस्टर नानाकाऊ, जो दिल्ली आश्रम में रह चुके हैं, उन का भाई व कुटुम्ब हजूर से मिलने आये। नानाकाऊ ने अपने भाई को लिखा था कि वे लोग हजूर से मिलें। उन के फोटो आप को भेजे हैं। नानाकाऊ को भी फोटो भेजे हैं। लंदन से एक लेडी हजूर से मिलने आई। आ कर कहने लगी कि लंदन में पहले मेरे सामने बाबा सावन सिंह जी महाराज प्रकट हुए। सड़क पर खड़ी थी कि आप भी आ गये। उस वक्त महाराज जी नामदान दे रहे थे। उस लेडी को अभी तक नाम नहीं मिला था। यहां मिल गया है।

15 नवंबर: सवेरे 103 स्त्री—पुरुषों को हजूर महाराज जी ने नामदान दिया। हजूर की दया से सब को अंतर में अनुभव की पूंजी मिली। वहां से वापस जड़ के घर आये। तीन बजे सानजोस जो यहां से साठ मील पर है, रवाना हुए। बारिश रास्ते भर होती रही। वहां पहुंचे तब भी बारिश थी। डा. लवलेस ने कहा, “सावन आप ही दया की बरखा कर रहा

तीसरी विश्व यात्रा

है।” 4.30 बजे डा. लवलेस के यहां पहुंचे रात वहीं ठहरे। सत्संग नहीं था परन्तु कई लोग दर्शन को इकट्ठे हो गये थे। हजूर महाराज जी नीचे उन्हें दर्शन देने आये व एक घंटा वार्तालाप हुआ जिस में परमार्थ के गूढ़ रहस्यों को हजूर महाराज जी बताते रहे।

16–17–18 नवम्बर: हर रोज़ सवेरे भजन पर बिठाया जाता, फिर मिलने वालों से वार्तालाप, शाम को 4 से 5 दर्शन और रात को सत्संग होता। जिस जगह पर भजन पर बिठाया जाता, वह चर्च था। चर्च के बिशप ने भजन बिठाने को वह जगह बगैर किराया लिये दी थी। रात का सत्संग चर्च के पीछे हाल में होता था। कई सत्संगी जो हजूर बाबा सावन सिंह जी के नामलेवा हैं, मिलने आये। यहां एक जन्म से अंधी औरत है। उसे नाम नहीं मिला है, उस का टेलीफोन आया। उस ने बताया कि मुझे आप ने और बड़े महाराज जी ने अंतर में दर्शन दिये और बातचीत की है। इस कलियुग के समय में जीवों की कितनी सम्भाल हो रही है। हरेक जगह पर तीन–चार दिन का ही प्रोग्राम रहता है, अतः सब लोगों को पता नहीं लगता। प्रोग्राम खत्म होने के दिन लोगों को पता लगता है तो वे आ कर बताते हैं कि हमें तो आज ही पता लगा है परन्तु वे सत्संग व नामदान से खाली रह जाते हैं। उन्हें यही बताया जाता है कि आप सत्संग सुनें, फिर application फार्म भर दें। आप के यहां का ग्रुप लीडर पत्र के ज़रिये हजूर से मंजूरी ले लेगा और आप को नाम दान मिल जाएगा। यहां पर भी एक बिशप (लाट पादरी) हजूर महाराज जी को मिलने आया और नामदान की इच्छा प्रकट की। क्योंकि सुबह ही नामदान दिया गया था और शाम को हजूर महाराज ने रवाना होना था, अतः उसे नाम नहीं दिया जा सका। उसे भी कहा गया कि application फार्म भर दो, आप को बाद में नामदान मिल जाएगा। इस तरह की कई घटनाएं हुई हैं। शाम

ज्ञानी जी का उन्नीसवां पत्र
 चार बजे हजूर महाराज जी दर्शन देने गये व थोड़ी देर ठहर कर 6 बजे
 हवाई अड्डे के लिये रवाना हो गये। सात बजे लास एंजिलिस जाना था।
 केलिफोर्निया युनाईटेड एयरलाइंज़ के हवाई जहाज़ पर चढ़ गये। हवाई
 अड्डे से सात बजे रवाना हुए और 8.45 पर शाम को हजूर लास एंजिलिस
 पहुंचे। वहां पर प्रेमियों की बड़ी भीड़ हजूर महाराज जी का स्वागत करने
 के लिये खड़ी थी। सब से मिल कर हजूर महाराज जी कार पर एक घंटे
 में एनाहिम पहुंचे। यहां पर ठहरने का प्रबंध था। यह सत्संग की जगह है।
 यहां पर एक छोटा हाल भी बैठने को बनाया गया है। इस में 159 के
 लगभग कुर्सियां लगी हुई हैं। सत्संग और भजन पर बैठने का पूरा प्रबंध
 है। इन दिनों 10 दिन तक चौबीस घंटे हाल खुला रहा, जब चाहे कोई
 भजन पर बैठ सकता था।

20 से 29 नवंबर: 4 बजे दर्शन का प्रोग्राम डिज़नीलैंड होटल के
 एक बड़े हाल में होता रहा। रात के 7.30 बजे सत्संग Wilshire
 Ebale Theartre, Los Angeles में होता रहा व प्रतिदिन हजूर
 महाराज जी नये से नया मज़मून ले कर सब को संत मत सिद्धान्त, प्रभु
 कैसे प्राप्त हो, सत्गुरु किसे कहते हैं, सत्गुरु से क्या मिलता है, नाम क्या
 है, इस तरह से विषय बदल कर सत्संग करते रहे। हाल काफी बड़ा था।
 ऊपरी गैलरी भी बड़ी थी। सारा हाल व गैलरी रोज़ाना भर जाते थे।
 24 नवम्बर को हजूर ने 57 पुरुषों व महिलाओं का नामदान दिया। पहले
 हजूर महाराज जी ने पुराने नामलेवाओं को भजन पर एक हाल में
 बिठाया। फिर दूसरे हाल में नामदान दिया। हजूर महाराज जी की
 दया—मेहर से अन्तर में सब को नाम की पूंजी मिली। हजूर ने फरमाया कि
 आप सब को आज अन्तर ज्योति व नाद का, किसी को कम, किसी को
 ज्यादा अपनी अपनी Back ground (हृदय की ज़मीन) के अनुसार

तीसरी विश्व यात्रा

अनुभव हुआ है। हजूर ने कहा कि अब आप सत के दूत, Ambassador बनो और इस तालीम को, जो सब धर्मों की Basic Teaching (मूलभूत शिक्षा) है, आम लोगों तक पहुंचाओ। इसे गुप्त मत रखो। जो कुछ आप ने सुना है, उस की कमाई करो और दूसरों को इस शिक्षा को बताओ ताकि यह तालीम हर जगह फैले। इस के बाद हजूर महाराज लूसी गन, जो यहां की ग्रुप लीडर हैं, के घर गये। उस ने कई ग्रुप लीडरों और लास एंजिलिस के सब सत्संगियों को भोजन करवाया। हजूर महाराज सारा दिन वहीं पर ठहरे। शाम 4 बजे हजूर ने सब भाई—बहनों को दर्शन दिये। इस के बाद ताई जी व आश्रम के सत्संगियों की टेप वहां लोगों को सुनाई। इतनी विरह सोज़ से भरी टेप थी कि सब के दिल भर आये व आंखों से आंसू बह निकले। इस में कुछ विरह की कविताएं जो हजूर महाराज जी ने लिखी हैं ताई जी ने गाई हैं।

उस के बाद रात को सत्संग योगी भजन जी के वहां था। हजूर वहां गये। योगी जी ने बहुत बड़ा हाल सत्संग के लिये लिया हुआ था। हाल सारे का सारा खचाखच भर गया। कई प्रेमीजन नीचे ज़मीन पर बैठे थे। यहां की फिल्में, स्लाइडें व फोटोएं आप को भेज रहे हैं। हजूर महाराज जी ने योगों का ज़िक्र किया। योगी भजन जी कुंडलिनी—जागृति का तरीका सिखाते हैं। उन का अमरीका में बड़ा प्रचार है। उन के अमरीका में एक लाख के करीब अनुयायी हैं। यहां हजूर ने बताया कि नाम का साधन सब से आसान है व जन्म—मरण का चक्कर नाम की कमाई से खत्म हो जाता है।

सत्संग के बाद हजूर योगी भजन के निवास स्थान पर गये। रात 1.30 बजे तक वहीं सब लोग बैठे रहे। रात रहने वाली जगह एनाहिम 2 बजे पहुंच कर ताई जी से टेलीफोन पर बातचीत की।

ज्ञानी जी का उन्नीसवां पत्र

25 तथा 26 नवम्बरः सवेरे डिज़नी होटल में भजन पर बिठाया। डिज़नी होटल के आसपास की बस्ती डिज़नी वर्ल्ड के नाम से मशहूर है। इसे देखने में कम से कम दो दिन चाहियें। हर चीज़ नए डिज़ाइन की बनी है। एक ट्राम मछली की शकल की सड़कों तथा पुलों पर चलती है। इस की मूर्वी आप देखेंगे। शाम को हजूर महाराज जी डिज़नी लैंड होटल में गये। 25, 26, 27 तथा 28 नवम्बर की रात सत्संग एनाहिम यूनियन स्कूल ओडिटोरियम में हुए। यहां हजूर ने दर्जे-ब-दर्जे सत्संग किये और हरेक मज़मून खोल कर पेश किया।

27 नवम्बर : भजन के प्रोग्राम के बाद सब ग्रुप लीडरों की फोटो ली गई। फिर महाराज जी योगी भजन के स्थान पर गये और सारा दिन वहीं रह कर आम 6 बजे वापस एनाहेम आ गये। 26 नवम्बर को 43 पुरुषों व महिलाओं को हजूर ने नामदान दिया। हजूर महाराज जी की दया-मेहर से सब को अंतर अनुभव मिला।

एक बात जो ज़रूरी है, वह आप को बता रहे हैं। 23 नवम्बर को जब महाराज जी सिरीन के घर गये तो उस ने सारे ग्रुप लीडरों को खाना दिया, साथ ही Divine Science of Soul के Board of Directors की मीटिंग भी रखी थी। करीब 2 घंटे मीटिंग चली। यहां की मूर्वी तथा फोटो आप को भेजी जा रही है। 27 नवम्बर को आखिरी सत्संग था। सवेरे सब लोग भजन पर बैठे। सब को हजूर ने आगे भी सत्संग सुनने व भजन अभ्यास करते रहने की ताकीद की, उस के बाद हजूर वापस आये। शाम 5 बजे हवाई अड्डे पर पहुंचना था। प्रेमीजन पहले से ही बाहर आ कर दर्शन के लिए खड़े हो गये। यहां भी दूसरे शहरों के लोग हजूर महाराज जी के दर्शन व सत्संग का लाभ लेने आये हुए थे।

तीसरी विश्व यात्रा

चार बजे हजूर आये। हवाई अड्डे का रास्ता एक घंटे का था। वहाँ
भी कई लोग जमा हो चुके थे। यहाँ की स्लाईड्स आप को भेजी जा रही
हैं। यहाँ से आगे डलास जाना था। पौने तीने घंटे में वहाँ पहुंचे। वहाँ के
प्रोग्राम के हालात आप को अगली चिट्ठी में लिखेंगे। हजूर महाराज जी के
तरफ से आप सब को प्यार पहुंचे।

सम्मान सहित,

दास

ज्ञानी भगवान सिंह व हरचरण सिंह

39. ज्ञानी जी का बीसवां पत्र

18 दिसम्बर, 1972

माननीय ताई जी,

हजूर महाराज की दया—मेहर से आप सब राजी खुशी होंगे। तीन महीने से ऊपर समय बीत गया हिन्दुस्तान से आए हुए, हज़ारों परमार्थ प्रेमियों ने दर्शन, सत्संग, रुहानी झलक और नामदान का लाभ उठाया। कई ऐसे हैं जो लंदन से हजूर महाराज जी के साथ ही दौरा कर रहे हैं। कई वाशिंगटन से साथ कारों पर और कई हवाई जहाज़ से चल रहे हैं जिस से हजूर महाराज की संगति का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठा सके। इस से पहले एनाहेम (केलिफोर्निया के हालात आप को लिखे थे, अब डलास टैक्सास के हालात लिख रहे हैं।

लास एंजिलिस (केलिफोर्निया) के लिये कोई दो बजे दोपहर से संकचुअरी से चले और पौने तीन बजे हवाई अड्डे पर पहुंचे। वहां सैंकड़ों प्रेमी दर्शन के लिए खड़े थे। हजूर महाराज जी वहां घंटा भर सब को दर्शन देते रहे। पौने चार बजे हवाई जहाज़ वहां से चला और रात साढ़े आठ बजे डलास पहुंच गया। वहां डेविड टेड और कई सत्संगी हजूर महाराज जी के स्वागत के लिए खड़े थे। यहां की फोटो और मूवी आप को भेज दी गई है। यहां से हजूर कार में बैठ मेलरोज़ होटल पहुंचे जहां ठहरने की व्यवस्था थी। देर गये रात वहां पहुंचे थे इस लिये रात कोई प्रोग्राम नहीं हुआ। एयरपोर्ट से बहुत लोग होटल आ गये थे, वे दर्शन करते रहे।

30 नवंबर: सुबह नौ बजे से दस बजे तक भजन का प्रोग्राम था। फिर एक घंटा बातचीत, लोगों की समस्याओं का समाधान हजूर ने

तीसरी विश्व यात्रा

किया। भजन का प्रोग्राम यूनिटेरियन चर्च में हुआ। शाम चार से पांच बजे थोड़ा प्रवचन और सवाल जवाब हुए। ज्यादातर सवाल भजन—सुमिरण की बाधाओं, मांसाहार, नशेदार चीजों, नशीली दवाओं आदि के प्रयोग के नुकसान के बारे में पूछे गये। शाम साढ़े छह बजे होस्टन शहर के ग्रुप लीडर और सत्संगीजन मिलने आए क्योंकि समय की कमी के कारण हजूर वहां नहीं जा सके थे। हजूर महाराज जी ने सब को रोज़ाना भजन—सुमिरण करने और डायरी भरने का आदेश दिया और फरमाया कि भजन—सुमिरण में गलती हो वह तो दूर की जा सकती है परन्तु करने का कोई इलाज नहीं। रात साढ़े सात बजे यूनिटेरियन चर्च में टाक हुई। हजूर महाराज जी ने रुहानियत अर्थात् आध्यात्मिक विद्या क्या है और योग से इस का क्या संबंध है—यह विषय लिया। प्रवचन खत्म होने के बाद बहुत से प्रेमीजन दर्शन के लिये होटल पहुंच गये। हजूर महाराज जी की रेडियेशन अर्थात् मण्डल का प्रभाव लोगों को बार—बार उन का दर्शन करने के लिये खींचता है। वे थोड़ी देर बाद उन का दर्शन करने आ जाते हैं। रात दस बजे हजूर महाराज ने फिर सब को दर्शन दिये। दर्शन करने वाले बहन—भाई सभी कमरे के बाहर गली में खड़े थे जिस की फोटो आप को भेज दी गई है।

1 व 2 दिसंबर: पहली दिसम्बर को सुबह नियामानुसार भजन—सुमिरण, शाम चार से पांच बजे तक प्रवचन और सवाल—जवाब और रात साढ़े सात से साढ़े आठ बजे तक फिर टाक हुई। रात की टाक का विषय था, क्या हम परमात्मा को देख सकते हैं? देख सकते हैं तो कैसे, किस रूप में? गुरु के मिलने से जीव की अवस्था क्या बन जाती है? हजूर ने पूरी तरह खोल कर समझाया। 1 दिसंबर को सुबह नौ बजे हजूर महाराज जी ने परमार्थभिलाषी नर—नारियों को नामदान दिया। पुराने सत्संगियों को पास ही दूसरी जगह भजन बिठा दिया गया। यहां

ज्ञानी जी का बीसवां पत्र

श्री गुलाटी की बहन और उस का पति प्रताप, शीला बत्तरा का लड़का, उस की पत्नी और बेटी और चन्द्र बत्तरा का लड़का हजूर महाराज जी को मिलने आए। शाम पांच बजे हजूर अगले पड़ाव टांपा के लिये कार पर एयरपोर्ट रवाना हुए। वहां बहुत लोग दर्शन के लिये जमा थे। वहां सब को दर्शन और आर्शीवाद देकर हजूर हवाई जहाज में बैठ गये। तीस-पैंतीस लोग हजूर के साथ थे। होटल वालों ने एक बहुत बड़ा बोर्ड लगा रखा था— Welcome to Master Kirpal Singh (सत्नुरु कृपाल सिंह स्वागतम)। इस की मूँदी आप को भेजी है। ब्रेनिफ कम्पनी का जहाज जिस में हजूर महाराज जी और उन के साथ जाने वाले लोग बैठे, पौने छह बजे चल कर रात नौ बजे टांपा पहुंच गया। यहां श्री सन्नी कोवन और सैकड़ों प्रेमीजन स्वागत के लिए खड़े थे। सेंट पीटर्जर्बर्ग का हवाई अड्डा भी टांपा ही है, इस लिए वहां से कार पर हजूर Schraff's Motor Inn and Restaurant सवा दस बजे पहुंचे। हजूर का कमरा सातवीं मंज़िल पर था। छठी मंज़िल तक हर कोई जा सकता है, सातवीं पर बिना चाबी नहीं जा सकते थे।

हजूर महाराज जी के कमरे के पीछे समुद्र पड़ता था। बड़ा मनोरम दृष्टि था। दूर तक पानी ही पानी, तट पर लोगों की भीड़। लोग छुट्टी लेकर धूप और समुद्र स्नान के लिये यहां आते हैं। रात पत्रकार हजूर से इंटरव्यू लेने आये और बहुत सवाल—जवाब हुए। अगले दिन डेढ़ पृष्ठ लम्बा मज़मून अख्बार में हजूर महाराज से बातचीत का छपा। नामदान के समय पत्रकार (यह एक महिला थीं) बहुत बाद में पहुंची जब हजूर नामदान दे चुके थे। उसे अर्जी देने को कह दिया गया। मंजूरी आने पर गुप लीडर द्वारा नामदान उसे मिल जाएगा।

3 दिसंबर: सुबह सवेरे होटल के करीब एक हाल में लोग भजन

तीसरी विश्व यात्रा

बैठे। हजूर ने सब को अन्तर अनुभव के बारे में पूछा। फिर थोड़ा प्रवचन किया। इस के बाद प्रेस फोटोग्राफर ने बहुत सारे फोटो हजूर के लिये। साढ़े बारह बजे दोपहर हजूर मिसिज़ सन्नी कोवन के यहां गए जहां उसने कुछ लोगों को भजन पर बुला रखा था। वहां कई नये आदमी हजूर से मिलने आए हुए थे, उन से बातचीत की। फिर सब ने खाना खाया। इस की मूवी सलाईड आप को भेजी है। शाम चार से पांच बजे तक मिसिज़ कोवन के मकान के बाहर एक बड़े मैदान में, जिस के साथ एक बड़ी झील है, सवाल—जवाब का प्रोग्राम हुआ जिस की मूवी आप को भेजी है। यहां जिस जगह लोग इकट्ठे हों पुलिस वाले जाँच के लिये आ जाते हैं। वहां से शाम साढ़े पांच बजे हजूर वापस होटल लौटे। रात आठ बजे यूनाइटेड लिबरल चर्च में हजूर महाराज जी ने प्रवचन किया। विषय था, आत्मविद्या को प्राप्त करने के लिये किन चीज़ों की ज़रूरत है? आत्म विद्या, भूत विद्या, रोगियों को ठीक करना, दुनिया के पदार्थ देना, दिलों का हाल जानना और रुहों का बुलाना आदि नहीं। आत्मा विद्या है आत्मा को जानना, प्रभु से उस को जोड़ना और प्रभु को पाना, हजूर ने खोल कर समझाया।

4 दिसंबर: सुबह नौ बजे सब को भजन बिठाया गया, फिर थोड़ा प्रवचन हजूर ने किया। दोपहर ढाई बजे सेंट पीटर्ज़बर्ग में मेयर ने दफ्तर में हजूर महाराज से भेंट की। हजूर मेयर के कमरे के बाहर पहुंचे तभी मेयर स्वागत के लिये कमरे से बाहर आ गया और सम्मान सहित उन्हें अन्दर ले गया। उस का बेटा भी वहां आया हुआ था। उस के हाथ हजूर महाराज की पुस्तक 'बाबा जयमल सिंह जी का जीवन चरित्र' थी। उस ने किताब पर हजूर महाराज जी से हस्ताक्षर करवाए। कहने लगा, "आप की यह किताब मैं पढ़ रहा हूं।" मेयर ने Key of the city of St. Petersburg (पीटर्ज़बर्ग शहर की चाबि) हजूर को भेंट कीं जो शहर की

ज्ञानी जी का बीसवां पत्र
ओर से सम्मान—सत्कार की सूचक है। इस की फिल्म और सलाईड आप
को भेज रहे हैं। वहां से मिसिज़ कोवन के घर गये जहां चार से पांच बजे
तक सवाल—जवाब का प्रोग्राम था। फिर हजूर वापस होटल पहुंचे। शाम
साढ़े छह बजे योगी भजन की घरवाली इन्द्रजीत कौर चार विद्यार्थी
लड़कियों को साथ लेकर हजूर से मिलने आई। वह फीस ले कर
लड़कियों को सदाचारी जीवन और योग की शिक्षा देती हैं। उन से
बातचीत करने के बाद हजूर सेंटर्जर्बर्ग जूनियर कालेज सत्संग के लिये
गये। हजूर ने वहां बताया कि नाम क्या है? किस को मिलता है? मालिक
की प्राप्ति का साधन नाम है, हजूर ने खोल कर समझाया।

5 दिसंबर : सुबह नौ बजे हजूर ने परमार्थाभिलाषी लोगों को
नामदान दिया। 46 मर्दों व औरतों ने नामदान लिया। सब को अन्तर में
रोशनी, सूर्य, तारे, गुरु स्वरूप अपनी—अपनी हृदय की ज़मीन के अनुसार
दिखाई दिए और भजन में मुरली, मृदंग, घंटे, ढोल, नगारे आदि की धुनि
सुनाई दी। इस अनुभव के बाद सब का विश्वास दृढ़ हो जाता है और उन
का जीवन बदल जाता है। सेंट पीटर्जर्बर्ग में श्री मांगिया और उनकी पत्नी
हजूर से मिले जो भारत से वहां पहुंचे थे। शाम चार से पांच बजे तक
किसी के घर सवाल—जवाब का प्रोग्राम था जिस के बाद शाम साढ़े सात
बजे एकड़ कालेज में टाक दी जिस में हजूर ने नाम की कमाई और आत्मा
परमात्मा के मिलाप का फल बताया।

6 दिसंबर: मुंह अन्धेरे सुबह साढ़े छह बजे मियामी (फ्लोरिडा)
जाने के लिये हवाई अड्डे को चले। टांपा एयरपोर्ट पहुंचते साढ़े सात बजे
गये। वहां दर्शनों के लिये बहुत लोग जमा थे। कई पहले ही कार पर
मियामी चल पड़े थे जो कार से पांच घंटे की यात्रा है। डेल्टा कम्पनी का
हवाई जहाज़ जिस में हम बैठे पौने नौ बजे मियामी पहुंच गया। जहाज़ के
कार्यकर्ता हजूर को जहाज़ में पा कर बहुत खुश हुए और उन से कई बातें

तीसरी विश्व यात्रा

कीं। मियामी एयरपोर्ट पर जैरी आस्त्रा, मिस्टर व मिसिज़ पैरिन, हजूर महाराज का पोता राजी और सेंकड़ों प्रेमीजन स्वागत के लिये खड़े थे। यहां की फिल्म और सलाईड आप को भेज दी गई है। वहां से कार का लंबा रास्ता तय कर के हजूर गाल्ट ओशन होटल ग्यारह बजे पहुंचे। यहां गर्मी काफी थी, इस लिए गरम कपड़े उतारने पड़े। हजूर ने सफेद वास्कट पहन ली। थोड़ी देर कमरे में ठहर कर हजूर दर्शन देने के लिए नीचे हाल में गये। आस्त्रा ने हजूर के आने की खुशी में दो बड़े केक बनवा कर स्टेज पर हजूर महाराज की मेज पर रख कर दिये थे। हजूर महाराज ने केक काट कर सब को प्रसाद दिया। अमरीका की यात्रा का यह आखिरी स्टेशन है, इस लिए दूर दूर शहरों से दर्शन, सत्संग व भजन के लिये लोग आए और कई अभी भी आ रहे थे। यह शहर सैरगाह है जहां दूर-दूर से सैर के लिये समुद्र के तट पर लोग आते हैं। हजूर का होटल भी समुद्र के तट पर है। हजूर महाराज के वहां पहुंचने पर वहां वर्षा हुई जिस से लोगों को संकेत मिल गया कि रुहानियत क्या चीज़ है?

7 दिसंबर: सुबह भजन, शाम को दर्शन व सवाल-जवाब और रात को हाल में टाक थी। विषय था, गुरु किसे कहते हैं? हजूर महाराज ने फरमाया कि गुरु शब्द है, शरीर नहीं। वह शब्द सदेह हो कर लोगों को शब्द के साथ जोड़ता है। इस मज़मून की सुविस्तार व्याख्या हजूर ने की।

8 दिसंबर: सवेरे भजन बैठने का प्रोग्राम बर्च स्टेट पार्क में था जिस की फोटो और फिल्म आप को भेजी जायेगी। दरख्तों के नीचे खुले में सब लोग भजन बैठे। बाद में सब को अन्तर्मुख अनुभव के बारे में पूछा गया, फिर बातचीत हुई। सब संगत के लिये लंगर का प्रबंध होटल के एकाऊटेंट सन्त सिंह ने करवा रखा था। हजूर महाराज जी उस के घर गये और थोड़ी देर बाद वापस होटल में आ गये। सन्त सिंह जी का परिवार हजूर महाराज जी से बड़ा प्रेम करता है। उस की घरवाली ने

ज्ञानी जी का बीसवां पत्र
बताया कि हजूर महाराज जी ने उस को नाम लेने से कई वर्ष पहले अन्तर
में दर्शन दिये थे। ये मेरे परमात्मा हैं। उस ने वाशिंगटन में जा कर पहले
बड़ी सेवा की थी। शाम साढ़े चार बजे तक पार्क में दर्शन व
सवाल-जवाब हुए। हजूर महाराज जी ने फरमाया कि अगर आप लोग
रोज़ाना बाकायदा भजन-सुमिरण करने लग जाओ तो जो सवाल आप
कर रहे हो वह दो-चार महीनों में अपने आप हल हो जायेंगे। लगभग पांच
बजे हजूर वापस होटल तशरीफ लाए। साढ़े पांच बजे हजूर महाराज
आस्त्रा के घर चरण डालने गये। उस का घर मियामी में है जो यहां से
कार पर सवा घंटे का रास्ता है। रात को यूनिटी सेंटर मियामी में टाक भी
थी। हजूर महाराज जी ने प्रभु प्राप्ति मज़मून लिया और बताया कि
मालिक की प्राप्ति का साधन क्या है और किस रूप में उस के दर्शन हो
सकते हैं? रात सवा दस बजे हजूर होटल में वापस आ गये।

9 दिसंबर: सुबह सवेरे रट्टेनेहम हाई स्कूल फोर्ट लेंडरडेल में
लोगों को भजन बिठाने का प्रोग्राम था। शाम चार से पांच बजे तक दर्शन
और सवाल जवाब हुए और रात को सत्संग हुआ, विषय था, नाम व शब्द
क्या है? नाम के साथ लगने से क्या मिलता है? हजूर ने फरमाया कि नाम
दो प्रकार का है, एक वर्णात्मक, एक धुनात्मक नाम। वर्णात्मक नाम वह है
जो पढ़ने लिखने और बोलने में आता है, यह वर्णात्मक नाम सब का
अपना-अपना है। इस से लाभ उठाना है, मगर इस से मुक्ति नहीं। मुक्ति
सिर्फ धुनात्मक नाम से है, जो सब का सांझा है, और एक है। शाम चार
बजे हजूर महाराज जी दर्शन देने रवाना हुए तो संगत ने हजूर से समुद्र
की सैर करने की प्रार्थना की। हजूर सब के साथ समुद्र तट पर सैर-
तफरीह के लिए गए। हजूर महाराज जी संगत के साथ रेत पर खड़े थे।
थोड़ी देर में पानी की तेज लहर आई और हजूर महाराज जी के चरण छू
कर वापस लौट गई। जो लोग हजूर के सामने खड़े थे उन की टांगें भीग

तीसरी विश्व यात्रा

गई। किसी को उम्मीद नहीं थी कि पानी वहां तक भी आ सकता है मगर समुद्र देवता ने हजूर को प्रणाम जो करना था।

10 दिसंबरः सुबह सवेरे नौ बजे होटल में परमार्थाभिलाषियों को नामदान दिया गया। एक बजे के करीब हजूर महाराज नाम दे कर वापस होटल में आए। वहां खाना खा कर हवाई अड्डे पर जाने के लिये तैयार हो गये। हजूर सब को हाथ जोड़ कर दोपहर ढाई बजे होटल से चले और पैने तीन बजे एयरपोर्ट पहुंच गये। वहां बहुत लोग दर्शनों के लिए खड़े थे। अमरीका में हजूर के दौरे का यह आखिरी स्टेशन था। सब की आंखों से आंसू बह रहे थे। यही कह रहे थे कि मास्टर, फिर कब वापस आओगे? जल्दी वापस आना। इतनी भीड़ हो गई थी कि रास्ता बंद हो गया। फिर हजूर महाराज जी को ऊपर होटल में ले गये मगर नीचे दर्शन न मिलने पर लोग उदास हो गये और एक झलक पाने के लिए इधर-उधर दौड़ने लगे। सवा पांच बजे सब से विदा हो कर हजूर महाराज जहाज़ में बैठ गये। रोकने के बावजूद कई लोग अन्दर पहुंच गये। हजूर महाराज का पोता जुदाई में रोया—आंसू तो सब की आंखों में थे। राजी को हजूर महाराज जी के पास लाया गया। हजूर ने दिलासा दिया। साढ़े पांच बजे जहाज़ वहां से चला और पैने नौ बजे मैकसिको पहुंच गया। यह पैन अमेरिकन कम्पनी का हवाई जहाज़ था। मैकसिको के हालात अगली चिट्ठी में आप को लिखे जायेंगे। हजूर महाराज जी की तरफ से सब को प्यार पहुंचे।

अदब और सत्कार सहित,

ज्ञानी भगवान सिंह व हरचरण सिंह

नोट सत्संदेश (हिन्दी)

ज्ञानी जी की इककीसवाँ चिट्ठी जो वहां डाक में डाली गई थी अभी तक नहीं पहुंची नहीं, जब आएगी छाप दी जाएगी। यात्रा के अन्तिम चरण की यह बाईसवाँ चिट्ठी ज्ञानी जी साथ ले आए थे जो यहां छापी जा रही है।

नोट प्रकाशक

लगता है कि इककीसवाँ चिट्ठी भारत पहुंची ही न हो क्योंकि बहुत ढूँढ़ने पर भी बाद के सत्संदेश में नहीं मिली। इस लिए यह चिट्ठी इस पुस्तक में शामिल नहीं की जा सकी।

40. ज्ञानी जी की बाईसवाँ पत्र

2 जनवरी, 1972

माननीय ताई जी,

आशा है कि आप सब हजूर महाराज जी की दया मेहर से राजी खुशी होंगे। इस के पहले कि चिट्ठी में आप को विवटो तक हजूर महाराज जी के प्रोग्राम के हालात लिखे थे। अब आप को बगोटा तथा कैली कोलंबिया के प्रोग्राम के हालात लिख रहे हैं।

विवटो से करीब 1 बजे चल कर Arianca के हवाई जहाज से हजूर महाराज जी 3 बज कर 45 मिनट पर बगोटा पहुंचे। यहां की ग्रुप लीडर मिसिज़ ग्रेशिया तथा अन्य सैकड़ों प्रेमी हजूर महाराज जी के स्वागत के लिये आए हुए थे। हजूर महाराज जी के दर्शन करने को

तीसरी विश्व यात्रा

प्रेमीजन इतने बेचैन थे कि हर कोई हजूर महाराज जी को छूना चाहता था ताकि उन के शरीर से निकल रही रुहानी रौ से लाभ मिल जाये। यहां पर भी हजूर पहली बार ही शरीर कर के आये हैं। हर कोई रास्ते पर जाते अथवा मोटर चलाते दर्शन करने खड़ा हो जाता तथा हर कोई चाहता था कि हजूर का autograph (दस्तखत) मिल जायें। सैकड़ों लोगों ने हजूर के चित्र तथा दस्तखत लिये। यहां की भाषा न जानने के कारण बातचीत करने में थोड़ी दिक्कत हुई, मगर इन का प्रेम देख कर हैरानी होती है कि मालिक ने इन में कितना प्रेम का जज़बा भर दिया है। जो स्वागत हजूर महाराज जी का दक्षिणी अमरीका में हुआ है उस तरह का किसी भी देश में नहीं हुआ। चाह, उत्साह तथा प्रेम का सागर ठाठें मार रहा था जो हजूर ने इन्हें बख्शा। हजूर महाराज जी सब को दर्शन दे कर बड़ी मुश्किल से कार में बैठे।

यहां हजूर महाराज जी डाक्टर ग्रेशिया के घर ठहरे। मकान बहुत सुन्दर सजा हुआ और आकार में बड़ा था। घर के सारे परिवार वाले सिवाय डाक्टर ग्रेशिया के, नामलेवा थे और हजूर महाराज जी के बड़े प्रेमी थे। डाक्टर ग्रेशिया भी बड़ा खुश था कि हजूर महाराज जी हमारे घर आए। फिर डाक्टर ग्रेशिया ने भी कैली कॉलंबिया जा कर नाम ले लिया। यहां 21 दिसम्बर से 24 दिसम्बर तक प्रोग्राम था। हर रोज़ की तरह सवेरे लोग भजन पर बैठते। 21 दिसम्बर की रात को सत्संग एक चर्च के बहुत बड़े हाल में हुआ। यहां हजूर महाराज जी ने, सच किसे कहते हैं, सच्चाई क्या है? यह मज़मून पेश किया। 22 दिसम्बर को सवेरे लोग इसी हाल में भजन पर बैठे। भजन के बाद सवाल जवाब हुए। क्योंकि नये प्रेमीजन ज्यादा थे, इस लिए नाम लेने वाले तथा गैर नामलेवा जिन्हें अन्तर में रोशनी दिखाई दी, उस की बाबत सवालात हुए। शाम को फिर 4 से 5

ज्ञानी जी का बाइसवां पत्र
बजे लोग मिलने आए। हर व्यक्ति की भजन व सांसारिक मुश्किलों का
समाधान हजूर ने किया। इस के बाद रात को शहर के मध्य में
आडीटोरियम हाल में सत्संग हुआ। हाल व गैलरी सारे भर गये थे। जगह
न होने के कारण बहुत से लोगों को नीचे बैठना पड़ा। मज़मून था, ‘पूर्ण
पुरुष की क्या तालीम है?’ जब तक सत्संग समाप्त नहीं हुआ लोग बड़ी
शांति के साथ बैठे रस लेते रहे। सत्संग खत्म होने के बाद हजूर वापस
डाक्टर ग्रेशिया के घर आये और जितने लोग वहां ठहरे हुए थे वे सब
खाना खा कर हजूर के कमरे में आ गये। रात के बारह बजे तक हजूर से
बातचीत होती रही।

पानामा में मैकिसको के बीच जो शहर भूकम्प में तबाह हो गया है,
उस के बारे में बातचीत हुई। एक बच्चे ने पूछा, “पिछले जन्म में मैं कौन
था, कृपा कर के बताइये।” हजूर महाराज जी ने बताया कि अगर मैं बता
भी दूं और जहां तुम्हारा पिछला जन्म हुआ था, उन्हें पता लग जाये तो वे
तुझे यहां से ले जायेंगे परन्तु तू इस जन्म के मां बाप को छोड़ेगा नहीं और
दोनों तरफ खींचातानी होती रहेगी। पहले वाले तुझे ले जाना चाहेंगे, इधर
वाले तुझे छोड़ेंगे नहीं, बता तुझे मंजूर है? लड़के ने जवाब दिया, “नहीं
जी, मैं वहां जाना नहीं चाहता।” इस कर्म तथा कर्मफल की बातचीत में
रुहों के पुर्नजन्म की चर्चा होती रही। हजूर महाराज जी ने शहीद भगत
सिंह की बात सुनाई। एक बार रुहों को बुलाने वाले ने भगत सिंह की रुह
को बुलाया, तो भगत सिंह की रुह आई। उस से नाम पूछा। उस ने कहा,
“मैं भगत सिंह की आत्मा हूं, लंदन से आ रही हूं और लोगों को क्रान्ति की
प्रेरणा देती हूं।” फिर हजूर महाराज जी ने बताया कि जो हमारे
भाई-बहन भूचाल में तबाह हो गये हैं, परमात्मा उन की आत्माओं को
शांति दे। 23 दिसम्बर को हजूर महाराज जी ने नामदान दिया। शाम को

तीसरी विश्व यात्रा

4 से 5 तक मिलने वालों से बातचीत की। रात को शहर में आडीटोरियम हाल में सत्संग हुआ। विषय था, सत्गुरु का क्या काम है तथा सच्चा व सुच्चा जीवन कैसा होता है? हजूर ने खोल—खोल कर यह मज़मून पेश किया।

24 दिसम्बर: सुबह भजन के बाद हजूर महाराज जी ने Farewell Talk दी। 11 बजे हवाई अड्डे पर पहुंचना था। आगे कैली कोलंबिया का प्रोग्राम था। तैयार हो कर हजूर महाराज जी हवाई अड्डे के लिये चले। डाक्टर ग्रेशिया, उन का परिवार व 100 से ज्यादा प्रेमीजन कैली कोलंबिया हवाई जहाज़ में पहुंचे। यह पहला समय था जब कि इतने प्रेमीजनों ने हजूर महाराज जी के साथ हवाई जहाज़ में सफर किया। 12.30 पर हजूर महाराज जी हवाई जहाज़ में चढ़े और 1.15 बजे कैली कोलंबिया पहुंच गये। जब तक हवाई जहाज़ चला नहीं, लोग गैलरी में खड़े हजूर महाराज जी के दर्शन करते रहे। यहां की फोटो आप को दे दी हैं। मूवी बन कर कुछ दिनों में आ जाएगी। कैली कोलंबिया हवाई अड्डे पर यहां की ग्रुप लीडर व सैकड़ों प्रेमीजन हजूर महाराज जी के दर्शन के लिये आए थे व बड़ी ही अच्छी तरह से हजूर महाराज जी का स्वागत किया। थोड़ी देर बाद कार द्वारा हजूर पैटेकुरी होटल पहुंचे जहां रहने का प्रबन्ध था। यहां पर भी अभी गर्मी के दिन हैं। 4 से 5 के बीच होटल के हाल में हजूर ने दर्शन दिये। रात को म्यूनिसिपल हाल में सत्संग हुआ। अगले दिन क्रिसमस था। अतः रात भर लोगों ने हजूर की उपस्थिति का लाभ ले कर बड़े उत्साह से खुशियां मनाई। अजीब बात है जिस महापुरुष के बारे में कहा जाता है कि दुनिया के पाप बख्श कर उसने अपने ऊपर ले लिए और सूली पर चढ़ गया उस का जन्म दिन लोग खाने-पीने और मौज—मरती से मनाते हैं। लोग उस के जीवन और शिक्षा पर नहीं चलते।

ज्ञानी जी का बाइसवां पत्र

यह हमारा अज्ञान है।

25 दिसम्बरः सवेरे लोगों को भजन पर बिठाया गया। इस अवसर पर हजूर महाराज ने क्रिसमस पर थोड़ी टाक दी। रात को इंटरव्यू थी। क्रिसमस पर सत्संग म्यूनिसिपल हाल में हुआ।

26 दिसम्बरः हजूर महाराज जी ने नामदान दिया। शाम को 4 से 5 बजे मुलाकात तथा रात्रि को सत्संग हुआ। सत्गुरु के कार्य तथा सम्भाल का विषय था। हाल नये ढंग से बड़े ही सुन्दर नमूने का बना हुआ है। यहां की फोटो तथा मूवी आप को मिल जायेगी।

27 दिसम्बरः सवेरे इसी हाल में महाराज जी ने सब को दर्शन दिये क्योंकि होटल की जगह कम पड़ती थी। बाद में वापसी (भारत का) प्रोग्राम था। तैयार हो कर 7.30 बजे हजूर महाराज जी हवाई अड्डे के लिये रवाना हो गये। दक्षिणी अमरीका अथवा तीसरी विश्व यात्रा का यह आखिरी मुकाम था। हजूर का दौरा यहीं समाप्त हुआ। हजूर महाराज जी के दर्शनों के लिये हवाई अड्डे पर पहले से ही सैकड़ों प्रेमीजन उपस्थित थे। हवाई जहाज़ एक घंटा लेट था। लोगों को ज्यादा समय दर्शन व विदाई का मिल गया। 12.15 बजे पैन अमरीकन कंपनी का हवाई जहाज़ यहां से चला व 1 बजे के करीब बगोटा पहुंचा। वहां भी हजूर महाराज जी के दर्शन के वास्ते सैकड़ों प्रेमी मौजूद थे। यहां हवाई जहाज़ बदलना था, अतः डेढ़ घंटा ठहरना पड़ा। आगे कारकस के लिए हवाई जहाज़ लेना था। 1.30 बजे हवाई जहाज़ Iberia का वहां बगोटा से चल कर 5 बजे कारकस पहुंचा। यहां से रोम के लिए जहाज़ लेना था। कारकस तक 15–16 प्रेमीजन हजूर महाराज जी को विदाई देने के लिए साथ आये थे। इन में ज्यादातर अमरीकन थे।

तीसरी विश्व यात्रा

कारकस में 28 घंटे रुकना पड़ा। सप्ताह में एक हवाई जहाज़ यहां से रोम चलता है। अगर छूट जाये तो एक सप्ताह का इन्तज़ार करने के सिवाय क्या चारा है। समुद्र के किनारे होटल में हजूर रात ठहरे। जो प्रेमीजन साथ आये थे हजूर महाराज जी के उन्होंने दर्शन किये। फिर हजूर ने बारी—बारी से सब से बातचीत की और अपने—अपने सवालात पूछने को कहा। यहां भी यद्यपि कोई प्रोग्राम नहीं था फिर भी दो आदमियों को नामदान दिया।

28 दिसम्बर: सुबह भजन भी बिठाया गया। रात 7.30 बजे हवाई जहाज़ रवाना होना था। अतः 9.30 बजे होटल से रवाना हुए। रोम का प्रोग्राम दो दिन का था। रोम में माल्टा, जर्मनी, फ्रांस, इंगलैंड आदि से दो—ढाई सौ प्रेमीजन उपस्थित थे। वहाँ वी.आई.पी. आफिस की ओर से एक लेडी हजूर महाराज जी के स्वागत के लिए बाहर खड़ी थी कि हजूर को किसी तरह की तकलीफ न हो। हजूर महाराज जी के लिए एक स्पेशल कार भी हवाई जहाज़ के पास खड़ी थी। हजूर के पहुंचने के समय थोड़ी बारिश हो रही थी। हजूर को कार में बिठा कर एयरपोर्ट पर ले गये। हमारे टिकटों पर यह लिखा था कि हम लोग 30—12—72 को आगे बैरूत जाने के लिए फ्लाईट लेंगे। यहां का प्रोग्राम 31—12—72 तक होने से वीज़ा नहीं था। उस लेडी ने थोड़ी ही देर में सारी औपचारिकताएं (formalities) पूरी करवा दीं। उस के बाद हजूर महाराज जी एयरपोर्ट के बाहर तशरीफ ले गये जहां जर्मनी के प्रतिनिधि मिसिज़ वियांका फिटिंग, माल्टा के मिस्टर पैरट, फ्रांस के मिस्टर बेटा, मीलान के मिस्टर पियरे मरसीनारा और उन के साथ इटली के दो—ढाई सौ प्रेमीजन स्वागत के लिए आए हुए थे। हजूर महाराज जी सब को मिले। मिलने के बाद कार से रोम शहर के मध्य में रीयल होटल में तशरीफ ले गये। इसी

ज्ञानी जी का बाइसवां पत्र होटल में 1963 में हजूर महाराज जी ठहरे थे। उसी कमरे में हजूर ठहरे जहां वे पहले ठहरे थे। शाम को 6.30 बजे 7 तक होटल के हाल में सत्संग था। सारा हाल खचाखच भरा था। कुर्सियों की कमी के कारण लोग फर्श पर बैठे थे। हजूर महाराज जी ने सत्संग में सदाचारी जीवन, रुहानी तरकीकी के लिये भजन सिमरण तथा जीते जी मरने का मज़मून लिया।

30 दिसम्बर: सवेरे भजन—सिमरण का प्रोग्राम था। शाम को 4 से 5 तक सवालों के जवाब दे कर हजूर ने फरमाया कि अगर आप सब लोग दो चार महीने तक लगातार लग कर हर रोज़ 2 घंटे भजन—सिमरण को वक्त दें तो फिर आप के बहुत सारे प्रश्न अपने आप हल हो जाएंगे। रात को 7.30 से 8.30 तक सत्संग हुआ। मज़मून था, प्रभु को इन्सान कैसे मिल सकता है, किन साधनों की ज़रूरत है और हम किन साधनों को कर रहे हैं? क्या लोगों को इन साधनों से प्रभु की प्राप्ति हो सकती है? वह कौन सा साधन है जिस के द्वारा मालिक की प्राप्ति हो सकती है?

31 दिसम्बर: 40 के करीब महिलाओं व पुरुषों ने नामदान लिया। इन के बीच एक बिशप भी था जिसे अन्तर में बड़ा अच्छा अनुभव हुआ। नाम—दान देने के बाद जाने का प्रोग्राम था। होटल से तैयार हो कर 12.30 हवाई जहाज़ चला। यह जहाज़ पैन अमरीकन कम्पनी का था। साढ़े 9 बजे बैरुत पहुंचा। बारिश व बादल के कारण जहाज़ 37 हज़ार फुट ऊँचाई पर उड़ता रहा। बैरुत में श्री कमल कुमार मित्तल, श्रीमति मोहिनी मित्तल, साऊदी अरब के अधिकारी तथा पाकिस्तान से शौकत हजूर महाराज के स्वागत को खड़े थे। रात को आप की बातचीत टैलीफोन पर हजूर महाराज जी से हुई।

1 जनवरी, 1973: हजूर महाराज जी ने जो भी घर के थे, सब को भजन पर बिठाया, जिस का भजन नहीं बनता था उसे तवज्जो दे कर

तीसरी विश्व यात्रा

तथा माथे पर हाथ रख कर उन के अन्तर का रास्ता खोल दिया। शाम को 4 से 5 बजे तक हजूर महाराज जी ने सत्संग किया। शहर के भी कुछ व्यक्ति सत्संग सुनने आये थे जिन में कुछ भारतीय व कुछ दूसरे भी थे। रात्रि को 7.30 बजे हवाई—जहाज़ ने चलना था, खबर मिली कि हवाई जहाज़ लेट है और 10 बजे चलेगा। फिर पता करने पर मालूम हुआ कि जहाज़ और भी लेट है क्योंकि लंदन से एक खास जहाज़ आ कर कर्मचारियों को ले जायेगा, फिर फ्रैंकफर्ट से जहाज़ चलेगा और सुबह 6 बजे का समय जहाज़ चलने का बताया गया।

2 जनवरी, 1973: फिर भी सुबह 6 बजे जहाज़ रवाना नहीं हुआ। हजूर महाराज जी ने सब को भजन पर बिठाया। 7 बजे हवाई अड्डे को सब चल पड़े। 8.30 बजे पैन अमरीकन का जहाज़ दिल्ली के लिये उड़ा और कराची होता हुआ शाम को 6.30 के करीब पहुंचा। हजूर महाराज जी की चार महीने आठ दिन की तीसरी विदेश यात्रा इस प्रकार हजूर की दया से सकुशल समाप्त हुई। इस यात्रा से हजारों भाई—बहनों को रुहानियत का लाभ मिला।

अदब के साथ

हरचरण सिंह व दास ज्ञानी भगवान सिंह

41. भारत का आगमन

हजूर महाराज जी का हवाई जहाज़ 2 जनवरी को सुबह सवेरे पहुंचने की खबर थी। हजूर ने टेलीफोन पर आदेश दिया था कि मैं हवाई अड्डे से सीधा आश्रम चल पड़ूंगा, हवाई अड्डे पर मुझे लेने के लिये कोई न पहुंचे, सिर्फ आश्रम से कुछ चुने हुए लोग एयरपोर्ट पहुंचें। हजूर के इस आदेश के बावजूद कुछ लोग सुबह सवेरे पालम एयरपोर्ट पहुंच गये। उन्हें वहां से निराश लौटना पड़ा। आश्रम से सुबह सवेरे पालम एयरपोर्ट टेलीफोन मिलाया गया तो वहां से खबर मिली कि हवाई जहाज़ बेरुत से चला ही नहीं और दो-ढाई बजे दोपहर से पहले वह दिल्ली नहीं पहुंच सकता। सत्संगीजन दो-तीन दिन पहले हजूर के शुभागमन का समाचार पा कर आश्रम में आने शुरू हो गये थे। हजूर के स्वागत की पूरी तैयारी कर ली गई थी। सुबह मुंह अंधेरे ही स्पेशल स्टेज के चारों ओर संगतों का जमघट लग गया था और गुरु प्रेम के भजन गाए जा रहे थे। दोपहर को फिर पालम टेलीफोन मिलाया गया तो मालूम हुआ कि जहाज़ अब भी लेट है और अभी तक बेरुत ही से नहीं चला, यहां पहुंचना तो दूर रहा। आखिर मालूम हुआ कि बेरुत से हवाई जहाज सात बजे के लगभग दिल्ली पहुंचेगा।

हजूर महाराज जी के आदेश को ध्यान में रखते हुए केवल पन्द्रह-बीस आदमी ताई जी के साथ कारों में पहुंचे। वैसे कुछ बहन-भाई भी जो अपने तौर पर पालम टेलीफोन मिला कर हवाई जहाज़ के पहुंचने का पता करते रहे थे मैं से भी कुछ लोग वहां पहुंच गये। कुल मिला कर सौ-सवा सौ स्त्री पुरुष वहां एकत्रित हो गए थे। वहां पहुंचते ही पता चला कि हवाई जहाज़ पालम उतर गया है और अब कस्टम में चेकिंग हो

तीसरी विश्व यात्रा

रही है। अन्दर जाने की मनाही थी, फिर भी कुछ लोग कह सुन कर अन्दर चले गये और हजूर महाराज के दर्शन कर लिये। ताई जी और उन के साथ कुछ लोगों को अन्दर जाने की इजाज़त मिल गई थी, थोड़ी देर बाद पता चला कि एक टीका कम लगवाने के बारे में झ़ंझट चल रहा है और हजूर महाराज जी और उन के साथ ज्ञानी जी, सरदार हरचरण सिंह व भल्ला जी को शायद रात पालम के होटल में काटनी पड़ेगी लेकिन यह समस्या थोड़ी देर में सुलझ गई और हजूर महाराज जी बाहर आ गये। संगत उन के चारों ओर कतार बांध कर दर्शन के लिए बैठ गई। वहाँ थोड़ी देर रुकने के बाद कार में बैठ कर हजूर सीधे आश्रम को रवाना हो गये जहाँ दिल्ली और दूर शहरों से आए सत्संगीजन सुबह से हजूर महाराज जी के दर्शनों की आस में बैठे थे।

सावन आश्रम हजूर महाराज के स्वागत के लिये दुलहन की तरह सजा हुआ था। हजूर महाराज जी का निवास स्थान, गैस्ट हाऊस और सत्संग की स्टेज रंग-बिरंगी रोशनियों से सजे हुए थे। ज्यों ही हजूर महाराज जी की कार आश्रम पहुंची, संगत टूट पड़ी। हजूर की कोठी के आगे अपार जनसमूह ठाठें मार रहा था। थोड़ी देर बाद हजूर बाहर सत्संग मंच पर तशरीफ लाये। संगत का क्या ठिकाना। पूरी दो एकड़ धरती पर तिल धरने की जगह नहीं थी। हजूर महाराज जी ने संगत को खुले दर्शन दिये और थोड़ा प्रवचन किया। दर्शन सिंह और ताई जी ने कवितायें पढ़ी। बाहर चारों ओर जगमगाती रोशनियों ने रात को दिन बना रखा था तो अन्तर दिलों में भी हजूर के नूरी मुखड़े के दीदार ने उजाला कर रखा था। वह अनुपम दृष्टि देखने की चीज़ थी, कलम की ज़बान उसे बयान नहीं कर सकती।

हमारे अन्य प्रकाशन

- | | |
|--|----------------------|
| 1. कृपाल वाणी (गद्य एवं पद्य) | हिन्दी |
| 2. कृपाल दया के सजीव सागर (प्रश्न उत्तर अगस्त 1974) | हिन्दी |
| 3. जीवन चरित्र संत कृपाल सिंह (उनके अपने शब्दों में) | हिन्दी |
| 4. आदर्श शिक्षाएं (जिल्ड - 1)
(<i>Teachings of Kirpal Singh</i> का हिन्दी अनुवाद) | हिन्दी |
| 5. आदर्श शिक्षाएं (जिल्ड - 2)
(<i>Teachings of Kirpal Singh</i> का हिन्दी अनुवाद) | हिन्दी |
| 6. <i>Divine Melodies</i>
(कृपाल वाणी गद्य का अंग्रेजी अनुवाद) | अंग्रेजी |
| 7. प्रभु : मानव तन में | हिन्दी |
| 8. रामचरितमानस : एक अंतरीय झलक - भाग 1 | हिन्दी |
| 9. रामचरितमानस : एक अंतरीय झलक - भाग 2 | हिन्दी |
| 10. रुहानियत का खजाना
(फिल्मों, सत्संगों और शब्दों की लिस्ट) | हिन्दी /
अंग्रेजी |
| 11. जीवन जीने की कला | हिन्दी |
| 12. Spirituality Simplified (Part 1) | अंग्रेजी |
| 13. Mystery of Death | |
| 14. Great Saints: Baba Jaimal Singh
& Baba Sawan Singh | अंग्रेजी |
| 15. परमसंत बाबा जैमल सिंह जी और बाबा सवान सिंह जी | पंजाबी |
| 16. 64 डीवीडीज़ /सीडीज़ का सैट जिस में 50 डीवीडी फिल्मों समेत सत्संग की,
1 सीडी बाबा सावन सिंह जी की फिल्म की, 9 डीवीडीज़ 355 हिन्दी
सत्संगों की, 2 डीवीडीज़ फोटो की, 1 सीडी 10 पंजाबी सत्संगों की, 1 डीवीडी
लगभग 450 शब्दों की (पुरातन महापुरुषों के शब्द, पाठी जी के विरह और
प्रार्थना के शब्द, पाठी जी के चेतावनी के शब्द, भाई - बहनों के विरह और
प्रार्थना के शब्द, भाई - बहनों के चेतावनी के शब्द तथा महाराज जी द्वारा
लिखी आडियो कविताएं) शामिल हैं, तीन हज़ार रुपये में इस सभा से प्राप्त
किया जा सकता है। | |

Kirpal Ruhani Satsang Sabha (Bhabat)

1206, Sector 48-B, Universal Enclave,

Chandigarh- 160 047 (India)

Ph. : 0172-2674206, 0172-4346346

Email : ruhanisatsangindia@gmail.com

Website : www.ruhanisatsangindia.org